MR. CHAIRMAN: I would urge the Members, as I said repeatedly; we are sending a very, very dangerous signal to the people. Their anger, anguish is now beyond tolerance. Every time in the morning, they see the spectacle of the House being plunged in disorder as a part of strategy. ...*(Interruptions)*...

श्री संजय सिंह: *

MR. CHAIRMAN: Please. ...*(Interruptions)*... Leave it. ...*(Interruptions)*... Now, Shri Surendra Singh Nagar. ...*(Interruptions)*...

(At this stage, some hon. Members left the Chamber.)

MR. CHAIRMAN: Shri Surendra Singh Nagar, who had not concluded his speech on the Address yesterday, will continue.

---

†MOTION OF THANKS ON PRESIDENT'S ADDRESS

श्री सुरेन्द्र सिंह नागर (उत्तर प्रदेश): माननीय सभापति जी, मैं आपसे एक अनुमति चाहूंगा। कल मैंने 2009 से 2014 के बीच के, लोक सभा के अपने कुछ अनुभव सदन में रखे थे। उनमें एक-दो विषय रह गए थे, अगर आपकी अनुमति हो, तो आज मैं उनसे शुरुआत कर सकता हूं।

श्री सभापति: आप अपनी समयावधि में, नियमों के अनुसार, विषय की गम्भीरता को देखते हुए, अपनी बात कहिए।

श्री सुरेन्द्र सिंह नागर: थैंक यू, सर, मैंने जो ज़िक्र किया था, 2009 से 2014 तक के समय में यूपीए की सरकार के जो घोटाले थे, उनमें कोयला घोटाला, सीडब्ल्यूजी घोटाला ...(**व्यवधान**)... टेलीकॉम घोटाला ...(**व्यवधान**)... और एक घोटाला, जो रह गया था, वह था नई दिल्ली का, जीएमआर का जो एयरपोर्ट है, उसका घोटाला।

MR. CHAIRMAN: Hon. Member, while you will be heard with rapt attention, we will hear everyone in this House with decorum and rapt attention. But, bear in mind, if you make

---

* Not recorded.

† Further discussion continued on a motion moved on the 7th February, 2023.

any assertion which is in the nature of free fall of facts, you shall be called upon to authenticate the documentation and substantiate the same by laying the same on the Table of the House on the same day. Bear that in mind.

श्री सुरेन्द्र सिंह नागरः जी सर, आपकी बात बिल्कुल सही है।...(**व्यवधान**)... अब आप बैठिए। ...(**व्यवधान**)... सर, जीएमआर का घोटाला उस समय रह गया था, मैं उसका जिक्र करना भूल गया था। आज देश में भ्रष्टाचार को लेकर बड़ी-बड़ी बातें हो रही हैं। सबसे बड़ी आश्चर्य की बात यह है कि इस देश में घोटाले और भ्रष्टाचार की चर्चा वे लोग कर रहे हैं, जिनकी सरकार में सबसे ज्यादा घोटाले हुए।...(**व्यवधान**)... यह सीएजी की रिपोर्ट है, यह मैं नहीं कह रहा हूं। ...(**व्यवधान**)... उसके साथ-साथ ...(**व्यवधान**)...

श्री जयराम रमेश (कर्नाटक)**:** ये जो कह रहे हैं, उसको ऑथेंटिकेट करें।...(**व्यवधान**)...

श्री सुरेन्द्र सिंह नागरः जी हां, हम कर देंगे।...(**व्यवधान**)... हम कर देंगे, अभी आप बैठिए।...(**व्यवधान**)... चेयरमैन साहब, दुर्भाग्य यह है कि भ्रष्टाचार पर चर्चा आज वे लोग कर रहे हैं, जिनका अपना खुद का पूरा परिवार ज़मानत पर है। ...(**व्यवधान**)... नेशनल हेराल्ड केस...(**व्यवधान**)... उस पर कौन ज़मानत पर है, मैं उसका नाम नहीं लेना चाहूंगा।...(**व्यवधान**)... लेकिन आज वे लोग भ्रष्टाचार की चर्चा कर रहे हैं, जिनकी सरकार में सबसे ज्यादा घोटाले हुए। ...(**व्यवधान**)... आप तो रोज़ समझौते करते हैं। ...(**व्यवधान**)... आपकी नीयत और नीतियां रोज़ बदलती हैं। ...(**व्यवधान**)... आप रोज़ नये समझौते करते हैं। ...(**व्यवधान**)... आपने उनके साथ समझौता किया, जिन्होंने संविधान के अनुच्छेद और अनुच्छेद 35ए का विरोध किया, जो कश्मीर की पार्टी है, देश को तोड़ने का काम करती है और जो पाकिस्तान का समर्थन करती है। ...(**व्यवधान**)... उनके साथ आपने भारत-जोड़ो यात्रा की। ...(**व्यवधान**)... देश तोड़ने वाले आप लोगों की भारत-जोड़ो यात्रा में साथ आए। ...(**व्यवधान**)... आप हमें समझाएंगे? ...(**व्यवधान**)... देश तोड़ने वालों के साथ आप लोगों ने भारत-जोड़ो यात्रा की।...(**व्यवधान**)... कश्मीर में आपने उन लोगों के साथ यात्रा करने का काम किया। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN**:** Hon. Member, please. आप बैठिए, बैठिए।

श्री सुरेन्द्र सिंह नागरः सर, मैं बैठ जाता हूं। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN**:** Hon. Members, have my assurance. ...(*Interruptions*)... I am taking note of everything. If there will be expediency and requirement of a document to be authenticated and I find that such a document is already authoritatively in public domain,

I may skip that. ...(*Interruptions*)... And be cautious about it. Go ahead now. And, I may indicate to any hon. Member; I have given such a direction to some other Members; there has been a non-compliance of that and I am taking steps because such a transgression has to lead to exemplary consequences. So, be aware of it. Now, please go ahead. ...(*Interruptions*)...

श्री सुरेन्द्र सिंह नागरः धन्यवाद सभापति जी, मैं अपने को सीमित करना चाहूंगा, इस देश में इन्फ्रास्ट्रक्चर को लेकर जो पॉलिसी पैरालिसिस था, उस पर मैं इस सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं, क्योंकि महामहिम राष्ट्रपति जी ने अपने अभिभाषण में इसका जिक्र किया है। अगर मैं बात करूं, इस देश में जब यूपीए की सरकार थी, उस समय इस देश में जो इन्फ्रास्ट्रक्चर के हमारे प्रोजेक्ट्स थे, उनकी क्या हालत थी? ...(**व्यवधान**)...

श्रीमती रंजीत रंजन (छत्तीसगढ़)**:** आप अपनी बात करो। ...(**व्यवधान**)...

श्री नीरज शेखर (उत्तर प्रदेश)**:** अभी बतायेंगे कि क्या चोरी किया।...(**व्यवधान**)...

श्री सुरेन्द्र सिंह नागरः आप थोड़ा सब्र कीजिए। ...(**व्यवधान**)... आप थोड़ा सब्र कीजिए। ...(**व्यवधान**)... अगर आप सच सुनना नहीं चाहते हैं, तो मैं क्या कर सकता हूं?...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN**:** Take your seats. Mr. Nagar, ...(*Interruptions*)... One second. ...(*Interruptions*)... Ranjeetji, Please sit down. ...(*Interruptions*)...

श्रीमती रंजीत रंजनः आप अपने घोटाले छिपाते हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्री सुरेन्द्र सिंह नागरः आप क्यों नाराज़ हो रही हैं? ...(**व्यवधान**)...

श्री नीरज शेखरः आपके पास कभी नहीं बैठेंगे। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN**:** Hon. Members ...(*Interruptions*)...

One second, Mr. Muraleedharan, what is happening to your Benches? Let them sit down. ...(*Interruptions*)... Would you sit down? ...(*Interruptions*)...

श्री सुरेन्द्र सिंह नागरः सर, वे डिस्टर्ब कर रहे हैं। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, ...(*Interruptions*)... Mr. Nagar, take your seat. Mr. Nagar, I don't approve of this conduct. ...(*Interruptions*)... One second please.

SHRI SURENDRA SINGH NAGAR: Sir, I am not yielding. ...(*Interruptions*)...

MR. CHAIRMAN: No, I don't approve this conduct. Some Member speaks and transgressing; you start communicating.

SHRI SURENDRA SINGH NAGAR: Sir, sorry. व्यक्तिगत ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: It is so elementary. ...(*Interruptions*)... Please take your seat.

श्री सुरेन्द्र सिंह नागर: सर, व्यक्तिगत ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Why are you contributing to chaos in the House? ...(*Interruptions*)... I have not called upon you to speak. ...(*Interruptions*)... Please, Mr. Minister, if the Treasury Benches behave like this ...(*Interruptions*)... Please sit down. Hon. Members, it is with pain that both sides in the House are working in a manner that it is not desirable. The Members are not required to speak to each other directly. We are violating something which is the textbook proposition meant even for newcomers. Mr. Nagar started reacting. There is someone sitting in the Chair. The one sitting in the Chair has the authority; that authority is by way of constitutional obligation. It is my bounden duty to ensure order in the House. If there is disorder in the House created by any one, I have to ensure consequences for it. You have contributed to disorder! Even two of the senior Members from this side started speaking! Are we in chorus? I would urge everyone to listen to every speaker in silence, in rapt attention. If you have an objection, take recourse to rules. There may be an objection, there may be other point of view; raise it in accordance with the rules. Don't jump on your seat immediately. What I find is, senior Members need to guide others; the fact is, they are taking a lead in this. I am sure, the House will bear this in mind.

Mr. Nagar, now.

श्री सुरेन्द्र सिंह नागर: सभापति जी, मैं इस देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश से आता हूँ। मैं पश्चिमी उत्तर प्रदेश से आता हूँ। राष्ट्रपति जी के अभिभाषण को हमारे विपक्षी दलों ने बीजेपी का

घोषणा पत्र कहा। मैं कुछ चीजें पश्चिमी उत्तर प्रदेश की बताना चाहता हूँ। आपको भी उसकी जानकारी है। घोषणा और संकल्प पत्र में क्या फर्क है, मैं उसकी चर्चा करना चाहता हूँ, क्योंकि मोदी सरकार संकल्प लेती है और उसे पूरा करती है, लेकिन जो यूपीए सरकार थी, वह घोषणा करती थी, किन्तु उसे पूरा नहीं करती थी। मैं इसके कुछ उदाहरण देना चाहता हूँ। मैं इसका उदाहरण इसलिए देना चाहता हूँ, क्योंकि मैं वैस्ट यूपी से आता हूँ, मैं नोएडा से हूँ, उससे मेरठ जुड़ा हुआ है। दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे 96 किलोमीटर का था। यह कब सैंक्शन हुआ? इसकी घोषणा यूपीए की गवर्नमेंट ने 2006 में की थी और इसे कम्प्लीट किसने किया - 2018 में नरेन्द्र मोदी जी की नेतृत्व वाली सरकार ने इस प्रोजेक्ट को पूरा किया। ऐसा नहीं है कि इसका लाभ कुछ विशेष लोगों को हुआ हो। जिस एनसीआर का कंसेप्ट, जिस राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र का कॉंसेप्ट हम लेकर आये, यह प्रोजेक्ट उसी से जुड़ा हुआ था। पहले दिल्ली से जिस मेरठ को जाने में ढाई घंटे का समय लगता था, आज 45 मिनट में आप दिल्ली से मेरठ पहुँच जाते हैं, यह काम उन्होंने किया है। पहले यह हालत थी और नरेन्द्र मोदी जी की सरकार में यह सुधार हुआ है।

महोदय, दिल्ली में हमेशा पॉल्यूशन की चर्चा होती है। एक समय आता है, जब पॉल्यूशन की चर्चा होती है। उससे सब लोग प्रभावित हैं। उसके लिए कई बार योजनाएँ बनीं कि हमारे जो व्हीकल्स हैं, उनके पॉल्यूशन को किस तरीके से कम किया जा सके। उसके लिए एक योजना बनायी गयी कि जो ट्रक्स हैं, जो हैवी व्हीकल्स हैं, उनकी एंट्री दिल्ली में नहीं होनी चाहिए और उनके लिए एक ऐसी रोड बननी चाहिए, जिससे वे दिल्ली में एंटर भी न हों और दिल्ली के बाहर से निकल जाएँ, जिससे दिल्ली की जनता को इस प्रदूषण से मुक्ति मिल सके। ईस्टर्न पेरिफेरल - जिस क्षेत्र से मैं आता हूँ - गौतम बुद्ध नगर, नोएडा - वहाँ से भी होकर वह गुजरता है। सभापति जी, इसकी स्थिति क्या है? यह सैंक्शन कब हुआ - 2006 में यूपीए की सरकार में यह प्रोजेक्ट सैंक्शन हुआ। इससे बड़ी बात आप देखिए - मैं भ्रष्टाचार वगैरह की बात नहीं कर रहा हूँ, लेकिन जो हुआ है, मैं उसकी चर्चा कर रहा हूँ। 2006 में इसकी जो बिडिंग है, वह एक बार नहीं, कई बार कैंसल की गयी। वह कई बार कैंसल की गयी। अब पता नहीं इसके पीछे क्या इच्छा थी। या तो वे दिल्ली की जनता को प्रदूषण से मुक्ति नहीं दिलाना चाहते थे या ऐसी इच्छा नहीं थी, लेकिन यह काम 2018 में अगर किसी ने पूरा किया, तो मोदी सरकार ने 2018 में ईस्टर्न पेरिफेरल और वेस्टर्न पेरिफेरल बनाकर दिल्ली को प्रदूषण से मुक्ति दिलाने के लिए यह काम किया।

महोदय, मैंने अभी नॉर्थ की बात की। अगर मैं साउथ की बात करूँ, तो यहाँ हमारे कर्णाटक के एक साथी भी हैं, जो आज यहाँ नहीं हैं।

MR. CHAIRMAN: Hon. Member, North, South, East and West is through me. Look at me. ...(Interruptions)... मेरा चेहरा भी ठीक-ठाक है। ...(**व्यवधान**)...

श्री सुरेन्द्र सिंह नागर: जी, सर। ...(**व्यवधान**)... वह बहुत इम्प्रेसिव है। ...(**व्यवधान**)... हमें उससे प्रेरणा मिलती है। ...(**व्यवधान**)...

सर, बेंगलुरु-चेन्नई एक्सप्रेसवे साउथ में है। यह सैंक्शन कब हुआ - 2011 में और काम कब शुरू हुआ? यूपीए सरकार ने इसे 2011 में सैंक्शन किया और इसको 2024 में पूरा करने कौन जा रही है - नरेन्द्र मोदी जी की सरकार। इसका लाभ किसको मिलेगा - इसका लाभ किसी विशेष आदमी को नहीं मिलेगा। चेन्नई और बेंगलुरु के बीच की जो दूरी है, वह दूरी 3 घंटे से घटेगी। यह काम पूरा करने का कार्य नरेन्द्र मोदी जी की सरकार ने किया है। ...(**व्यवधान**)... सर, अटल टनल के प्रोजेक्ट को किसने बनाया? आप लोगों ने इसके लिए सपना देखा और इसकी घोषणा की। ...(**समय की घंटी**)... लेकिन इसको किसने पूरा किया? इसको नरेन्द्र मोदी जी की सरकार ने पूरा किया। यह फर्क है दोनों की घोषणा और संकल्प में, जिसकी मैं चर्चा करना चाहता हूँ।

अगर आप असम के भूपेन हज़ारिका सेतु की बात करें, तो इसको किसने सैंक्शन किया? इसको यूपीए सरकार ने 2003 में सैंक्शन किया। इसको कंप्लीट किसने किया? नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व वाली सरकार ने 2017 में इसे पूरा करने का काम किया।...(**समय की घंटी**)...

MR. CHAIRMAN: Please conclude.

श्री सुरेन्द्र सिंह नागर: सर, ऐसे ही एक बोगीबील ब्रिज है, जो असम के धेमाजी जिले और डिब्रूगढ़ जिले को जोड़ता है। यह प्रोजेक्ट कब सैंक्शन हुआ और इसकी क्या स्थिति थी? यह प्रोजेक्ट 1997 में सैंक्शन हुआ। इस प्रोजेक्ट को किसने पूरा किया? नरेन्द्र मोदी जी की सरकार ने इसको 2018 में पूरा किया। इससे फायदा क्या होगा? हमारे मित्र मनोज झा जी बैठे हैं,...(**व्यवधान**)...

श्रीमती रंजीत रंजन: मित्र मत बोलिए, वे घबरा जाते हैं।

श्री सुरेन्द्र सिंह नागर: दिल बड़ा होना चाहिए। आप दिल थोड़ा बड़ा कीजिए, सोच बड़ी कीजिए और देश के लिए सोचिए। मैं बिहार के कोसी रेल ब्रिज की बात करता हूँ। यह बिहार का महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट था। यह कब इनीशिएट हुआ? यह 2003 में इनीशिएट हुआ। यह ब्रिज मिथिलांचल को जोड़ता है। इस ब्रिज के कारण दूरी बहुत कम हो जाती है। यह बिहार का महत्वपूर्ण ब्रिज है। यह कब कंप्लीट हुआ और इसको किसने कंप्लीट किया? नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व वाली सरकार ने इस ब्रिज को पूरा करने का काम किया और बिहार को एक तोहफा देने का काम किया।

ऐसे ही देश में बहुत से रेल प्रोजेक्ट्स हैं, जिनका मैं जिक्र करना चाहता हूँ। कश्मीर की बात आई, अभी तो ये भारत जोड़ कर आए हैं, तोड़ने वालों के साथ। कश्मीर, जहाँ पर अनुच्छेद 370 और 35ए हटने के बाद तिरंगा झंडा फहराया गया, लेकिन उसके डेवलपमेंट के लिए आपकी क्या सोच है, मैं उसका एक उदाहरण देना चाहता हूँ। उसके डेवलपमेंट के लिए आपकी सोच कश्मीर रेल लिंक प्रोजेक्ट है। यह कब सैंक्शन हुआ? यह 1995 में सैंक्शन हुआ। इसको पूरा किसने किया? नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व वाली सरकार ने इसको पूरा करने का काम किया। कश्मीर के लिए हमारी यह सोच है, नरेन्द्र मोदी जी की सरकार की यह सोच है। विकास का जो पैसा कुछ लोगों की जेब में जाता था,

उससे आम आदमी के लिए वहाँ का इन्फ्रास्ट्रक्चर सुधारने का काम किया गया। नरेन्द्र मोदी जी की सरकार ने वहाँ पर इस रेल प्रोजेक्ट को पूरा करके सबसे बड़ी लाइफलाइन देने का काम किया है।

अब आप कर्नाटक में चले जाइए। वहाँ बीदर-कलबुर्गी रेल लाइन है, जो 110 किलोमीटर की रेल लाइन है। यह कब सैंक्शन हुई? यह 2000 में सैंक्शन हुई।

MR. CHAIRMAN: Please conclude.

श्री सुरेन्द्र सिंह नागर: सर, यह प्रोजेक्ट अटका रहा। इसकी घोषणा थी। नरेन्द्र मोदी जी की सरकार ने संकल्प लिया और उस संकल्प को पूरा किया। नरेन्द्र मोदी जी की सरकार ने 2017 में इस प्रोजेक्ट को पूरा करने का काम किया। ...(**समय की घंटी**)... यह फर्क है।

सभापति जी, आज नॉर्थ-ईस्ट की बहुत बात होती है। इस देश में नॉर्थ-ईस्ट को हमेशा इग्नोर किया गया है। मैं सिक्किम एयरपोर्ट का ज़िक्र करना चाहता हूँ। सिक्किम एयरपोर्ट सैंक्शन कब हुआ - 2008 में। सिक्किम एयरपोर्ट को पूरा किसने किया - नरेन्द्र मोदी जी की सरकार ने 2018 में पूरा किया। नॉर्थ-ईस्ट के लिए हमारी यह सोच है। हमने एयर कनेक्टिविटी बढ़ाने का काम किया है। अगर आप एयरपोर्ट की बात करना चाहते हैं, तो मैं अगला उदाहरण देना चाहूँगा। सभापति जी, मैं उत्तर प्रदेश से आता हूँ।

श्री सभापति: आप कन्क्लूड करिए।

श्री सुरेन्द्र सिंह नागर: सर, मैं एक-दो विषय रखकर अपनी बात कन्क्लूड करता हूँ।

श्री सभापति: आप एक मिनट में कन्क्लूड करिए।

श्री सुरेन्द्र सिंह नागर: अगर आप एक मिनट दे रहे हैं, तो मैं आखिरी बात पर आ जाता हूँ। मैं एक विषय रखना चाहता हूँ। सभापति जी, मैं बाकी बातें नहीं कहना चाहता हूँ, बल्कि कुछ योजनाओं का ज़िक्र करना चाहता हूँ। मैं "प्रधानमंत्री आवास योजना - शहरी" का ज़िक्र करना चाहता हूँ। मैं उत्तर प्रदेश के बुलन्दशहर जनपद के गुलावठी में पैदा हुआ और वहीं मेरा घर है। लोक सभा चुनाव, 2019 के समय एक दिन कुछ लोग मुझसे मिलने आए। वे मेरे पड़ोस के ही थे और वे अल्पसंख्यक समुदाय से थे। वे बता रहे थे कि एक व्यक्ति, जो अल्पसंख्यक समाज से है, वह सड़क पर खड़ा होकर कह रहा है कि मुझे मोदी जी को वोट देना है। इससे मेरी भी उत्सुकता बढ़ी। मैंने उससे पूछा कि ऐसी क्या वजह है। मैंने उस व्यक्ति को बुलाया। उसके आस-पास के लोग उस पर दबाव बना रहे थे कि तुझे मोदी जी को वोट नहीं देना है। यह प्रेशर उसके ऊपर बना हुआ था। ...(**व्यवधान**)... सभापति जी, मैं उससे मिला और मैंने उससे पूछा कि ईमानदारी से बता कि क्यों वोट देना चाहता है। वह मेरा पड़ोसी भी था। मैंने उससे इसी भाषा में, साधारण शब्दों में पूछा। वह बोला कि सांसद जी, वोट इसलिए दूँगा, क्योंकि मैंने

जीवन में कभी नहीं सोचा था कि मेरा घर भी बन सकता है। मेरा घर मोदी जी ने बनवाया है, इसलिए वोट दूँगा।

सर, मैं आखिरी बात कहना चाहता हूँ। हमने फार्मा इन्फ्रास्ट्रक्चर क्रिएट किया है। मैं एफपीओज़ की बात करता हूँ। मैं उत्तर प्रदेश के जिस जनपद से आता हूँ, बुलन्दशहर के उस जनपद में एक एफपीओ चलता है, जिससे 700 महिलाएं जुड़ी हुई हैं। हमारा वह एफपीओ आज पूरे देश में उदाहरण है। आज वे ऑर्गेनिक वेजिटेबल्स पैदा कर रहे हैं। ...(**समय की घंटी**)... सर, मैं एक मिनट और लेकर अपनी बात समाप्त करूँगा। वे आज स्विट्ज़रलैंड, जापान और अन्य देशों को वेजिटेबल्स एक्सपोर्ट कर रहे हैं।

सभापति जी, अंत में, देश के जो लाखों-करोड़ों लोग हैं, जिन्हें इस देश के प्रधान मंत्री जी ने विभिन्न योजनाओं के माध्यम से लाभान्वित किया है, मैं उनकी कुछ बात एक शेर के माध्यम से कहकर, अपनी बात समाप्त करना चाहूँगा। वे कह रहे हैं -

"दुनिया में कोई जान से प्यारा नहीं होता।"

यह हम सब मानते हैं कि दुनिया में कोई जान से प्यारा नहीं होता, लेकिन वे इसके बाद क्या कह रहे हैं -

"कुछ लोग मगर जान से प्यारे भी मिले हैं।"

वे यह नरेन्द्र मोदी जी के लिए कह रहे हैं, बहुत-बहुत धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN: Hon. Leader of the Opposition, Shri Mallikarjun Kharge.

विपक्ष के नेता (श्री मल्लिकार्जुन खरगे): सभापति महोदय, मुझे कल बात करनी थी, लेकिन मेरी तबीयत आज भी उतनी ही खराब है। हालांकि, मुझे मेरा कर्तव्य भी निभाना है। मैंने राष्ट्रपति जी का अभिभाषण देखा। यह मेरा दुर्भाग्य है कि उस दिन मैं ज्वॉइंट सेशन में हाजिर नहीं हो सका, क्योंकि कश्मीर में मौसम खराब होने की वजह से वहाँ की बहुत-सी फ्लाइट्स कैंसल हो गई थीं।मेरी आदत है कि जब पार्लियामेंट चलती है, तो मैं हमेशा यहाँ पर हाज़िर होने की कोशिश करता हूँ। राष्ट्रपति जी के अभिभाषण के लिए मैं उनको शुभकामनाएँ देता हूँ, क्योंकि एक महिला राष्ट्रपति ने इस देश के लिए संदेश दिया और उन्होंने कुछ चीज़ें बताईं। अक़सर ऐसा होता है कि सरकार जो कहती है, वही राष्ट्रपति, गवर्नर भी कहते हैं। मेरी ऐसी इच्छा थी कि राष्ट्रपति जी भी अपना प्रेशर बनाकर समाज के सबसे कमजोर वर्गों के लिए कुछ ठोस संदेश देंगी और कुछ ठोस कामों के बारे में बताएँगी, लेकिन मैं निराश हो गया हूँ।

सर, यह कोई विज़न स्टेटमेंट नहीं है। राष्ट्रपति का जो अभिभाषण होता है, उसमें हमेशा बहुत सी चीज़ें बताई जाती हैं कि हम आगे क्या करने वाले हैं, इस देश को आगे किस ढंग से चलाएँगे और किन-किन पॉलिसीज़ पर आगे हमारे क्या कदम होंगे। लेकिन उसमें ज्यादातर यही था कि पहले के लोगों ने क्या किया और उन्होंने कितना अचीव किया। उसमें कभी-कभी यह भी आया कि पिछली गवर्नमेंट्स ने क्या किया। मैं यह अपेक्षा नहीं करता था। आप जो करते हैं, वह बोलिए। आप कितने दिन यही बोलेंगे कि पिछली सरकारों ने क्या किया? मैं अभी भी साहब का भाषण सुन रहा था। वे लिस्ट बनाकर यह बता रहे थे कि किस-किस ने कितने काम किए, कौन-कौन से प्रोजेक्ट्स अटक गए थे, इन सबका उन्होंने एक पूरा ब्यौरा दिया। सर, मेरे पास भी पूरा ब्यौरा है, लेकिन समय नहीं है और समय नहीं रहने की वजह से मैं वे सारी चीज़ें नहीं बता सकता। सभापति महोदय, अगर मैं इसे यहाँ टेबल पर भी रखूँगा तो यह रिकॉर्ड में नहीं आएगा, क्योंकि हम जो भाषण देते हैं, वही रिकॉर्ड में रहेगा।

सर, 1947 के पहले इस देश की स्थिति क्या थी, 2014 तक स्थिति क्या रही और 2014 से लेकर आज तक क्या किया गया, ये सब मेरे पेपर्स में हैं। अगर आप उतना टाइम देते हैं, तो मैं कम्पैरेटिवली बोल सकता हूँ कि पहले लिट्रेसी रेट क्या था, लाइफ एक्सपेक्टेंसी कितनी थी, इन्फैंट मॉर्टैलिटी कितनी थी, फीमेल लिट्रेसी कितनी थी और एससी-एसटी की क्या स्थिति थी। मैं ये सारी चीज़ें बता सकता हूँ, लेकिन इतने काम करने के बावजूद भी आपमें इतनी जेलेसी क्यों है? आप अपनी बात को रखिए, लेकिन दूसरों ने जो काम किए, उनके बारे में भी थोड़ा सा कहिए। अगर बुनियाद नहीं है तो फिर बिल्डिंग कहाँ खड़ी होगी? साहब, बुनियाद में जो पत्थर लगाए जाते हैं, वे किसी को नहीं दिखते, लेकिन ऊपर जो रहते हैं, वही इनॉग्युरेशन के नाम पर दिखते हैं। इसलिए मैं यह पूरे 10 पेज यहाँ पर रखूँगा, क्योंकि मेरे पास बोलने के लिए समय कम है। आप बड़े दिल वाले हैं, आप मुझे जरूर...

श्री सभापतिः मान्यवर, यह समय आपने निश्चित किया है। आपकी पार्टी का समय बचा हुआ है। यह निश्चित किया गया कि आप 30 मिनट बोलेंगे। कल माननीय दिग्विजय सिंह जी बोल रहे थे। जयराम रमेश जी ने इनको 10 मिनट का अतिरिक्त समय दे दिया, किंतु अब भी जितना समय है, आप उसका उपयोग कीजिए।

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः मैं उतने समय का उपयोग करूंगा, लेकिन आपके पास डिस्क्रिश्नरी पावर है। हमने आपको दी है। इस हाउस का टाइम आगे बढ़ाने की पावर भी आपके पास है। आप हम सबसे पूछ कर घंटे, दो घंटे या चार घंटे ज्यादा समय तक सदन चला सकते हैं। आपके पास सुप्रीम पावर है, मेरे पास तो सिर्फ रिक्वेस्ट करने की पावर है।

श्री सभापतिः मैंने कल कोशिश की थी कि हाउस को 8 बजे तक चलाएं। मुझे समर्थन नहीं मिला। मैंने बड़ी कोशिश की थी, क्योंकि The House is made for dialogue, debate and discussion, ताकि पब्लिक इंटरेस्ट सर्व हो पाए।

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः महोदय, मेरा समय जा रहा है।

श्री सभापतिः आप बोलें।

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः महोदय, प्राइम मिनिस्टर साहब यदि अपने डेवलपमेंट, गवर्नेंस और जब पार्लियामेंट चलती है तो इधर ज्यादा ध्यान दें तो अच्छा रहेगा, लेकिन वे हमेशा इलेक्शन मूड में ही रहते हैं। इधर पार्लियामेंट चलती रहती है, उधर वे मेरी कॉन्स्टीट्युएंसी, गुलबर्गा में गए हुए हैं। वहां लम्बा राउंड किया, फिर कॉन्फ्रेंस करने के बाद भी पूरी हार खाए। क्या आपको सिर्फ मेरी एक ही कॉन्स्टीट्युएंसी मिली है! एक कॉन्स्टीट्युएंसी में दो मीटिंग...

श्री सभापतिः यह गहरी जांच का विषय है।

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः महोदय, मुझे बोलने दीजिए।

श्री सभापतिः यह नज़दीकी संबंध है।

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः महोदय, वे भी हंस रहे हैं, पहली बार हंस रहे हैं। मोदी साहब पहली बार हंस रहे हैं और आप उनको हंसने भी नहीं दे रहे हैं।

श्री सभापतिः मुझे एक बात याद आ गई। आपने 8 अगस्त को कहा था, मेरे बारे में ही कहा था, *'अगर तलाश करूं तो कोई मिल जाएगा' मेरे प्रीडिसेसर ऑफिस में थे। 'मगर आपकी तरह कौन हमें मिलेगा, आपके साथ यह मंज़र रौनक जैसा है, आपके बाद मौसम बहुत सताएगा।'* मौसम कहां सता रहा है, मौसम तो ठीक है। आप भी हंस रहे हैं, it is being shared.

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः महोदय, जब मैंने यह कहा था, उस वक्त नायडु साहब बैठे थे।

श्री सभापतिः मेरे लिए कहा था कि आगे बहुत सताएगा।

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सर, उस वक्त नायडु साहब बैठे थे। गुज़रे दिन तो ऐसे थे, लेकिन आगे आने वाला मौसम और खराब है, ऐसा मैंने बोला था। मुझे ऐसा ही महसूस हो रहा है। हमें बात करने नहीं देते, रूल 267 में चर्चा करने नहीं देते, अगर कोई भी चीज़ हम उठाना चाहते हैं, तो उसके लिए आपको दरियादिल होना चाहिए, आपको उसे अलाउ करना चाहिए। बाद में सरकार है, वह उसको निपटाती है। वे कह देते हैं कि यह ठीक है या नहीं है, फिर आप हम सबको समझा सकते हैं। इसीलिए मेरा आपसे एक निवेदन है कि पार्लियामेंटरी डेमोक्रेसी में तो चर्चा होती है। जब होती है, तो उसका

उत्तर भी मिलता है। इसीलिए मैं आपसे फिर एक बार निवेदन करता हूं कि आप हमें ऐसे ही बोलने के लिए चांस देते रहें, डेमोक्रेसी में सुनते जाएं और उसको सुलझाएं - जो भी हम सलाह देते हैं।

दूसरी बात यह है कि राहुल गांधी जी भारत जोड़ो यात्रा में कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक चले और मैं हर स्टेट में उस यात्रा में हाज़िर हुआ, बहुत सी जगह अपनी बात कही, बहुत सी जगह मैंने अपनी बात रखी। यह भारत जोड़ो यात्रा किसी के खिलाफ नहीं है। 3,600 किलोमीटर चलना, लोगों के विचारों को सुनना और लोग जो कहते हैं, आगे के लिए उनका मार्गदर्शन लेना, यह मकसद था। मैं यहां सदन में देखता हूं और सदन के बाहर भी देखता हूं कि नफरत की बात ज्यादा होती है। मैं बार-बार यह देखता हूं कि कहीं भी जाओ, तो हमारे रिस्पॉंसिबल एमपीज़, मिनिस्टर्स केवल हिंदू-मुस्लिम, हिन्दू-मुस्लिम की बात करते हैं। क्या देश में केवल हिन्दू-मुस्लिम ही मिलते हैं, दूसरा सब्जेक्ट नहीं मिलता है? दूसरी तरफ क्रिश्चियन्स के चर्च की तरफ आपकी निगाहें हैं। कहीं कोई शेड्यूल्ड कास्ट का व्यक्ति मंदिर में गया, तो उसको मारते हो, उसकी सुनवाई नहीं होती है।...(**व्यवधान**)... देखिए, आज हम शेड्यूल्ड कास्ट को हिन्दू समझते हैं। हम शेड्यूल्ड कास्ट को हिन्दू समझते हैं, तो उसको मंदिर में जाना क्यों अलाउड नहीं है?...(**व्यवधान**)... यदि उसको हिन्दू समझते हैं, तो उसको पानी क्यों नहीं देते हो, यदि उसको हिन्दू समझते हैं, तो उसको शिक्षा क्यों नहीं मिलती है, यदि उसको हिन्दू समझते हैं, तो उसको बराबरी का स्तर क्यों नहीं देते हो? उसके घर में जाकर खाना खाकर शोर मचाते हो और यह कहते हो कि आज हमने शेड्यूल्ड कास्ट के मकान में खाना खाया! सर, बहुत से मंत्री फोटो निकालकर टी.वी. पर यह बताते हैं कि आज हमने शेड्यूल्ड कास्ट के घर में खाना खाया। यह बड़ी बात है? अगर धर्म एक है, ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Hon. LoP...*(Interruptions)*...

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: जब धर्म एक है...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Hon. LoP, one second, please...*(Interruptions)*...

श्री जयराम रमेश: सर, आप इनको बोलने दीजिए।...(**व्यवधान**)... आप इनको बोलने दीजिए।

MR. CHAIRMAN: I can inform Mr. Jairam Ramesh that the LoP doesn't need his support. The Leader of the Opposition knows how to handle his affairs. You get up every time, whether it is Shri Digvijaya Singh or someone else. That is not appropriate.

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, I am the Chief Whip. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Every Member in the House stands on his own legs. ...*(Interruptions)*... One second, please. ...*(Interruptions)*...

SHRI JAIRAM RAMESH: Allow him to speak. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: The LoP brings on the table huge experience; experience of decades. When sitting in the Chair, I find the gestures of the LoP are little beyond his normal discourse, it is my bounden duty to request him to maintain composure. ...*(Interruptions)*... We are not in aggressive mode. ...*(Interruptions)*... This House is meant for sober dialogue, with sobriety, so that we understand each other's point of view. ...*(Interruptions)*... Hon. LoP will bear this in mind. This is my request. ...*(Interruptions)*...

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: सर, मैं दुख के साथ कहता हूं कि मेरा दर्द दूसरे लोग समझ नहीं सकते हैं। इसलिए बाबा साहेब डा. अम्बेडकर जी ने कहा कि जिसको दर्द होता है, जो उस दर्द पर मलहम लगाते हैं, उन्हीं को वह महसूस होता है। जो मलहम नहीं लगाने वाले हैं या उसको देखने वाले नहीं हैं, उनको कैसे मालूम होगा? जो यह कठिनाई झेलता है, उसी को वह मालूम होती है, दूसरों को नहीं। इसलिए एक तरफ वे हमारे साथ भी नफरत करते हैं। फिर उसके बाद धर्म के नाम पर, जाति के नाम पर, भाषा के नाम पर वहां भी नफरत है। नफरत से भरा हुआ है, इसलिए, नफरत छोड़ो, भारत जोड़ो।

सर, कॉन्स्टिट्युएंट असेम्बली के मेम्बर राष्ट्रपति डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी ने उस वक्त यह कहा था कि सभी समुदाय के अधिकारों का सम्मान करना होगा - चाहे हिन्दू हो या मुस्लमान, राजा हो या किसान, हमें सबका सम्मान करना चाहिए, लेकिन आज हर जगह नफरत फैल रही है और हमारे ही प्रतिनिधि लोग, मंत्री लोग उसको बढ़ावा दे रहे हैं। मैं प्रधान मंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि आप चुप क्यों बैठे हैं? आप हरेक को डराते हो, लेकिन इनको क्यों नहीं डरा रहे हो? जो लोग नफरत फैलाने की कोशिश करते हैं, अगर आपकी नज़र उधर की तरफ गई, तो वह ऐसा बैठ जाएगा कि नेक्स्ट मुझे टिकट मिलने वाला नहीं है, यह समझकर वह बात बंद करेगा, बोलेगा नहीं, लेकिन *

MR. CHAIRMAN: It does not suit your stature. ...*(Interruptions)*... It does not suit your stature. ...*(Interruptions)*... It does not suit your stature. ...*(Interruptions)*... It does not suit your stature. ...*(Interruptions)*... Frankly speaking, there are certain positions for which we have to have great regard. In this House, on 8th December, 2022, I said,

* Expunged as ordered by the Chair.

when Leader of the House will speak, when Leader of the Opposition will speak or when two former Prime Ministers will speak, I will look to the Rule Book later because these positions have august stand. I said so. Similarly, we cannot treat institutions with that kind of observation. You are a very senior Member. If anyone in the House... ...*(Interruptions)*... One second. ...*(Interruptions)*... If anyone in the House was to use this expression for LoP, I would come to the rescue of the LoP. It is an elevated constitutional position. At least, I expected from you, Mallikarjun ji, that you will raise the level of debate and not use those juicy expressions. This is not good. ...*(Interruptions)*... They are not appreciated. ...*(Interruptions)*...

SHRI JAIRAM RAMESH: It is not fair. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Take your seat. ...*(Interruptions)*... Please take your seat. ...*(Interruptions)*...

SHRI K.C. VENUGOPAL (Rajasthan): It is unfair, Sir. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Take your seat, Mr. Venugopal. ...*(Interruptions)*...

SHRI K.C. VENUGOPAL: It is unfair, Sir. ...*(Interruptions)*... How can you say this, Sir? ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Mr. Venugopal, take your seat. ...*(Interruptions)*...

SHRI K.C. VENUGOPAL: It is very unfair, Sir. ...*(Interruptions)*...

SHRI MUKUL BALKRISHNA WASNIK (Rajasthan): It is not fair, Sir. ...*(Interruptions)*...

SHRI SYED NASIR HUSSAIN (Karnataka): Sir, the Leader of the Opposition... ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: One second. ...*(Interruptions)*... Take your seat. ...*(Interruptions)*... Take your seat. ...*(Interruptions)*... Take your seat. ...*(Interruptions)*... I am on my

legs. ...*(Interruptions)*... No, please take your seat. ...*(Interruptions)*... Hon. Members, take your seats. ...*(Interruptions)*...

SHRI K.C. VENUGOPAL: It is very unfair, Sir. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: I will not allow the debate to go to that level. ...*(Interruptions)*... No, no. I am sorry. ...*(Interruptions)*... I would urge the LoP to control his Members. ...*(Interruptions)*... I would urge him.

SHRI DIGVIJAYA SINGH (Madhya Pradesh): Sir, I am sorry to say that ... ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Mr. Digvijaya Singh, you are a very senior Member. When I am on my legs, it is elementary for you to take your seat. ...*(Interruptions)*... Please take your seat. ...*(Interruptions)*... Take your seat. ...*(Interruptions)*...

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, you are always... ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: All of you take your seat. ...*(Interruptions)*...

SHRI K.C. VENUGOPAL: No, Sir. It is always ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Mr. Venugopal, take you seat. ...*(Interruptions)*... Please take your seat. ...*(Interruptions)*... Take your seat. ...*(Interruptions)*... Please take your seat. ...*(Interruptions)*... Hon. Members, when the Leader of the Opposition made reference to Ambedkar ji... ...*(Interruptions)*...

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: What, Sir?

MR. CHAIRMAN: You made reference to what was said in the Constituent Assembly. Am I right?

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: *Yes.*

MR. CHAIRMAN: Right. I would also like to remind you of one more observation that it is the bounden duty of every Member of this House to enhance the decorum.

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सर, मुझे यह मालूम है। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Please sit down. *...(Interruptions)...* Please sit down. *...(Interruptions)... Sit down. ...(Interruptions)... Sit down. ...(Interruptions)... Take your seat. ...(Interruptions)...* No, no. The Chair cannot allow. *...(Interruptions)...* It is for the LoP to take a call to what level he wants to raise the debate. *...(Interruptions)...* If LoP comes to that level... *...(Interruptions)...* Yes, Mr. Mallikarjun Kharge, please speak. *...(Interruptions)...*

SHRI JAIRAM RAMESH: When Mr. Vajpayee called Narasimha Rao... *...(Interruptions)...*

MR. CHAIRMAN: Please take your seat. *...(Interruptions)...*

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सर, आप इतना इमोशनल मत हो जाइए, वे खुश होने वाले नहीं हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापतिः मल्लिकार्जुन जी, मैं यह कह रहा हूं ...(**व्यवधान**)... सुनिए, ...(**व्यवधान**)... For every wrong practice... *...(Interruptions)...*

श्री जयराम रमेशः सर, उनको बोलने दीजिए। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: One second, Mr. Jairam Ramesh. *...(Interruptions)...* One second. *...(Interruptions)...*

श्री जयराम रमेशः सर, आप बार-बार ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, time has come for us... *...(Interruptions)...* हर गलत परंपरा को जस्टिफाई करने के लिए रीयर व्यू में देखते हैं। We will not... *...(Interruptions)...*

Please bear that in mind. ...*(Interruptions)*... Mr. Mallikarjun Kharge, the Leader of the Opposition, please speak.

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सर, अगर आप ऐसे इंटरप्ट करते गए, तो मैं क्या कहूं, क्योंकि हम फ्लो में बोलते हैं। अगर कहीं गलती है, तो आप एक्सपंज करिए। ...(**व्यवधान**)... अगर यहां पर कहीं कोई शब्द ठीक नहीं है ...(**व्यवधान**)...

SHRI DEREK O'BRIEN (West Bengal): You are breaking the flow of the speaker. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Please don't break his flow.

SHRI DEREK O'BRIEN: It happened yesterday and it is happening today. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Mr. Derek, take your seat. ...*(Interruptions)*...

SHRI DEREK O'BRIEN: You cannot break the flow. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Take your seat. ...*(Interruptions)*...

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सर, मैं आपको एक बात और बताना चाहूंगा कि दूसरे हाउस में मैं पाँच साल फ्लोर लीडर था, मैं बहुत सी बातें करता था, लेकिन उनका भी उत्तर प्राइम मिनिस्टर साहब देते थे। यहां पर मुझे दो साल हो गये, मैं यहाँ पर भी फ्लोर लीडर हूं। पीछे कर्नाटक में 9 साल लीडर था और 5 साल डिप्टी लीडर था, as good as मैं ही उस वक्त चलाता था, क्योंकि जो लीडर थे, वे थोड़े से बीमार थे। सर, मुझे थोड़ा सा तो अनुभव है।

श्री सभापतिः इसीलिए कहा है।

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः लेकिन आप बार-बार मुझे टोक रहे हैं, आप पोज़िशन के तहत बात नहीं कर रहे, *...(**व्यवधान**)... *

---

* Expunged as ordered by the Chair.

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, all throughout ...*(Interruptions)*... One second. All throughout, I have shown highest respect to the Leader of the Opposition, and this House is witness to a spectacle when I invited the hon. Leader of the House to my Chamber. He said, "I don't want to quote the Leader of the Opposition." Number two, yesterday was a sad day. Digvijaya Singh ji was speaking. He used an expression for the President. I did not make an issue of it. I immediately cautioned him. He withdrew immediately. What he said was, "What has the President done to get that office?" It could have been very different. It is my duty here to ensure that there is cordiality, congeniality and real debate and discussion. If I have urged, ...*(Interruptions)*... One second. If I have urged the hon. Leader of the Opposition that at his elevated level, the discourse has to be very different, I am sure there is nothing wrong with it.

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: सर, आपने मुझे जो सलाह दी, मैं उसका स्वागत करता हूं, लेकिन सलाह दोनों साइड होनी चाहिए, मैं यही अर्ज़ करता हूं। सर, 2014 में प्राइम मिनिस्टर साहब ने, एक बहुत बड़ी बात बोलिए या जुमला बोलिए, यह कहा था - 'न खाऊंगा, न खाने दूंगा', लेकिन * यह मैं पूछना चाहता हूं। देखिए, * ढाई साल में 13 गुना बढ़ गई। वर्ष 2014 में उसकी दौलत 50 हज़ार करोड़ रुपए थी, वर्ष 2019 तक एक लाख करोड़ रुपए हुई। अचानक ऐसा क्या जादू हो गया कि दो ही साल में 12 लाख करोड़ रुपए की सम्पत्ति आ गई? मुझे समझ में नहीं आता कि इतना फास्ट डेवलपमेंट, यह क्या * से बन रहा है? क्या आप उनसे...(**व्यवधान**)... फिर क्यों साहब ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: The discourse cannot go to allegations which you can't substantiate. ...*(Interruptions)*...

SHRI TIRUCHI SIVA (Tamil Nadu): He has not mentioned any name. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: I cannot allow this House to be a platform of free fall of information, using these loose expressions, casting aspersions without any basis. The Leader of the House wants to say something.

---

* Expunged as ordered by the Chair.

THE LEADER OF THE HOUSE (SHRI PIYUSH GOYAL): Sir, the hon. Leader of the Opposition is a very distinguished senior leader, as you rightly pointed out. We also have the distinguished former Finance Minister who has run this Government for many years before our Government came in 2014.

12.00 **Noon**

The hon. Leader of the Opposition is making an allegation which (a) neither can he substantiate (b) an association which has absolutely no basis whatsoever and (c) he is talking of the purported wealth which does not have any merit because that is a share market calculation on which the Government has no role to play. ...(*Interruptions*)... It is for the regulators to see and for the share market participants to decide what value they give. ...(*Interruptions*)... So any aspersion being cast and trying to assess and suggest that a large wealth was being created is completely baseless. ...(*Interruptions*)... I would urge him to learn from his former Finance Minister what this valuation is and how this is created and weather it results in wealth or it is a valuation that is some market force-driven wealth. ...(*Interruptions*)...

MR. CHAIRMAN: One second. ...(*Interruptions*)... I would urge you ...(*Interruptions*)...

SHRI SUSHIL KUMAR MODI (Bihar): Sir, I have a point of order. ...(*Interruptions*)...

MR. CHAIRMAN: Under what Rule?

SHRI SUSHIL KUMAR MODI: Sir, Rule 238A.

MR. CHAIRMAN: Yes.

SHRI SUSHIL KUMAR MODI: Rule 238A says, "No allegation of a defamatory or incriminatory nature shall be made by a member against any other member or a member of the House unless the member making the allegation has given previous intimation to the Chairman.."

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, this is not an allegation. ...(*Interruptions*)...

MR. CHAIRMAN: One second, Shri Jairam Ramesh. ...(*Interruptions*)... No. ...(*Interruptions*)... One second. ...(*Interruptions*)... I have insisted right from the day one that we have to be extremely careful. ...(*Interruptions*)...

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, these valuations are ...(*Interruptions*)...

MR. CHAIRMAN: One second. ...(*Interruptions*)... I don't know if there is a problem. ...(*Interruptions*)... Every time any speaker of your party speaks, you want to help him out. ...(*Interruptions*)... Let them do it. ...(*Interruptions*)... I would urge the Leader of the Opposition ...(*Interruptions*)... One second. ...(*Interruptions*)... I would urge the Leader of the Opposition that the point raised is a valid point. This House cannot be a platform to level allegations. ...(*Interruptions*)...

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, there are no allegations. ...(*Interruptions*)...

MR. CHAIRMAN: What is wrong with you? ...(*Interruptions*)... What is wrong with you? ...(*Interruptions*)... Shri Jairam Ramesh, I know...(*Interruptions*).... Mr. Mallikarjun Kharge, what is your team doing? ...(*Interruptions*)...

श्री सैयद नासिर हुसैन (कर्नाटक): सर, जेपीसी बना दीजिए, पता चल जाएगा। ..(**व्यवधान**)..

MR. CHAIRMAN: I call upon Mr. Mallikarjun Kharge to put documentation on record right now which he has done with respect to allegations involving the name of the Prime Minister. ...(*Interruptions*)... Do it. ...(*Interruptions*)... You have used expressions which are not appropriate. ...(*Interruptions*)... Sit down. ...(*Interruptions*)... Sit down. ...(*Interruptions*)...

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, there is a difference between valuations and allegations. ...(*Interruptions*)... He is giving valuations.

MR. CHAIRMAN: I know. ...(*Interruptions*)... I know. ...(*Interruptions*)... Sit down. ...(*Interruptions*)... Take your seat. ...(*Interruptions*)... Take your seat.

...(*Interruptions*)... Hon. Leader of the Opposition, I call upon you that we must work. ...(*Interruptions*)... I know you have made some very strong observations regarding me also a while ago. I can assure you, you bring on the table huge experience, I also bring on the table modest experience. I am imploring you ...(*Interruptions*)... What is his problem? ...(*Interruptions*)... What is his problem? ...(*Interruptions*)... The debate in the House has to be firmed up on duly authenticated record. This House cannot be a platform for free fall of information. One can't say anything one likes. We cannot have a spectacle which we had. ...(*Interruptions*)... No. ...(*Interruptions*)... I would urge you, I would request you, in the name of your seniority, in the name of the position you hold...(*Interruptions*)...

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: Why are you saying this?

MR. CHAIRMAN: I am saying so because you have in the last three minutes used expressions which you know are stigmatic. No, no. ...(*Interruptions*)... Authenticate it. ...(*Interruptions*)... Every allegation will have to be authenticated, Mr. Mallikarjun Kharge. ...(*Interruptions*)... That is the direction of the Chair. ...(*Interruptions*)... Please go ahead. ...(*Interruptions*)...

SHRI TIRUCHI SIVA (Tamil Nadu): Sir, I have a point of order. It is under Rule 238(i) and (ii). Shri Sushil Modi referred to that rule. It says that a Member while speaking shall not make a personal charge against a Member. He didn't speak anything like that. He was generally continuing his speech. Now, his point is about valuation. ...(*Interruptions*)... It is not against any Member. ...(*Interruptions*)...

MR. CHAIRMAN: Please sit down. ...(*Interruptions*)...

SHRI TIRUCHI SIVA: He did not quote that. He quoted only Rule 238(ii). ...(*Interruptions*)...

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, the Leader of the House is a distinguished Chartered Accountant. The Leader of the Opposition is talking only of valuation. ...(*Interruptions*)... He is not making any allegations. ...(*Interruptions*)...

SHRI PIYUSH GOYAL: Sir, he is not only talking about valuation....(*Interruptions*)...

MR. CHAIRMAN: Hon. Finance Minister. ...(*Interruptions*)...

THE MINISTER OF FINANCE; AND THE MINISTER OF CORPORATE AFFAIRS (SHRIMATI NIRMALA SITHARAMAN): Sir, if I can make some sense of what is going on, it is very smart to say that we are giving data; we will corroborate it; we will leave it on the Table; we are not talking about a Member and all this. But it is completely infused with insinuations against the hon. Prime Minister and that is what we are objecting to. It is one thing to say that it is valuation and we don't understand it. That is all right. Please quote the valuation. But they are subtly and overtly repeatedly insinuating against the hon. Prime Minister. That is what we are objecting to. ...(*Interruptions*)...

MR. CHAIRMAN: You should agree. ...(*Interruptions*)... One second please. ...(*Interruptions*)... After listening to the hon. Finance Minister, I thought that everyone will agree. ...(*Interruptions*)... In every word she spoke, there is sublimity and you are objecting to it. ...(*Interruptions*)... Please sit down. ...(*Interruptions*)... Mr. Digvijaya Singh, what Khargeji said was beyond insinuation. ...(*Interruptions*)... No, no. ...(*Interruptions*)... You have been a Chief Minister for ten years. We are making reflection about the Prime Minister of the country. ...(*Interruptions*)... Yes. ...(*Interruptions*)... Mr. Kharge has said so. ...(*Interruptions*)... Yesterday, you were very reasonable. ...(*Interruptions*)... When the highest constitutional office came in for suffering at your hand, you relented. ...(*Interruptions*)... No, no. ...(*Interruptions*)... You have a great experience at your back. Can you allow an institution like President or Prime Minister to be so treated? No. ...(*Interruptions*)...

SHRI DIGVIJAYA SINGH (Madhya Pradesh): Sir, I would like to know what he said against the Prime Minister.

MR. CHAIRMAN: Listen to him carefully; you will know it. ...(*Interruptions*)...

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: देखिये सर, मैंने यह कहा कि एक व्यक्ति, जिसकी सम्पत्ति ढाई साल में 13 गुना बढ़ गई, जो 2014 में 50,000 करोड़ रुपये की थी, वह 2019 में एक लाख करोड़ रुपये की हो गई। ... (**व्यवधान**)...अचानक ऐसा क्या जादू हुआ कि दो ही साल में 12 लाख करोड़ रुपये की हो गई?

मैंने यह कहा। ... (**व्यवधान**)...दूसरा, हिंडनबर्ग की इंटरनेशनल रिपोर्ट है, लेकिन ये उसको मानते नहीं। उसके बारे में मैं डिटेल में नहीं जाना चाहता और फिर इस तरह से गड़बड़ी क्रिएट करके मेरा टाइम तो चला गया, लेकिन मैं इसे और आगे नहीं बढ़ाना चाहता। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापतिः आप तो नहीं बढ़ा रहे हैं, पर मैं बता रहा हूं। कहीं से कोई भी रिपोर्ट आ जायेगी और हम कुछ भी करेंगे! ... (**व्यवधान**)...दुनिया के किसी भी कोने से कोई भी रिपोर्ट आ जायेगी, we have to raise the level. मैं कुछ कहना नहीं चाहता हूं, ऐसा नहीं है।... (**व्यवधान**)... My suggestion is, let us believe in ourselves. Let us believe in our strength. Let us believe in our institutions. *...(Interruptions)...* हर किसी को अपने इंस्टीट्यूशंस को ऐनालाइज़ करने के लिए अधिकार दे दिया। ...(**व्यवधान**)... Someone speaking somewhere will speak something about us and we will get rocked by it. *...(Interruptions)...*

श्री पीयूष गोयलः सर, ये तो बेबुनियादी विदेशी रिपोर्ट्स पर निर्भर कर रहे हैं अपनी बातों को ...(**व्यवधान**)... और यह जो कांग्रेस का तरीका है, ये विदेश में क्या करते हैं, कभी चीन के साथ, कभी किसी के साथ साँठ-गाँठ करते हैं। ...(**व्यवधान**)... मैं एक स्पष्ट बात रखना चाहता हूँ। ...(**व्यवधान**)... इन्हीं के खुद के नेता, जिनके कहने के बगैर ये कुछ नहीं करते, ...(**व्यवधान**)... ऐसे नेता की संपत्ति तो पब्लिक डोमेन में ...(**व्यवधान**)... मेम्बर ऑफ पार्लियामेंट के नाते वे पब्लिक डोमेन में डालते हैं। वह पब्लिक डोमेन की संपत्ति ये देख लें कि 2004 में इनके नेता की संपत्ति कितनी थी और आज इनके नेता की संपत्ति क्या है, ...(**व्यवधान**)... कई गुणा बढ़ी है कि नहीं? ...(**व्यवधान**)... क्या यह 27 गुणा बढ़ी है कि नहीं? ...(**व्यवधान**)... ये देखें कि उनकी संपत्ति, ...(**व्यवधान**)... स्वयं की व्यक्तिगत संपत्ति कैसे 27 गुणा बढ़ी है! ...(**व्यवधान**)... यह मैं ऑथेंटिकेट करता हूँ। ...(**व्यवधान**)...

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, does he have your permission to speak? *...(Interruptions)...* Did he speak one full sentence? *...(Interruptions)...*

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः देखिए, इसलिए मुझे यह बोलना पड़ रहा है।

श्री सभापतिः मैं आपसे एक अनुरोध करूँगा। ...(**व्यवधान**)... एक अनुरोध करूँगा। ...(**व्यवधान**)... हर बार ...(**व्यवधान**)... Mr. Chidambaram, please. *...(Interruptions)...* No, no. *...(Interruptions)...* While sitting, you are speaking; it is not good. *...(Interruptions)...* Sir, I have a request to make to the Leader of the Opposition. *...(Interruptions)...* Every time your Member rises -- you are a very senior Member, Digvijaya Singh*ji* is a very senior Member -- every time, Mr. Jairam Ramesh will rise to give support. *...(Interruptions)...* Now, I want to tell him. *...(Interruptions)...*

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, I have seen four Chairmen. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: One second. ...*(Interruptions)*... Take your seat. ...*(Interruptions)*...

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, I have seen four Chairmen. ...*(Interruptions)*... I have not seen anyone interrupt. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: You must know the rules. ...*(Interruptions)*... I am on my.. ...*(Interruptions)*...

SHRI JAIRAM RAMESH: You are interrupting everybody. ...*(Interruptions)*... You don't allow anybody to speak. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: I request you that the Member must be allowed to stand on his own feet and you are capable of it, the world knows it. ...*(Interruptions)*...

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, you are not allowing anybody to speak. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Don't bring down the..*...(Interruptions)*... Don't bring down the stature of LoP or other senior Members. ...*(Interruptions)*... He can defend himself. ...*(Interruptions)*... He can make his point on his own. ...*(Interruptions)*... Every time I say something to the LoP, you rise. ...*(Interruptions)*... It is not good. ...*(Interruptions)*... LoP. ...*(Interruptions)*...

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: सर, देखिए, डिसरप्शन बहुत हो रहा है। आप तो डिसरप्शन नहीं चाहते हैं, लेकिन जब मेरा भाषण हो रहा है, तो डिसरप्शन हो रहा है। सर, इस व्यक्ति को जो प्रोत्साहन मिला है कि एसबीआई, पंजाब नेशनल बैंक, बैंक ऑफ बड़ोदा, इस ग्रुप ने उसको 82 हजार करोड़ रुपए तक लोन दिया। मैं एक उदाहरण देता हूँ, आप भी आश्चर्यचकित होंगे, मोदी साहब को यह मालूम होगा कि गुजरात में एक किसान को 31 पैसे बकाया के लिए नो ऑब्जेक्शन सर्टिफिकेट नहीं मिला। 31 पैसे! मैं एनेक्श्चर 7 पढ़ कर आपको बताऊँगा। *"सब धन कुबेरों के 90 हजार करोड़ माफ, किसान के 31 पैसे वसूलने पर अड़ा स्टेट बैंक ऑफ इंडिया।" "गुजरात हाई कोर्ट ने कहा, कर चुकाने के बाद भी किसान को नहीं दिया नो ड्यूज़ सर्टिफिकेट।"* 31 पैसे के लिए!

श्री सभापति: आप इसको ऑथेंटिकेट कर दीजिए।

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: 31 पैसे के लिए!

श्री सभापति: आप ऑथेंटिकेट करिए।

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: यह तो है।

MR. CHAIRMAN: Sir, it will have to be authenticated. ...*(Interruptions)*...

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: लीजिए।

श्री सभापति: नहीं, नहीं। ...(**व्यवधान**)... In accordance with rules, the statement of fact is required to be authenticated. ...*(Interruptions)*... You are yet to do it. ...*(Interruptions)*...

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: कुछ ही समय बाद पूरा ऋण चुका दिया गया!

MR. CHAIRMAN: The hon. LoP is called upon to authenticate this information during the course of the day. ...*(Interruptions)*...

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: फिर भी बैंक याचिकाकर्ताओं की जमीन राजस्व रिकॉर्ड में अपने नाम दर्ज नहीं कराने दे रहा है। जमीन के नए मालिक दो वर्ष पहले उच्च न्यायालय पहुँचे, जिस पर बुधवार को सुनवाई हुई और कोर्ट ने यह कहा कि 50 पैसे तक तो यह माफ है। देखिए, न्यायमूर्ति करिया ने कहा, बैंकिंग अधिनियम के मुताबिक 50 पैसे से राशि को नज़रअंदाज़ करके सर्टिफिकेट जारी किया जाना चाहिए, क्योंकि मूल कर्ज़दार ने पहले ही ऋण को पूरा चुका दिया था।

MR. CHAIRMAN: Authenticate.

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: तो 31 पैसे के लिए ये करोड़ों रुपये लूट रहे हैं। करोड़ों रुपये लूट कर ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: What you have read is required to be authenticated for three reasons. ...(*Interruptions*)... One... ...(*Interruptions*)...

श्री मल्लिकार्जुन खरगे : सर, यह कोर्ट का ऑर्डर है।

श्री सभापतिः नहीं, यह कोर्ट का ऑर्डर नहीं है। ऑनरेबल एलओपी, यह कोर्ट का ऑर्डर नहीं है। You put that on the Table of the House during the course of the day. ...(*Interruptions*)... Do it. ...(*Interruptions*)... Authenticate it. ...(*Interruptions*)... And, ask him also to do it.

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः अच्छा, ठीक है। दूसरी चीज़ यह है कि इतने शॉर्ट पीरियड में डिफेंस, एयरपोर्ट्स, पोर्ट्स, हाईवेज़, सोलर, विंड एनर्जी, मीडिया और सीमेंट। अब सीमेंट के क्षेत्र में वे मेरे वहां भी आ गए, गुलबर्गा में परसों ही एसीसी सीमेंट फैक्टरी खरीदी है। अब भाषणों में, चुनावी प्रचार में मोदी साहब मेरे पीछे लगे हुए हैं, लेकिन उन्होंने शाहबाद में, मेरे क्षेत्र के पास सीमेंट का कारखाना खरीद लिया। ठीक है, खरीद लिया, लेकिन उनको वह पैसा तो पब्लिक सेक्टर ने दिया, बैंकों ने दिया। पैसा भी मेरा, मेरा यानी जनता का, तो पैसा भी हमारा, एयरपोर्ट्स, पोर्ट्स, रोड्ज़ भी हमारे और हमारे ही पैसे से वे पब्लिक सेक्टर को खरीद रहे हैं। इससे पब्लिक सेक्टर में सामान्य लोगों को जो नौकरियां मिलती थीं, वे सब डूब गईं। अगर पब्लिक सेक्टर जिन्दा रहता, तो उसमें रिज़र्वेशन मिलता। आपको मालूम है, पहले भी मैंने इसके आंकड़े निकाल कर इसके बारे में बोला था। सरकार में चाहे डिफेंस सेक्टर हो, चाहे बीएसएनएल हो या दूसरे जितने भी पब्लिक सेक्टर्स हैं, वे हों या गवर्नमेंट के जितने भी स्कूल्स या सेंट्रल यूनिवर्सिटीज़ हैं, वे हों, अगर आप इन सबकी नौकरियों का जायज़ा लेंगे, तो सब मिलाकर इनमें 30 लाख वैकेंसीज़ हैं। 30 लाख वैकेंसीज़ में 15 लाख वैकेंसीज़ तो रिज़र्वेशन वालों के लिए हैं, एससीज़ के लिए, एसटीज़ के लिए, बैकवर्ड क्लासेज़ के लिए हैं। सर, मोर ऑर लैस शायद आप भी उन्हीं में आते हैं, शायद आप भी ओबीसीज़ में आते हैं, आपको भी इसका फायदा मिलता था।

श्री सभापतिः जी, हां।

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः बची हुई 15 लाख नौकरियों में से 10 प्रतिशत नौकरियां इकोनॉमिकली वीकर सेक्शंस को जाती हैं। ये नौकरियां आप क्यों नहीं दे रहे हैं? आप नौकरियों में भर्ती क्यों नहीं कर रहे हैं? प्राइवेटाइज़ेशन कर-कर के, उनको नौकरियां भी नहीं मिल रही हैं और लोगों को जो एश्योर्ड जॉब्ज़ मिलती थीं, वे भी खत्म हो रही हैं। आप तो गरीबों के लिए ज्यादा काम करने वालों में से हैं, तो फिर आप यह काम क्यों कर रहे हैं? आप पब्लिक सेक्टर को मज़बूत करिए, लेकिन आप तो प्राइवेट सेक्टर में पूरा पैसा भेज रहे हैं। 82,000 करोड़ रुपये प्राइवेट सेक्टर के बजाय पब्लिक सेक्टर में इन्वेस्ट करिए, पब्लिक सेक्टर में 10 लाख लोग काम करते हैं। अडाणी को 82,000 करोड़ रुपये आप देते हैं, लेकिन उसके पास सिर्फ 30,000 लोग काम करते हैं, फिर भी उसको प्रोत्साहन मिलता है।

MR. CHAIRMAN: One second. One second. ...(*Interruptions*)... Please take your seat. ...(*Interruptions*)... One second. ...(*Interruptions*)... India has robust mechanism

where how people get contracts. ...(*Interruptions*)... One second. ...(*Interruptions*)... One second. ...(*Interruptions*)...

SHRI K.C. VENUGOPAL: Sir, let the Government answer.

MR. CHAIRMAN: No. ...(*Interruptions*)... Hon. LoP. ...(*Interruptions*)... No. ...(*Interruptions*)... One second. ...(*Interruptions*)... One Second. ...(*Interruptions*)... Take your seats. ...(*Interruptions*)... Take your seats. ...(*Interruptions*)... No. ...(*Interruptions*)... No. ...(*Interruptions*)... We cannot send a signal. ...(*Interruptions*)... India.... ...(*Interruptions*)... One second. ...(*Interruptions*)... We cannot allow. ...*(Interruptions)*... Mr. Chidambaram, you know it more than anyone else. ...*(Interruptions)*... We have a transparent, accountable, robust mechanism. ...*(Interruptions)*... I am only cautioning the LoP. I am cautioning the LoP. He is trying to give an impression that India is a country where contracts can be given like this. ...*(Interruptions)*..... No. ...*(Interruptions)*... Contracts are given on the basis of accountability and mechanism. ...*(Interruptions)*... I know the rules are set. No. ...*(Interruptions)*... The rules are set. ...*(Interruptions)*... LoP will bear this in mind. ...*(Interruptions)*... No; take your seat. ...*(Interruptions)*... You are a senior Member. ...*(Interruptions)*... Let others do it, you are very senior. ...*(Interruptions)*...

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, let the Finance Minister answer. ...*(Interruptions)*... Let the hon. Prime Minister answer. ...*(Interruptions)*... Why are you...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: One second. ...*(Interruptions)*... Take your seat. ...*(Interruptions)*... Take your seat. ...*(Interruptions)*... Hon. Members, I have got input from very senior quarters in the country and outside the country...*(Interruptions)*... that Parliament should not be allowed to be used to run down our transparent, accountable, robust mechanism. ...*(Interruptions)*... No, the LoP says that something has been given on a plate. No. ...*(Interruptions)*... Take your seat. ...*(Interruptions)*... LoP. ...*(Interruptions)*...

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, you cannot reply. ...*(Interruptions)*...

SHRI PIYUSH GOYAL: Hon. Chair, give me a minute. ...*(Interruptions)*... The opposition is trying to allege that the Chair should not have made this comment. ...*(Interruptions)*... I would like to point out to the hon. Leader of the Opposition and his other colleagues that the Chair... ...*(Interruptions)*... Hon. Chairman, I would like to urge upon the hon. Leader of the Opposition and his other colleagues that the Chair is duty-bound to protect the dignity of India. ...*(Interruptions)*... The Chair is duty-bound to ensure that national interest is not compromised. ...*(Interruptions)*... This is the Council of States. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: The LoP wants to say something. ...*(Interruptions)*...

SHRI PIYUSH GOYAL: If any Member makes a comment, which insinuates, and I have the definition of insinuation. ...*(Interruptions)*... If he makes a comment which insinuates...*(Interruptions)*...

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, you cannot reply. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Please take your seat. ...*(Interruptions)*... Yes, LoP. ...*(Interruptions)*... Hon. Members, take your seats. ...*(Interruptions)*... We have to say from this platform only as to what is in national interest. ...*(Interruptions)*... No; authenticate; it cannot be an allegation without being substantiated. ...*(Interruptions)*... No. ...*(Interruptions)*... LoP. ...*(Interruptions)*...

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, you cannot reply. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: LoP; Shri Mallikarjun Kharge. ...*(Interruptions)*... Please. ...*(Interruptions)*...

SHRI DIGVIJAYA SINGH: What anti-national comment has he made? ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Yes, I will tell you. One second. ...*(Interruptions)*... Ask them to take their seats. ...*(Interruptions)*... Mr. Mallikarjun Kharge, please. ...*(Interruptions)*... Ask your Members to take their seats, please. ...*(Interruptions)*...

SHRI DIGVIJAYA SINGH: What anti-national comment has he made? ...*(Interruptions)*...

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, you cannot reply. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: You take your seat, I will tell you what he has said. ...*(Interruptions)*... Please take your seat. ...*(Interruptions)*... Take your seat. ...*(Interruptions)*... No. Please, take your seat. ...*(Interruptions)*...

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: Sir, ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Yes, go ahead. ...*(Interruptions)*... Mr. Mallikarjun Kharge. ...*(Interruptions)*...

SHRI K.C. VENUGOPAL: Sir, you are becoming a part of the Government. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Not appropriate. ...*(Interruptions)*... Objectionable. Tell him...*(Interruptions)*... Mr. Mallikarjun Kharge, please resume your address. ...*(Interruptions)*... Please. ...*(Interruptions)*... Take your seats. ...*(Interruptions)*... Take your seat, Mr. Jairam Ramesh. ...*(Interruptions)*... Why did I say so? An impression was explicitly given by the Leader of the Opposition that the largest democracy in Earth is giving contracts like this... ...*(Interruptions)*...

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, again you are... ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Resume your seats, please. ...*(Interruptions)*... Yes, the Leader of the Opposition, ...*(Interruptions)*... Mr. Mallikarjun Kharge, please....*(Interruptions)*... Please.

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: Sir, I beg of you. I differ with your opinion. If I speak truth, it is anti-national. I am not anti-national; I am more patriotic than anybody of you.

...(Interruptions)... I am a Bhoomiputra. I have not come from Afghanistan or from Germany or from other countries. *...(Interruptions)...* I am a native of this land. I am a true Bhartiya. Don't try to suppress me and my feelings. *...(Interruptions)...* You are looting the country and you are telling, I am anti-national. *...(Interruptions)...*

MR. CHAIRMAN: No, no... *...(Interruptions)...* Sit down. *...(Interruptions)...* Mr. Kharge. *...(Interruptions)...* One second. *...(Interruptions)...*

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: Yes, I am Kharge. *...(Interruptions)...*

MR. CHAIRMAN: I said, Mr. Kharge, not Kharge. *...(Interruptions)...* We greatly appreciate, you are a patriot, all of us are. There is no one here who is not a patriot. This is number one. Number two, it is for the first time being the man of such experience, you are unable to control them when they are violating the Chair. *...(Interruptions)...*

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, you are disrupting his speech. *...(Interruptions)...*

MR. CHAIRMAN: No, I will not yield on this point. *...(Interruptions)...* Let me tell you. *...(Interruptions)...* One second. *...(Interruptions)...* I am neither this side nor that side, I am on the side of Constitution. *...(Interruptions)...* I am not on this or that side. *...(Interruptions)...* I cannot be undismayed. *...(Interruptions)...* Mr. Kharge, please. *...(Interruptions)...*

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: सर, आपसे मेरी एक ही रिक्वेस्ट है। ...(**व्यवधान**)...

SHRI P. CHIDAMBARAM (Tamil Nadu): The Chair rarely speaks. It is the House of Commons's dictum.

MR. CHAIRMAN: Sir, every time, you go outside. There is enough in our country to learn. *...(Interruptions)...* And you go to the House of Commons! *...(Interruptions)...*

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: सर, मैं ये सारी चीज़ें आपके सामने रख रहा हूँ कि किस ढंग से एक व्यक्ति ने हजारों करोड़ रुपये पब्लिक सेक्टर बैंक्स से लिये और 2 ही साल में आज 12 लाख करोड़ की सम्पत्ति

पर कब्जा करके बैठा है। तो इसलिए हम चाहते हैं कि आप ज्वाइंट पार्लियामेंटरी कमेटी बैठाएँ, तो यह पूरा बाहर आयेगा। ...(**व्यवधान**)... 31 पैसे का भी आयेगा, 12 लाख करोड़ का भी आयेगा, हिंडनबर्ग की जो रिपोर्ट है, वह भी आयेगी। आप ज्वाइंट पार्लियामेंटरी कमेटी बिठाइए। उसके सामने हम भी आयेंगे, वे भी आयेंगे, दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा। ...(**व्यवधान**)... अगर उसमें से ये लोग, जो घोटाला करने वाले हैं, हरिश्चंद्र के जैसे पवित्र निकलें, तो आप और हम जाकर उनके गले में हार डालेंगे, उनके गले में माला डालेंगे।

MR. CHAIRMAN: One second; the Leader of the House wants to say something.

श्री पीयूष गोयलः सर, ज्वाइंट पार्लियामेंटरी कमेटी तब बैठती है, ...(**व्यवधान**)... ज्वाइंट पार्लियामेंटरी कमेटी तब बैठती है, जब आरोप सिद्ध होते हैं। इनकी तरह कोलगेट के घोटाले होते हैं, 2जी का स्कैम होता है, Antrix-Devas का scam होता है या सिक्योरिटीज़ पर सरकार पर आरोप लगता है, तब बैठती है। ऐसे इनके हिसाब से अगर कोई एक प्राइवेट इंडिविजुअल के इश्यू पर ज्वाइंट पार्लियामेंटरी कमेटी बैठने लगे, तो कल तो ज्वाइंट पार्लियामेंटरी कमेटी यह भी तय करेगी कि मल्लिकार्जुन खरगे जी ने जो स्कार्फ़ पहना हुआ है, यह लोइस विटन का स्कार्फ़ कहाँ से आया, किसने इसके लिए पैसे दिए, कितने का स्कार्फ़ है, इनकी वेल्थ कहाँ से आई!...(**व्यवधान**)... यह ज्वाइंट पार्लियामेंटरी कमेटी का इश्यू नहीं हो सकता है।...(**व्यवधान**)... इश्यू पर कोई फैक्ट्स दे या सरकार पर कोई आरोप लगा हो या यह बताए कि कोई कॉंट्रेक्ट दिया है या कोई बताए कि कोई गलत काम किया है, तब इसके बारे में बात करे। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापतिः एलओपी।

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सर, ये ज्वाइंट पार्लियामेंटरी कमेटी से क्यों भाग रहे हैं - यह मुझे मालूम नहीं है।

श्री सभापतिः उन्होंने अभी बताया।

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः आप भागते जाइए, हम पीछे आपको पकड़ेंगे।

सर, हमारी एक तो ज्वाइंट पार्लियामेंटरी कमेटी की डिमांड है, इसको सभी पार्टीज़ ने यहाँ पर रखा है। सभी पार्टीज़ के लोगों ने एक होकर एक आवाज़ में इस सदन में पूछा है, इसलिए आप उसको मानिए। उसको आप देश के हित में मानिए। इसमें देशद्रोह का मामला तो नहीं है। यह तो देश के हित में है। हम तो इलेक्टेड रिप्रेज़ेंटेटिव्स हैं, हम कहीं बाहर से, ऊपर से तो नहीं टपके हैं, इसलिए हम यह डिमांड करेंगे, बार-बार डिमांड करेंगे कि आप इस पर ज्वाइंट पार्लियामेंटरी कमेटी बनाइए।

अब डेमोक्रेटिक इंस्टीट्यूशन्स पर अटैक हो रहे हैं। यह बहुत ज्यादा हो रहे हैं। आप तो संविधान बहुत पढ़े हैं, क्योंकि आप बहुत ही जाने-माने एडवोकेट हैं। आपने यह कहा है....

MR. CHAIRMAN: You will not have to authenticate it! Go ahead.

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: सर, आपने मुझे बताया, उसको मैं यहाँ बताऊँ या नहीं बताऊँ - यह मुझे मालूम नहीं। बताने से ऐसा कुछ नहीं होगा।

श्री सभापति: मैं भी बहुत-सी बातें बताऊँगा, तो यह ठीक नहीं रहेगा।

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: सर, तो फिर छोड़ देता हूँ।

श्री सभापति: यह तो बहुत ज्यादा गंभीर है।

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: सर, जब आप शुरू-शुरू में वकालत करते थे, तब आपने कहा था कि आप हाथ से पैसे गिनते थे। यह तो ठीक है ?

श्री सभापति: नहीं, यह ठीक नहीं है।

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: सर, आप हाथ से पैसे गिनते थे। जब आपकी वकालत बढ़ती गई, तब आपने एक मशीन खरीदी और मशीन से पैसे गिनने लगे।...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति : ऐसा मैंने नहीं कहा।

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: सर, आपने यह कहा है।...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति: ऐसा है कि मुझे लगता है कि आप मेरे ऊपर जेपीसी बैठा दीजिएगा कि मुझे तब क्या मिलता था और अब क्या मिलता है।...(**व्यवधान**)... मैंने आपको यह कहा...

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: सर, आपकी मेहनत थी और लोग आपको चाहते थे कि ये तो हमारे वकील हैं, यही सक्सेसफुल कर सकते हैं, इसलिए लोग पैसे देते गए और आपको गिनने की फुर्सत नहीं थी। आपने मैडम को कहा कि मशीन से गिनते जाओ।...(**व्यवधान**)...

श्री पीयूष गोयलः सर, उसके लिए भी हमने रास्ता निकाल लिया है। उसके लिए प्रधान मंत्री मोदी जी ने ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Actually, the Leader of the Opposition has said something significant about me and the Leader of the House has missed it! इन्होंने यह कहा है कि मेहनत करते जाओ, छलांग अपने आप लगती जाएगी। इन्होंने जो ताना-बाना बुना था, उसका जवाब दिया है कि when there is a geometrical rise, manifold rise, it is on account of labour, planning and hard work. आपने यही कहा था न?...(**व्यवधान**)...

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः जी हाँ, सर। ...(**व्यवधान**)... सर, आप कॉंस्टिट्यूशन के भी बहुत पंडित हैं, माहिर हैं और हमारा जो आइडियल भारत है - यह उधर से हमेशा बोला जाता है, हमारा जो आइडिया है - सॉवरेन सोशलिस्ट सेक्युलर डेमोक्रेटिक रिपब्लिक, जिसमें हर नागरिक को लिबर्टी, इक्वैलिटी, फ्रेटर्निटी और जस्टिस मिले - वह यह है, लेकिन आज क्या हो रहा है? जो आदमी सच बोलता है, उसे बोलने नहीं देते। जो इन्सान सच लिखता है, उसे लिखने नहीं देते। जो जर्नलिस्ट अपने विचारों को लोगों के सामने रखता है, उसे जेल भेजा जाता है। अगर टीवी पर कोई डिबेट होती है, चाहे नौ बजे की हो या दस बजे की हो, उसमें कोई एंकर सत्यता की बात रखता है, तो उसे दूसरे दिन ही वहाँ से हटा देते हैं या खरीद लेते हैं। साहब, यह तो स्थिति है! यह मेरे ऊपर आया है, तो कल आपके ऊपर भी आएगा, इसलिए मैं आपसे हाथ जोड़कर विनती करता हूँ कि आप यह बात सुनिए। ...(**व्यवधान**)...

दूसरी बात, जो भारत का संविधान है, अगर हम उस संविधान के तहत चलेंगे, तो सबको सुख और समृद्धि मिलेगी। हर चीज़ में इक्वैलिटी को खत्म कर रहे हैं, लिबर्टी को खत्म कर रहे हैं, गरीबों के लिए जस्टिस नहीं है और फ्रेटर्निटी भी नहीं है। यह हिन्दू है, यह मुसलमान है, यह क्रिश्चियन है, यह बुद्धिस्ट है, यह फलाना-फलाना है, सबको धर्म के नाम पर बांट रहे हैं। ये चीज़ें आप लोग कर रहे हैं और उनका ब्लेम दूसरों पर डाल रहे हैं। आपके पास डराने के बहुत-से हथियार हैं। अगर कहीं जनता से चुनी हुई सरकार बनती है और आप लोगों को मेजॉरिटी नहीं मिलती है या आपके मन के मुताबिक वह सरकार नहीं होती है, तो लगाओ ईडी, लगाओ सीबीआई और ऑटोनॉमस बॉडीज़ का यूज़ करके, हर जगह तोड़-फोड़ करके सरकार बना दी जाती है - क्यों? अगर अपोज़िशन की एक-दो सरकारें ज्यादा हैं, तो क्या नुकसान होने वाला है? मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि आप इतनी मेजॉरिटी से आए हैं, फिर भी क्यों डर रहे हैं? इतनी मेजॉरिटी हो गई है कि डाइजेस्ट ही नहीं होती है, फिर भी डरते हैं! ऐसा मत करिए। कभी-कभी होता है कि आदमी को बहुत मिल जाता है, तो वह अपनी छांव से भी डरता है। यहाँ भी ऐसा ही हो रहा है, इसीलिए डरना नहीं है। अगर कोई आपकी बात नहीं मानता है, तो आप किसी के पीछे इनकम टैक्स को लगाते हो। अगर कोई मेम्बर आपकी पार्टी में नहीं आता है, तो आप उसे किसी-न-किसी तरीके से, कहीं-न-कहीं चाबी फहराकर अंदर लाते हैं। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: The hon. Member will authenticate.

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: ऑथैंटिकेट! ...(**व्यवधान**)... सर, कितनी ही सरकारें... ...(**व्यवधान**)... कर्नाटक की सरकार, महाराष्ट्र की सरकार, मध्य प्रदेश की सरकार... ...(**व्यवधान**)... कितने ऑथैंटिकेशन चाहिए? ...(**व्यवधान**)... मणिपुर की सरकार, गोवा की सरकार... ...(**व्यवधान**)... कितने हो गए हैं? ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति: आप सभी एमपीज़ पर ऐलिगेशंस लगा रहे हैं। ...(**व्यवधान**)... आप ऑथैंटिकेट कर दीजिए। ...(**व्यवधान**)... Put it on the Table.

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: सर, इनके पास एक और इंटरेस्टिंग मशीन है। ...(**व्यवधान**)... मोदी साहब और शाह साहब ने एक और इंटरेस्टिंग मशीन खरीदी है।

श्री सभापति: मोदी साहब, और?

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: सर, मोदी साहब और शाह साहब ने एक बहुत बड़ी इंटरेस्टिंग वॉशिंग मशीन खरीदी है। *

MR. CHAIRMAN: One second. ...*(Interruptions)*.... One second. Please take your seat. ...*(Interruptions)*....

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: क्या मैं बैठ जाऊँ?

श्री सभापति: जी, मैं रिक्वेस्ट कर रहा हूँ। Hon. Members, such kind of discourse and ridiculing an institution without factual basis does not behove... ...*(Interruptions)*.... I call upon the LoP to authenticate the assertions made by him during the course of the day.

श्री शक्तिसिंह गोहिल (गुजरात): सर, हम यहाँ पर किसलिए आए हैं? ...(**व्यवधान**)...क्या हम इसकी वाह-वाह करें? ...(**व्यवधान**)... ऐसा नहीं होता। ...(**व्यवधान**)... वे जवाब दें। ...(**व्यवधान**)...

* Expunged as ordered by the Chair.

MR. CHAIRMAN: I can understand. Sit down. Sit down. ...*(Interruptions)*... Shaktisinhji, use your *shakti* later on.

श्री शक्तिसिंह गोहिल: सर, यह कोई ...(**व्यवधान**)... सर, हमने देखा है, ऐसा नहीं होता। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: What have I done? ...(Interruptions)...

श्री शक्तिसिंह गोहिल: वे जवाब दें। ...(**व्यवधान**)... हमें आप बोलने ही नहीं देते। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Let me tell the hon. Member, whatever LoP says is to be responded by them. But, ...*(Interruptions)*... One second. One second. ...*(Interruptions)*... I am there. ...*(Interruptions)*... I will have to ensure... ...*(Interruptions)*... No, no. One second. The ruling party cannot invoke the provisions that I have. If a Member makes an allegation against another Member, it is my duty to live up to the constitutional requirement. Hon. LoP will, during the course of the day, substantiate the allegations with respect to so-called 'washing machine.' He will do it; go ahead.

SHRI JAIRAM RAMESH: Is the word 'washing machine' unparliamentary? ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Ask him to sit down, Sir. ...*(Interruptions)*... Sir, ask Shri Jairam Ramesh to take his seat. ...*(Interruptions)*...

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: देखिए, मैंने इसलिए 'वॉशिंग मशीन' शब्द का इस्तेमाल किया...

श्री सभापति: सर, मुझे दु:ख हुआ कि आपने कहा। ...(**व्यवधान**)... मुझे दु:ख हुआ कि आपने इस लहज़े से कहा। ...(**व्यवधान**)... आप जैसा अनुभवी आदमी ऐसा कहे, जिसमें कोई तथ्य नहीं है! ...(**व्यवधान**)... एकदम खोखली बात कैसे कही जा सकती है? ...(**व्यवधान**)...

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: सर, * यह बोलने के लिए मैंने 'वॉशिंग मशीन' बोला है, और कुछ नहीं है। ...(**व्यवधान**)...

---

* Expunged as ordered by the Chair.

दूसरी चीज़, बीबीसी डॉक्यूमेंटरी को भी बैन किया गया है, मुझे मालूम नहीं। बहुत सी यूनिवर्सिटीज़ में इस पर हंगामे हो गए, लाठीचार्ज हो गए। लेकिन अगर डेमोक्रेटिकली कोई डॉक्यूमेंटरी बताना भी चाहता है तो बताने दीजिए, आपको क्या होने वाला है? आप तो उसका उत्तर देंगे और इसके बावजूद भी आप मजबूत हैं, फिर क्यों डर रहे हैं? आपने तो बीबीसी की डॉक्यूमेंटरी बैन की, लेकिन उसे बहुत से लोगों ने देखा। यह शाहरुख खान की फिल्म के जैसा हो गया। सर, मैं बोलता हूँ कि आप जितना बैन करते जाएँगे, आप जितना रोकने की कोशश करेंगे, लोग उतना ही उस पर ध्यान देंगे कि उसमें क्या है। इसलिए मैंने नहीं कहा। आप डॉक्यूमेंटरी तो देखिए कि उसमें है क्या!

सर, मैं यहाँ पर अटल बिहारी वाजपेयी जी की एक बात को क्वोट करूँगा। यह तो कर सकता हूँ? उन्होंने यह अहमदाबाद में कहा था। *"साम्प्रदायिक हिंसा से विदेशों में भारत की छवि खराब हुई है।"* यह मैंने नहीं कहा, यह अटल बिहारी वाजपेयी जी ने कहा। *"क्या मुँह लेकर विदेश जाऊँगा। राजधर्म का पालन नहीं हुआ।"* ...(**व्यवधान**)... यह मेरा कहा हुआ नहीं है, यह अटल बिहारी वाजपेयी जी का है। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Leader of the House.

श्री पीयूष गोयलः सर, मैं भी अटल बिहारी वाजपेयी जी के बहुत निकट रहा हूँ। उन्होंने जो साम्प्रदायिक दंगे कांग्रेस की सरकारों में देखे थे, उनसे उनकी जो पीड़ा थी ...(**व्यवधान**)...

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: Sir, I am not yielding. ...*(Interruptions)*...

श्री पीयूष गोयलः जिस प्रकार से इनके शासन में दिन-रात महाराष्ट्र हो, गुजरात हो, देश के कोने-कोने में, बिहार हो, भागलपुर हो, देश भर में जितने साम्प्रदायिक दंगे होते थे, उससे जो अटल जी की पीड़ा थी, उसको वे जाहिर कर रहे थे।

MR. CHAIRMAN: Now, the Leader of the Opposition. ...*(Interruptions)*.. Yes, hon. Finance Minister.

SHRIMATI NIRMALA SITHARAMAN: Sir, if you allow me one minute, I fully appreciate the Leader of the Opposition quoting Shri Atal Bihari Vajpayee. But I only wish he quotes him fully. That paragraph ends with Shri Atal Bihari Vajpayee saying, "*यही तो राजधर्म का पालन कर रहे हैं।*"...(**व्यवधान**)... Quote that. ..*(Interruptions)*..

SHRI K.C. VENUGOPAL: Let her authenticate that. ...*(Interruptions)*..

SHRI JAIRAM RAMESH: Let her authenticate....*(Interruptions)*..

श्री घनश्याम तिवाड़ी (राजस्थान) : सभापति महोदय, ...(**व्यवधान**)...

SHRIMATI NIRMALA SITHARAMAN: I will authenticate ...*(Interruptions)*..

SHRI JAGAT PRAKASH NADDA (Himachal Pradesh): He will also authenticate. ...*(Interruptions)*..

MR. CHAIRMAN: One second. ...*(Interruptions)*.. Since a reference has been made to a great son of this country, a former Prime Minister, Bharat Ratna Atal Bihari Vajpayee*ji*, I call upon the Leader of the Opposition and the hon. Finance Minister to lay the documentation on the Table of the House during the course of the day.

SHRI K.C. VENUGOPAL: Yes, yes. ...*(Interruptions)*..

SHRIMATI NIRMALA SITHARAMAN: One more minute, Sir.

MR. CHAIRMAN: Hon. Finance Minister.

SHRIMATI NIRMALA SITHARAMAN: For having read only part statement ...*(Interruptions)*..

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: Sir, I am not yielding. ...*(Interruptions)*..

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, he is not yielding. ...*(Interruptions)*..

SHRIMATI NIRMALA SITHARAMAN: The Chair has called me.

SHRI K.C. VENUGOPAL: Sir, he is not yielding. ...*(Interruptions)*..

SHRIMATI NIRMALA SITHARAMAN: The Chair has called me. For having quoted partly to suit their convenience, they should also, after I corroborate and leave that statement here, give a word of apology. ...*(Interruptions)*..

MR. CHAIRMAN: I can assure the Members, what the LoP has said, what the hon. Finance Minister has said, consequences will follow because the entire country is concerned. Shri Atal Bihari Vajpayeeji was a former Prime Minister, Bharat Ratna, and a great son of this country. Any observation made by him if truncated, suited or not given properly, by this side or that side, it is duty of the Chair to deal with the situation. *...(Interruptions)..* Take your seats. *...(Interruptions)..*

SHRIU JAIRAM RAMESH: Please have the authentication authenticated. *...(Interruptions)..*

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: महोदय, यह 4 अप्रैल का है। अगर आपको डिटेल चाहिए, तो मैं वह लाकर दे सकता हूं।

MR. CHAIRMAN: No, Sir. *...(Interruptions)..* Newspaper reports are no substitute to documentation. *...(Interruptions)..* You have to authenticate what you said. *...(Interruptions)..*

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: महोदय, गुजरात मॉडल की बात होती है और डबल इंजन सरकार की बात बहुत आयी है। जब प्रधान मंत्री जी कर्णाटक में गए तो उन्होंने कहा कि डबल इंजन की सरकार होती है तो डेवलपमेंट होता है। सर, गुजरात में डबल इंजन की सरकार है, मैं वहां के बारे में सिर्फ दो मिनट में बताऊंगा, ऑथेंटिक बताऊंगा।

सर, गुजरात में एक हज़ार बर्थ्स में इन्फैंट मॉर्टेलिटी रेट 31 है। सौ पैदा होने वाले बच्चों में 25 परसेंट कुपोषित होते हैं। गुजरात इसमें 30 राज्यों में से 29वें स्थान पर सबसे नीचे है। यह ऑथेंटिकेटेड है। ...(**व्यवधान**)... नीति आयोग और हार्वर्ड की रिपोर्ट के अनुसार तमाम हेल्थ इंडिकेटर्स पर गुजरात सबसे निचले स्तर पर है। देश के 766 जिलों में सबसे नीचे के 10 जिलों में से 6 जिले गुजरात के हैं। आपको तो मालूम है कि आप...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Hon. LoP, 15 minutes of your Party time is left. *...(Interruptions)...* Only 15 minutes. *...(Interruptions)...*

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: महोदय, यदि आप बोलेंगे, तो मैं खत्म कर दूंगा।

श्री सभापति: आप बोलिए।

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सर, गुजरात में डबल इंजन स्वास्थ्य, शिक्षा और ह्यूमन डेवलपमेंट पर है। ...(**व्यवधान**)... आपको उतना अधिकार नहीं है, क्योंकि प्राइम मिनिस्टर को यह बताना होगा, क्योंकि वे साढ़े तेरह साल वहां पर चीफ मिनिस्टर थे, नौ साल से यहां प्राइम मिनिस्टर हैं। इससे पहले भी बीजेपी सरकार ही थी। जब 25-30 साल, 40 साल आप हुकूमत करते हैं, तब खुद की स्टेट में यह स्थिति है और दूसरों की बताते हो! सर, मैं इन्फ्लेशन की बात नहीं करता, क्योंकि सभी ने यह कहा है कि रिकॉर्ड इन्फ्लेशन हुआ। इस देश में एलपीजी, पेट्रोल, डीज़ल के दामों में महंगाई हुई। आप यूपीए की बात नहीं करते हैं। जब यूपीए के समय पेट्रोल और डीज़ल के दाम 70 रुपये थे, सिलेंडर 410 रुपये में था, तब कच्चे तेल की कीमत हाई थी, लेकिन आज कच्चे तेल की कीमत में गिरावट आई है और एलपीजी, पेट्रोल पर एक्साइज़ ड्यूटी बढ़ती जा रही है। सर, बेरोज़गारी के बारे में आपको मालूम है। मैंने आपको वैकेन्सीज़ के बारे में बताया, इसलिए मैं उसको छोड़ देता हूं, लेकिन प्रधान मंत्री मोदी जी ने हमसे और इस देश की 130 करोड़ जनता से वादा किया था कि हर साल दो करोड़ नौकरियां दूंगा। युवाओ, अगर मैं आ गया, तो हर साल दो करोड़ नौकरियां दूंगा। अब नौ साल में 18 करोड़ नौकरियां कहां हैं? ...(**व्यवधान**)...

AN HON. MEMBER: Then authenticate your statement! ***...(Interruptions)...***

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः यह ऑथेंटिकेटेड स्टेटमेन्ट by Prime Minister कहां है? अब 18 करोड़ नौकरियां छोड़िए, 50 लाख भी आप नहीं भर रहे हैं। तीस लाख सरकारी नौकरियां नहीं भर रहे हैं और गरीबों को रिज़र्वेशन में जो मिलना है, वह नहीं मिल रहा है। आप बार-बार गरीबों की बात कर रहे हैं। टोकना, इधर चलता है, लेकिन आपने जो किया, दो करोड़ नौकरियां यहां कहीं भी नहीं मिल रही हैं। पन्द्रह लाख के बारे में तो बहुत हो गया है। फिर शाह साहब ने उसको चुनावी जुमला बोल दिया था। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Not your level. ***...(Interruptions)...***

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः अब मैं उस जुमले को छोड़ देता हूं, लेकिन कम-से-कम प्राइम मिनिस्टर की ऑथेंटिक रिपोर्ट है और ऑथेंटिक रिपोर्ट I can quote. ...(Interruptions)...

MR. CHAIRMAN: Not your level. ***...(Interruptions)...*** Not your level. ***...(Interruptions)...*** Not your level. ***...(Interruptions)...***

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सर, प्राइम मिनिस्टर का हर कार्यक्रम देश पर बहुत भारी पड़ा। सर, मुझे जितनी हिन्दी लैंग्वेज आती है, उतना मैं बोलूंगा। अगर ग्रेमैटिकली बहुत ही ठीक है...

श्री सभापतिः आपकी हिन्दी बहुत ही मिठास की है। इसमें बहुत मीठापन है।

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सर, मैं ज्यादा हिन्दी नहीं बोलता हूं। मैं हिन्दुस्तानी हूं। आपकी अग्निवीर योजना फेल है। मोदी सरकार का नया कार्यक्रम, जो नोटबंदी थी, उससे लोगों को कितनी परेशानी हुई, लेकिन फिर भी उसकी तारीफ करते ही रहते हैं। जो नुकसान हुआ, अगर कार्यक्रम ठीक नहीं है, तो उसको मान लेने में कोई अपमान नहीं होने वाला है। यदि ठीक नहीं है, तो यही बोलिए। सर, जीएसटी, कोविड के बारे में मिसमैनेजमेंट हुआ। उसके बाद यह एक डिटोरिएटेड इकोनॉमिक सिचुएशन है। जो खाई बढ़ती जा रही है, उसमें गरीब, गरीब बनता जा रहा है, अमीर और अमीर बनता जा रहा है। यह मेरी रिपोर्ट नहीं है, लेकिन यदि आप रिपोर्ट के बारे में पूछते हैं, तो यह ऑक्सफैम की रिपोर्ट है। यह ऑक्सफैम की रिपोर्ट है कि टॉप 5 परसेंट लोगों के पास 62 परसेंट दौलत है और वहीं बॉटम के लोगों के पास सिर्फ 3-4 परसेंट दौलत है। आप बताइए कि इसको कैसे ठीक करोगे? इस अभिभाषण में तो यह नहीं है कि आप गरीब को ऊपर कैसे ला रहे हैं, लेकिन इन बातों को आप नहीं करेंगे। कॉरपोरेट वालों का 30 परसेंट से 22 परसेंट कर दिया और जीएसटी देने वाले जो गरीब लोग हैं, उनको कमजोर कर दिया। आज जो अमीर लोग बहुत पैसा कमा रहे हैं, वे तो जीएसटी कम देते हैं। इसीलिए आपने इसके बारे में भी कुछ नहीं कहा। एससी, एसटी, ओबीसी इनकी बातें बहुत कही गईं और यह राष्ट्रपति के अभिभाषण में भी है। सर, मैं आपके माध्यम से सरकार से अपील करना चाहता हूं। आपने कॉलेज, यूनिवर्सिटीज़ का बहुत निजीकरण किया। बहुत से कॉलेजेज़ आज प्राइवेट कर दिए गए हैं। एससी, एसटी, ओबीसी और यहां तक कि मैट्रिक स्कॉलरशिप, मौलाना आज़ाद फैलोशिप, पढ़ो परदेश स्कीम सब बंद हो गई हैं। एजुकेशन तो बहुत इम्पॉर्टेंट है। ...(**व्यवधान**)... आप तो हमेशा बंधे रहते हो। आप उसूलों की वजह से बंधे हुए नहीं हैं, किसी वजह से बंधे हुए हैं।

दूसरी बात, पैरा नम्बर 26 में आदिवासी बच्चों के लिए एकलव्य मॉडल रेज़िडेंशियल स्कूल्स की बात कही गई है। मेरे प्रश्न का उत्तर जो इस सदन में मिला है - 41 परसेंट टीचिंग पोस्ट्स खाली हैं। अब वे बच्चे क्या पढ़ेंगे, जिनको मैथेमैटिक्स, साइंस, इंग्लिश के टीचर्स नहीं मिलते हैं। वे बच्चे कैसे आगे आएंगे। आपने एकलव्य स्कूल का जिक्र किया है। अगर आप मेरे अनस्टार्ड क्वेश्चन की ऑथेंटिसिटी के बारे में पूछेंगे, तो मैं आपको रिप्लाई दे दूंगा और जो रिप्लाई मेरे पास आया है, अगर वह भी सत्य से दूर है, तो मैं कहूंगा कि सदन में ऐसा चल रहा है।

श्री सभापतिः आपको ऐसा लगता नहीं है कि you are being unfair to me?

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: No, Sir. I respect you.

श्री सभापतिः एक कानून को मानने वाला व्यक्ति विनम्र तरीके से आपको कुछ चीज़ें ऑथेंटिकेट करने के लिए कहता है। ...(**व्यवधान**)... एलओपी, आप बोलिए।

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सर, एक टाइम में ये सारे नेशनल ऐसेट्स बेचे जा रहे हैं, इसीलिए मैंने जेपीसी की मांग की और उसको प्रधान मंत्री एक्सेप्ट करेंगे, क्योंकि वे किसी बात से डरते नहीं हैं, तो इससे क्यों डरेंगे और ज्वाइंट पार्लियामेंटरी कमेटी के लिए वे बोलेंगे कि चलने दो, इसको वे मानेंगे।

आखिर में, अमीर-गरीब के बारे में जो आपकी चिंता है, उस पर बोलकर मैं अपनी बात समाप्त करूंगा, क्योंकि मेरा पूरा समय तो हाउस...

श्री सभापतिः समय आपकी पार्टी का खत्म हो गया।

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः नहीं। मेरा पूरा समय हाउस ने खाया है। मैं चार शब्द बोलकर अपनी बात समाप्त करूंगा। ...(**व्यवधान**)... नज़र नहीं है...

श्री सभापतिः सर, मुझे भी आपको सुनकर शेर सुनाने की आदत हो गई है। ...(**व्यवधान**)... आप बोलिए। Please... *...(Interruptions)...* listen to the hon. LoP.

श्री मल्लिकार्जुन खरगे : सर, आप दिलदार हैं, शुक्रिया।

*

"मिली कमान तो अटकी नज़र खजाने पर,
नदी सुखाकर किनारों की बात करते हैं।
वही गरीब बनाते हैं आम लोगों को,
वही नसीब के मारों की बात करते हैं।"

सर, मैं इतना कहते हुए विश्राम लेता हूं। आपने मुझे बोलने के लिए समय दिया, इसके लिए आपका धन्यवाद। मैं एक बार फिर से ज्वाइंट पार्लियामेंटरी कमेटी बिठाने की मांग करता हूं। इससे सब घोटाले की वजह बाहर आ जायेगी और दुनिया को मालूम होगा कि हमने तीन दिन वेस्ट नहीं किये, हमने यह सब न्याय के लिए किया है। हमने आपसे यहां पर बार-बार पूछा, बार-बार सारी पार्टियों के लोगों ने विनती की और यह न्याय के लिए किया। आप न्याय के लिए जेपीसी बैठायेंगे, ऐसी आशा करते हुए, मैं अपने भाषण को समाप्त करता हूं।

श्री सभापतिः मुझे भी माननीय खरगे जी से प्रेरणा मिल गई। अब मेरे में भी शायद कुछ जाग गया,

---

* Expunged as ordered by the Chair.

"उम्र भर ग़ालिब यही भूल करता रहा,
धूल चेहरे पर थी और आईना साफ करता रहा।"

...(**व्यवधान**)... यह मेरा है। don't bother.... मैंने एक बात ऑथेंटिकेशन क्यों कही, क्योंकि यह संस्कृति नहीं हो सकती कि न खाता न बही, मैं कहूं सो सही। यह नहीं हो सकता। श्री जवाहर सरकार।

1.00 **P.M.**

SHRI JAWHAR SIRCAR (West Bengal): Mr. Chairman, Sir, thank you very much for giving me the honour of speaking on the President's Address. The President's Address is mooted on one concept of *Amrit Kaal*. We have noticed it.

(MR. DEPUTY CHAIRMAN *in the Chair.)*

So, I would like to know from you and from our other friends as to what this *Amrit Kaal* is. अमृत काल क्या है? Have we crossed *Achhe Din* or are we still to reach *Achhe Din*? Year after year, these terms like *Amrit Kaal, Azadi ka Amrit Mahotsav* are invented. मुझे आजादी के अमृत महोत्सव पर दो शब्द कहने हैं कि we were very glad to see those of them, whose ancestors, whose political ancestors, did not take part in *Azadi*, freedom struggle, were celebrating ...*(Interruptions)*... Please put the House in order. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please go back to your seats. ...*(Interruptions)*...

SHRI JAWHAR SIRCAR: As I was saying, *Azadi ka Amrit Mahotsav* became a celebration for the atonement of those who had not participated in India's freedom struggle. If you want, I can produce those documents. Talking of the other one, *Achhe Din* ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please, ...*(Interruptions)*... माननीय सदस्यगण, मैं आपसे आग्रह करता हूं कि सदन में शांति बनाये रखिए। माननीय जयराम रमेश जी, प्लीज़।

SHRI JAWHAR SIRCAR: Sir, I hope that this time is not deducted from my very limited account. ...*(Interruptions)*... We were talking about *Achhe Din, Amrit Kaal, Azadi ka Amrit Mahotsav*. These terms are invented every now and then to distract attention. As I said, '*Azadi Ka Amrit Mahotsav*' was an atonement by those who did not take part in the freedom struggle. Now, as we move forward, there is another term, '*Achche Din*'. I was most expecting, like many other Indians, to be part of the Independence Day of last year, 2022, because several promises were made that were going to happen by the Independence Day of 2022. The first promise was that the farm income would be doubled by August, 2022. Has it happened? I leave it to the wisdom of the House. There was another promise that was repeated several times over the social media and the IT cell of a particular party that we were heading towards a five trillion dollar economy and that it would be achieved by 15th August, 2022. We are nowhere near the five trillion dollar economy. We were promised that we would ride the bullet train on 15th August, 2022. Only 25 per cent of the work has been completed. We were told that there would be electricity in every house on 24X7 basis by 15th of August, 2022. I leave it to the House to see whether it has happened or not. We were promised that Indian astronauts would be up there in the space by that night. I started looking up, but I could not find any Indian astronaut.

I don't know whether these are promises, whether these are *'Achche Din'*, whether these are part of *'Amrit'*! Somebody from their party called them *jumlas*. Now, the biggest *jumla*, as you know, was that Rs.15 lakhs would be put in everyone's pocket. That is nowhere in the scene. Nowhere has it happened. But, the movie that was opposed, *Pathaan*, that represents the essence of plurality, the essence that represents our oneness, has secured record earnings. Maybe the amount of Rs.15 lakhs will come from there. We believe in multi-culturalism. We believe in multi-religionism. When we look at the smallest regions, one appeal that I would like to make on behalf of my Party and on behalf of the neglected people of Meghalaya is that Garo and Khasi be placed in the Eighth Schedule of the Constitution. An official request has been made in this respect. I repeat it.

Now, coming back to the President's Address, I draw sustenance from para 9, 10 and 13 which have focussed attention on corruption. As you can guess, the most live issue of corruption now is about a particular conglomerate. Now, enough has been spoken about that issue, but the only thing that I would like to highlight is the role of the regulatory authorities. I have served in the regulatory authority bodies and in the Civil

Service. The way the regulatory authorities collapsed in the face of hard facts when Adani Green Energies' share value shot up by 5,500 per cent in 2.5 years, all regulatory bodies, including SEBI, did look the other way round. At every point of time, the Reserve Bank has failed us. At every point of time during this economic scam, the DRI has failed us. Of course, the DRI did take some steps, to be correct, but certainly not commensurate with the steps that should have been taken. The most glaring example of missing an action was the Enforcement Directorate and the PMLA. They were so busy raiding the Opposition that they did not find time to look at one of the biggest scams in the history of India. Our Party has supported the claim to send this to a JPC. There is no point in discussing it in the House, but we would go one step higher and we would place forward a demand for a Supreme Court-monitored inquiry, and a time-bound report will, perhaps, be even a stronger way of ensuring that we have taken this seriously, that the whole House has taken this seriously.

This Address mentions about poverty, but what poverty are you talking about? I am unable to understand because the entire basis is a report, that the consumer expenditures are there, which was done last in 2011-12, before this Government came into office, about eleven years ago. In the last eleven years or rather nine years of this Government, they did not undertake any consumer expenditure survey. One report that came out in 2017-18 was taken off from the website because it showed an uncharitable picture of this Government. We demand that the final consumer survey that is finally happening should be put out in the public domain as soon as possible, so that we know whether India's poor constitutes eight crore or more.

Sir, the Prime Minister and others have said with a lot of pride that they have been giving free food to 81 crore people. If 81 crore *Hindustanis* are lining up for free foodgrains -- and nobody can remove it now -- does it mean that 81 crore out of 140 crore are poor? You revise your lines of poverty, you revise your norms of poverty but come forward with facts, come forward with facts.

As far as tackling poverty is concerned, as everyone knows, popular schemes MNREGA and others help but budget of MNREGA has been slashed from Rs. 111 thousand crores to Rs. 89 thousand crore last year and to Rs. 60 thousand crore. Out of this, West Bengal has been selected maliciously for complete stoppage of MNREGA funds. You should come to Bengal to see how the welfare schemes are conducted. Without the success of such schemes, we could not have resisted the massive onslaught

that was thrown at us in 2021. With all the power of the State and with all the wealth that was possible, the people of West Bengal rejected it with 48 per cent majority because of welfare schemes. Please do take the trouble to come to West Bengal for learning how to conduct welfare schemes.

Sir, one point towards which I would like to draw the attention of my friends on both sides is that very soon we will move to new Parliament building but not a minute's discussion has been held with the users of Parliament. I have some insight because for the last one and a half years, I have been pursuing it with the Minister concerned who gives Minister-type answers. Because not even one consultation has been held, we do not know what facilities will be there. When I enquired, they said, no, we won't have a State Bank there. आपको बैंकिंग के लिए बार-बार उस बिल्डिंग से इस बिल्डिंग में आना है।

This space has been utilized for grand hall far beyond our requirement in the near future, and, I see a plan behind the large hall. You know that, Sir. As it is, fifty per cent of the Members are outside, maybe in the lobby and other places, for doing their other important things. So, when the camera pans at the House, it looks half-empty as it is even now. But if the hall size is made one and a half times more, the TV camera will show that hon. Members of Parliament do not take the House seriously. It is part of the narrative that Parliament is not required; Parliament has to be belittled. In one State Assembly -- I am talking about the State of Gujarat -- the Assembly sittings were reduced to 29 days in a year. Is some similar grand plan of belittling the legislature also on, for this national Parliament?

Secondly, Sir, why am I talking about consultation? It is not only for the facility. Look at the building; look at the grandeur of this present building; that has lotuses; that has all Indian symbols all around. And, you see the new triangular building. You won't get the same gravitas; you won't get the same splendor. At every point of time, aesthetics has been cast upon us. That aesthetic will remain as a permanent memory of poor architecture and this has been done by an architect specially chosen from Gujarat who is taking Rs. 250 crores for advising on a completely unaesthetic building.

Sir, let me now come to the subject of health, which has been repeatedly mentioned. Ayushman Bharat has saved eighty thousand crores of rupees. I have gone through the entire health expenditure budget and I found that this is almost 100 per cent of the Budget. Where do they get these figures from? Where do they obtain these figures from? If the officers are misleading them, then, question them as to where do they get such figures from. You talk of 9,000 *Jan Aushadhi Kendras* - one *Kendra* for 155 lakh

people and you are proudly mentioning that in your Report! Hundred and fifty five lakh people will go to one *Jan Aushadhi kendra*. सर, इस पर दिमाग लगाइए।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude now.

SHRI JAWHAR SIRCAR: I will take only one more minute. Our total health expenditure is just 3.6 per cent of the GDP. I could not help mention it. The Western world has 12 to 19 per cent; China has 5.6 per cent; Mexico has 6 per cent and we are at half of it. We should hang our heads in collective shame that we have not been able to look after the health sector the way we should have looked after it.

Sir, I thank you for the time given to me.

SHRI N.R. ELANGO (Tamil Nadu): Hon. Deputy Chairman, Sir, I thank you for the opportunity given to me to speak on the hon. President's Address. Sir, as per Article 87 of the Constitution of India, the Special Address of the hon. President is to inform the Parliament of the causes of the Summons. It is always expected to inform the Parliament of the causes of the Summons, namely, what the Government was doing during the last year and what it is going to do next year. But I could see from the President's Address what they have been doing for all the nine years and what they are visualizing for the next 25 years. Sir, the great Thiruvalluvar said * "The mark of wisdom is to see the reality behind everything." With that vision, when I saw the President's Address, I wanted to make a mention about three or four points. Democracy and federalism has been dealt with in paragraph 79. It says, "India's democracy was prosperous, strong, and will continue to be stronger in the future." The true federalism in real spirit and substance and not in ornamental form would be the seed for a vibrant democracy. Democracy has to be practised, not to be preached. I can quote some examples where our democracy has been violated. The Union shall not attempt centralization and should envisage decentralization by permitting the States to exercise powers of legislative and executive. The representatives of the Union Government in the States should act as a catalyst and their deed should not be against the legislative democracy of the States. Delegation of powers to the States should be real and intervention by the Union would be destructive to the constitutional mandate of federalism. However, States' contribution to the

* English translation of the original speech delivered in Tamil.

development in various fields should be recognized and appreciated by the Union for the sustained cooperation and federalism between the Union and the States.

For instance, the Tamil Nadu Legislative Assembly passed a Bill on NEET. It was sent for the assent of the President, but for the reasons best known to them, the Bill has been kept in the cold storage for a long time. That Bill has not been approved. Various reasons have been given by the Union for not approving the Bill. The Governor of the State of Tamil Nadu is not giving his assent on most important Bills of the State, namely, banning of online lottery and certain other Bills related to Universities. The Bills have neither been assented to nor returned to the Legislative Assembly. They have been kept in the cold storage. This is happening not just in Tamil Nadu. This is happening in Telangana; this is happening in Kerala. When you talk about democracy and federalism, you have to practice democracy, not preach democracy in words.

Sir, I will now talk about Judiciary. Fair and independent judiciary is the hallmark of civilized society. It is a common knowledge that the law declared by the hon. Supreme Court is the law of the land under Article 141 of the Constitution. Article 50 is given a complete go-by, and in the recent past, we have been hearing that the highly-placed executives are making certain remarks against the Collegium system and the basic structure propounded by the Supreme Court. In fact, this basic structure is not propounded by the Supreme Court. As per the Kesavananda Bharati case, the basic structure is inbuilt in the Constitution. Some observations have been made about the judgements of the Supreme Court. We have to respect the Judiciary, but that is not being done. Article 50 is being violated. The Article on separation of powers is being completely violated by this Government.

Sir, as far as collegium system is concerned, twice we passed the NJAC Bill, and it was struck down by the Supreme Court by a recent judgment. If you have any objection to the judgment, you have to pass a new Bill which can be acceptable to the Supreme Court. But making comments on the collegium system is not good for democracy. We are also seeing that they are cherry-picking in the appointment of Judges. The Collegium is recommending a few names and the Union Government is cherry-picking a few names and passing the orders and keeping the other names in the cold storage without assigning any reason and without any authority to do that. This is very unacceptable in our democracy. This has to be replied by the Government.

Sir, one more upfront to the democracy is that all the schemes of the Union Government are named in Hindi. We are not able to understand the name or the intention

behind the schemes. With all this, I say the Union Government is not practising democracy and they are not governing like a democracy.

Sir, as far as corruption is concerned, at paragraph 9 in the President's Address, it is said that an effective system has also been put in place to end practice of favouritism and corruption in the Government machinery. Sir, you know and the people of India know that in 2018, this Government has almost neutralized the corruption law. There're a few provisions which were in vogue in 1988 Act. You have removed them and decriminalized most of the acts of corruption. Naturally, corruption will come down. Take Section 13(1) (d). There were two good provisions. Section 13(1) (d) has been completely wiped off. And now you say that the corruption has been brought down.

Yesterday, when Dr. Thambidurai was speaking, he said something about the cases which were ended up in acquittal. But it is only during the AIADMK Rule, not only Tamil Nadu, Kodanad was also looted. ...(*Interruptions*)...

DR. M. THAMBIDURAI (Tamil Nadu): Sir, a State subject...(*Interruptions*)...

SHRI N.R. ELANGO: Sir, it is not a State subject. ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please. ...(*Interruptions*)... We will see that. ...(*Interruptions*)... We will see that. ...(*Interruptions*)...

SHRI N.R. ELANGO: Sir, I have only two minutes.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please take your seat. *...(Interruptions)..* Please speak on the subject. *...(Interruptions)..* You know he will not be raising a State subject. Please. *...(Interruptions)...* We will see that.

SHRI N.R. ELANGO: Sir, in paragraph 2, the President's Address says about a *Bharat* which has no poverty and where the middle class is also prosperous. Everywhere they say '*Bharat*' when they are talking about the future. The discriminate use of the term '*Bharat*' vis-a-vis India stirs a speculation in the minds of the general public that a subtle design is envisaged by the Union to proclaim India in future as '*Bharat*' which will prove to be fatal for the existence of the unity and diversity of this great nation which is India.

Sir, there are Eklavya Model Schools. About 400 have been opened. We are very happy to know about these Eklavya Model Schools. I only hope and believe that this Government, by not providing job opportunities to those students, will not be taking the thumbs of those students like Dronacharya. They have to give job opportunities to them.

Sir, while coming to the issue of women empowerment, today, in Tamil Nadu, our hon. Chief Minister, Thiru Muthuvel Karunanidhi Stalin, is inaugurating the second phase of Pudhumai Penn Scheme which is otherwise known as a modern girl or a revolutionary girl. Moovalur Ramamirtham Ammaiyar Higher Education Assurance Scheme is in vogue in Tamil Nadu. The Government of Tamil Nadu has launched this scheme to enhance the enrolment ratio of girls from Government Schools to higher education institutions. Through the scheme, financial assistance of Rs.1,000 per month will be provided to the girls till their completion of UG degree or diploma or ITI or any other recognised course. This incentive amount under the scheme will be disbursed directly into the student accounts. This is called Dravidian model which is better than any other model. Such socially progressive schemes have not been introduced by the Union for better and prosperous lives of the girl children. Sir, just one more minute!

Yesterday, Shri Prakash Javadekar made an observation that the artefacts available in other countries will be brought back to India. I have a request for the Government. A detailed report on periodic excavation has been submitted to ASI on 30th of January, 2023. *(Time-bell rings)* Sir, one more minute please. I request the Government to publish it and make it a public document. Thank you, Sir.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, Shri Sanjay Singh; absent. Shri Manas Ranjan Mangaraj. ...(*Interruptions*)... Okay. Shri Niranjan Bishi.

SHRI NIRANJAN BISHI (Odisha): Hon. Deputy Chairman, Sir, I stand here to support the Motion of Thanks on the speech delivered by the hon. President of India, the first tribal woman President, who is the pride of tribals of India. However, on behalf of my party, the BJD, for the development of tribals of Odisha, I want to highlight some important issues concerned with my State of Odisha and demand attention of the Central Government on these important issues of Odisha.

First is the inclusion of 169 tribal groups or parts of such tribes pertaining to Odisha, as recommended by our hon. Chief Minister, Shri Naveen Patnaik. The left-out Scheduled Tribes are Saara, Tamadia, Bhanja Puran, Kalanga, Paharia, Jhodia,

Mankidia, Durua, Chuktia Bhunjia, Paudi Bhuyan, Amanatia, Beldar Gond, Budu Kandh, Boda Savara, Bhogta, Boi Gadaba, Bareng Jhodia Paraja, Cherenga Kolha, Chapua Kamar, etc. Such types of hundreds of tribal communities, which are proposed for inclusion, are actually subsets or phonetic variations of the name of the existing ST communities, but are still deprived of the benefits availed by STs with similar tribal characteristics residing in different parts of the State, who have since been notified as STs. Inclusion of the left-out communities will give them their much-needed recognition as Scheduled Tribes and ensure them social justice in accordance with the provisions of the Constitution of India.

Sir, second is, withdrawal of 18 per cent GST on Kendu leaves. Our hon. Chief Minister of Odisha, Shri Naveen Patnaik, has been demanding for withdrawal of 18 per cent GST on Kendu leaf in the greater interest of the State of Odisha as more than eight lakh poor tribal people associated with the trade are getting affected. The tribal people collect the leaves as part of their right defined under the Scheduled Tribes and Other Traditional Forest Dwellers (Recognition of Forest Rights) Act, 2006. Imposition of 18 per cent GST on Kendu leaves is adversely affecting the trade. This, in turn, affects the livelihoods of Kendu leave pluckers, binders and seasonal workers, and the implementation of the social security and welfare schemes for them. In the interest of the livelihood of the community, it is urged upon the Government to withdraw the imposition of GST on Kendu leaves for the greater interest of the State of Odisha.

Third is, inclusion of tribal languages in the Eighth Schedule of the Constitution of India. Odisha has the third largest tribal population in the country. As per Census 2011, 40 per cent of the population in Odisha belongs to Scheduled Tribe and Scheduled Caste communities. The State is home to 13 Particularly Vulnerable Tribal Groups (PVTGs). Language remains a huge obstacle for the attainment of education for tribal children. Learning should necessarily also consider the pertinence of each medium of instruction for different linguistic and cultural backgrounds. The Government should focus on developing multilingual pedagogic instruments, teaching-learning materials in the local dialect considering the tribal socio-cultural surrounding. Odisha's languages continue to be disregarded. We demand that the tribal languages like Ho, Bhumij and Mundari be included in the Eighth Schedule of the Constitution of India. Fourthly, the Tribal Sub Plan and KBK project should be restored and Budget provision should be made for development of tribals of Odisha.

सर, मैं केन्द्र सरकार से यह भी कहूँगा कि हमारी जो महामहिम राष्ट्रपति जी हैं, वे हमारे ओडिशा की हैं। वे हमारे आदिवासी भारत देश का गर्व और गौरव हैं और सारी दुनिया के आदिवासियों का गर्व और गौरव हैं। हमारे ऑनरेबल चीफ मिनिस्टर श्री नवीन पटनायक जी ने सपोर्ट किया। भारत की आजादी के अमृत महोत्सव के काल में हमारे ज्वाइंट सेशन में उन्होंने जो फर्स्ट भाषण दिया, अभिभाषण दिया, वह सारी दुनिया के लिए एक बहुत बड़े गर्व और गौरव की बात है और सारे विश्व के 50 करोड़ आदिवासियों के लिए बहुत बड़े गौरव की बात है। केन्द्र सरकार हमारे आदिवासियों के विकास के लिए, उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए ध्यान दे। सारे देश में हमारे आदिवासी शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़े हैं। आदिवासियों का परसेंटेज ऑफ पॉपुलेशन 8.5 है, लेकिन सेंट्रल गवर्नमेंट की जॉब्स में उनको 7.5 परसेंट रिज़र्वेशन मिलती है, तो उसको भी 8.5 परसेंट करना चाहिए। जैसे हमारे नवीन पटनायक जी ने ओडिशा में 22.5 परसेंट एजुकेशन में रिज़र्वेशन किया है, एम्प्लायॅमेंट में 23.5 परसेंट रिज़र्वेशन किया है, महिलाओं के लिए 50 परसेंट रिज़र्वेशन किया है, इलेक्टिव पोस्ट्स में भी 23.5 परसेंट रिज़र्वेशन फॉर शेड्यूल्ड ट्राइब्स किया है, वैसे ही सेंट्रल गवर्नमेंट में भी जो मिनिस्ट्री ऑफ ट्राइबल अफेयर्स है, ट्राइबल के अफेयर्स के लिए और ट्राइबल के डेवलपमेंट के लिए जो सारी डेवलपमेंटल स्कीम्स हैं, जैसे केबीके स्कीम थी, ट्राइबल सब-प्लान था, शेड्यूल्ड कास्ट सब-प्लान था, उन सबको रेस्टोर करेगी, तो शेड्यूल्ड ट्राइब और शेड्यूल्ड कास्ट कम्युनिटी का डेवलपमेंट होगा।

I would conclude by saying that fruits of development are to be shared equitably but the focus should be on weaker sections of the society, particularly, Scheduled Tribes and Scheduled Castes, on economic criteria. Thank you, Sir.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Thank you. Dr. K. Keshava Rao, not present. Prof. Manoj Kumar Jha.

प्रो. मनोज कुमार झा (बिहार): उपसभापति महोदय, आपका बहुत-बहुत शुक्रिया। जया जी यहाँ हैं।

श्री उपसभापति : प्लीज़, प्लीज़।

प्रो. मनोज कुमार झा: नहीं, सर। एक संदर्भ था, इसलिए मैंने कहा। मैं आप ही से कह रहा हूँ कि एक फिल्म "कभी-कभी" थी। उसमें एक साहिर की बड़ी अच्छी लाइन थी - *"कभी-कभी मेरे दिल में, खयाल आता है।"* इसमें बाकी जो आगे है, वह मैं नहीं कहूँगा, क्योंकि संदर्भ दूसरा है। लेकिन कभी-कभी मेरे दिल में यह खयाल आता है कि राजनीतिक जिन्दगी में अगर हमारी महामहिम राष्ट्रपति खुद से अपनी स्पीच, अभिभाषण लिखने लगें, तो शायद यह स्तुतिगान नहीं होता, जो इतने पन्नों का मिला। अब यह कब होगा, सर? यह हमेशा से होता रहा होगा, लेकिन कई चीज़ें जो हमेशा से होती

रही हैं, वे अच्छी हों, यह आवश्यक नहीं है। क्यों, सर? क्योंकि जमीन की हकीक़त और अभिभाषण के तथ्य मेल नहीं खाते। यह चिन्ता का विषय है।

मसलन मैं एक छोटी सी चीज़ से शुरुआत करता हूँ। पैरा 2 कहता है - स्थिर सरकार। समाज अस्थिर है, तो स्थिर सरकार का क्या करें, उस ऑर्केस्ट्रा में जाकर हम भी गाना गाएँ! समाज में अस्थिरता के लक्षण हैं। जहाँ चले जाइए, क्षेत्रीय आधार पर, धर्म के आधार पर, जातिगत विषमता के आधार पर इतनी अस्थिरता है और हम स्थिर सरकार का महिमामंडन करें! सर, स्थिर सरकार वह होती है, जो समाज में अस्थिरता पैदा न होने दे। यहाँ उल्टा मामला है। यह चिन्ता का विषय है। इसकी अभिव्यक्ति माननीय राष्ट्रपति महोदया के अभिभाषण में नहीं होती है।

(**सभापति महोदय** *पीठासीन हुए।*)

सभापति महोदय, धारा 370 का जिक्र आया। मैं थोड़ा चाहता हूँ कि धारा 370 के जिक्र को एक व्यापक कैनवास पर ले आऊँ। आजकल ऑथेंटिकेशन की बात बहुत होती है। सर, मैं पूरी की पूरी किताब लेकर आया हूँ। अनुराधा भसीन जी ने "द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ कश्मीर आफ्टर आर्टिकल 370" लिखी है। वे 'कश्मीर टाइम्स' की एडिटर रही हैं। सर, लगातार खबरें आ रही हैं। आप कहते हैं कि नॉर्मेल्सी है। सर, दिल्ली के दरबार से नॉर्मेल्सी बोलना और कश्मीर में जाकर उस नॉर्मेल्सी को महसूस करना, इसमें बहुत बड़ा फर्क है। महीनों से वहाँ बुलडोज़र चलाए जा रहे हैं। कहा जा रहा है कि सरकारी जमीन से अतिक्रमण हटाया जा रहा है, लेकिन लोगों के घर तोड़े जा रहे हैं, बिना नोटिस के। माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से बार-बार कहता हूँ कि कश्मीर को जमीन का टुकड़ा न समझा जाए, वहाँ जिन्दा लोग बसते हैं। जब तक आप कश्मीरियों का दिल नहीं जीतेंगे, तब तक कश्मीर का दिल कभी नहीं जीत पाएँगे, चाहे आप लाख कोशिश कर लें।

सर, भ्रष्टाचार के बारे में भी कहा गया। मैं तो यह सोच कर आया था कि मैं ऐसी कोई बात ही नहीं बोलूँगा। अचानक आपको देखा और आप आए, आपने बीच में प्रवेश किया, तो एक कहानी याद आयी। एक राजा को तोतों का बड़ा शौक था। वे कारोबारी तोते रखते थे।

श्री सभापतिः आप मुझे यह बताइए कि मुझे देखते ही आपको भ्रष्टाचार की याद क्यों आ गई? आप इसको क्लैरिफाई कीजिए।

प्रो. मनोज कुमार झाः जी नहीं, सर, भ्रष्टाचार की नहीं, बल्कि राजा की याद आ गई।

MR. CHAIRMAN: We have a distinguished Member here from the same fraternity.

DR. ABHISHEK MANU SINGHVI (West Bengal): Sir, there is no *mens rea* here.

प्रो. मनोज कुमार झाः सर, राजा की याद आई। उसके पास कई तोते थे, लेकिन अचानक उसका स्नेह एक खास तोते के लिए काफी हो गया। वह गौतमी प्रवृत्ति का तोता था। सबको चाँदी और स्टील की कटोरी मिली और उस तोते को कनक की कटोरी मिली। राजा तोते से बहुत सलाह लिया करते थे और तोता सलाह भी देता था। वह भूत भी ठीक करता था और भविष्य की बात भी करता था। एक दिन उस तोते के बारे में पड़ोस से कोई अनुसंधान आ गया। उस अनुसंधान के बाद तोता थोड़ा बीमार रहने लगा। अब उस बीमार तोते की वजह से राजा ने भी खाना-पीना छोड़ दिया। लेकिन उस तोते का एक और भाई था, जो विनोदी स्वभाव का था। अब उसने फूल नाम की एक कंपनी और एक 'हां बैंक' हुआ करता था। 'हां बैंक' के 48,000 करोड़ रुपए उस तोते ने 1,303 करोड़ में केमैन आइलैंड में दे दिए। यह प्राचीन काल की बात है। इस तरह से तोता और राजा की कहानी में पिक्चर अभी बाकी है, शेष अगले अंक में, संभवतः बजट में।

सर, राष्ट्रपति के अभिभाषण पर विशुद्ध राजनीतिकरण होता है और राजनीतिकरण होना भी चाहिए, लेकिन 2018 से लेकर अब तक, जब आप अभिभाषण में कंटेंट ऐनालिसिस करें, तो 43 बार 2014 का जिक्र होता है। सर, इतना तो 1947 का भी जिक्र नहीं होता है, जब हम आजाद हुए थे! यह कौन-से इतिहास की समझ विकसित कर रहे हैं कि 2014 से पूर्व इस देश में अंधेरा था और अगर 2024 में कुछ और हो गया, तो देश में सन्नाटा हो जाएगा! सर, शून्य और सन्नाटे के बीच में ...(**व्यवधान**)... माननीय सभापति महोदय, टॉलरेंस - 1952 में बाबू राजेन्द्र प्रसाद...(**व्यवधान**)...

श्री सभापतिः एक बड़ा दिलचस्प किस्सा है कि 2014 की खासियत क्या है। I was elected to Parliament in 1989. One second. Just be a little decorous. ...(*Interruptions*)... Be a little decorous. ...(*Interruptions*)... These snipe-shots should not be there. They don't give any dignity to anyone in the House. So, we started a decade in the 90s. So, we used to have MPs and Ex-MPs. But, there was a new breed during 90s, axed MPs., axed. They couldn't complete their term. In the 9th Lok Sabha, I was there. Then, thereafter, we had that situation when we had Inder Kumar Gujral*ji*, H.D. Deve Gowda*ji* and also Atal Bihari Vajpayee*ji* for two terms. So, that particular phase of 30 years where the country had coalition governance came to an end in 2014. That was the reason.

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, now, we are asking why MPs, not axed.

MR. CHAIRMAN: I said axed.

SHRI JAIRAM RAMESH: I am not saying axed. I am saying why?

प्रो. मनोज कुमार झाः माननीय सभापति महोदय, वैसे भी हम लोगों का अच्छा वक्त नहीं चल रहा है, इसलिए मेरे वक्त में दो मिनट का इजाफा कर दीजिएगा। संभवतः हमारे एक और स्पीकर होंगे।

श्री सभापतिः उनका कट जाएगा।

प्रो. मनोज कुमार झाः सर, प्लीज़।

सर, मैं यह क्यों कह रहा था? आप मेरे भावार्थ को नहीं समझे। इतिहास बोध 2014 से नहीं होगा। फिर क्या कहेंगे 1947 में? हमने आजादी की पहली वर्षगांठ 1948 में मनाई थी, तब तक हम बापू को खो चुके थे। हाँ, आज 75वें वर्ष में, इस तथाकथित अमृत काल में मैं यह देख रहा हूँ कि गाँधी जी की हत्या करने वालों का महिमामंडन हो जाता है - यह भी है। इसलिए 2014 चिंता का विषय था और कोई नहीं। प्रधान मंत्री डेमोक्रैटिकली इलेक्टेड हैं, कौन विरोध करेगा, लेकिन डेमोक्रेसी में कई एनॉमलीज़ आ रही हैं, विसंगतियाँ आ रही हैं, उनका जिक्र न करूँ, तो पार्लियामेंट फिर किस बात के लिए है! सर, राजेन्द्र बाबू तक टॉलरेंस की बड़ी बात हुई। उनसे लेकर सहिष्णुता की बात हुई। अब अभिभाषण से सहिष्णुता शब्द गायब है। क्या हमें सहिष्णुता नहीं चाहिए? क्या हम नहीं देख रहे हैं कि हमारे समाज में, कौमों के बीच में कंटीली दीवारें लगाई जा रही हैं? बुल्डोजर उत्पीड़न का, माइनॉरिटी राइट्स के हनन का प्रतीक बनता जा रहा है। सर, ऐसे दौर में टॉलरेंस शब्द का बार-बार बयान होना आवश्यक था। टॉलरेंस शब्द को दूर करके, you are appearing, basically, as an intolerant Government which is not in the grain of Indian democracy.

सर, 'अग्निवीर' का ज़िक्र हुआ। 'अग्निवीर' के बारे में कभी युवाओं से पूछिए कि तुम पूरी जिंदगी जो तैयारी कर रहे हो, वह सिर्फ चार वर्ष के लिए है। सर, मैं नौकरी में हूँ। हाँ, मैं नौकरी में हूँ, क्योंकि सामाजिक सुरक्षा पेंशन की गारंटी है। यह इस देश में कौन-सा निज़ाम गढ़ रहे हैं? मैं ज़िक्र नहीं करना चाहता हूँ कि यह क्या है। यह तो लॉलीपॉप भी नहीं है। यह जहरीला फल है, जो समाज में है। आप कभी उन युवाओं से पूछिएगा कि वे इस चार वर्ष वाले आइडिया के बारे में क्या सोचते हैं।

सर, मैं देख रहा हूँ कि फॉरेन पॉलिसी पर भी अभिभाषण लगातार चुप-सा होता जा रहा है। फॉरेन पॉलिसी पर बात नहीं होती है। हमारी राष्ट्रपति जी सेना की सुप्रीम कमांडर हैं। क्या सेना की सुप्रीम कमांडर को यह अंदेशा नहीं है कि चाइना के बॉर्डर पर हालात उचित नहीं हैं? मैं माननीय रक्षा मंत्री के बयानों को सुनता हूँ, तो चिंता होती है, लेकिन सरकार की तरफ से डिनायल है। एक पड़ोसी के लिए तो लाल आँख निकाल देते हैं और दूसरे पड़ोसी के नाम पर आप चुप हो जाते हैं।

MR. CHAIRMAN: Hon. Member, security is a very sensitive subject and you are a Professor. We expect such a subject to be taken up very seriously and let it not be usual discourse. Go ahead.

PROF. MANOJ KUMAR JHA: Sir, I am a student of Political Science and History. In 1962, when India was at war with China, we had debated that in this Parliament. Sir, the definition of national security is not the core prerogative of the ruling party, we are equally concerned. मैं तो कहूँगा कि तराजू उठा लीजिए, आविष्कार करवा लीजिए कि किसके अंदर कितना पैट्रिऑटिज़्म है। इससे पता चल जाएगा कि हकीकत क्या है और फसाना-अफसाना क्या है। मैं यही कहना चाहता था।

सर, बीते वर्षों में फिलिस्तीन का ज़िक्र लगातार हुआ करता था। हमारे सारे प्रेज़िडेंट वाजपेयी जी के टाइम तक, लेकिन फिर फिलिस्तीन पर चुप हो गए। इसकी क्या वजह है? क्या हम अपनी विदेश नीति में यह ताकत पैदा नहीं कर सकते कि oppressed community anywhere, we shall have our concern. सर, हम कितना बदल गए हैं! मैं जानता हूँ कि हिन्दुस्तान के नजरिए से देखिए, लेकिन हिन्दुस्तान की नजर मत बदलवाइए। जो 1947 में नींव रखी गई थी, उस नींव को मत हिलाइए। उस नींव को हिला दीजिएगा, तो पार्लियामेंट की बिल्डिंग भी ढह-ढहा करके गिर जाएगी। सर, यह चिंता का विषय है।

सर, ज्यूडिशियरी के बारे में भी ज़िक्र था। मैं देख रहा हूँ कि आजकल सरकार की ओर से दो चम्मच सुबह, दो चम्मच शाम के हिसाब से बयान आते रहते हैं। हम सब जानते हैं कि ज्यूडिशियरी में रिप्रेज़ेंटेशन होना चाहिए। हमारा राष्ट्रीय जनता दल और हमारे नेता लगातार कहते रहे हैं कि जब तक वंचित समाज, एससी-एसटी, ओबीसी का प्रतिनिधित्व नहीं होगा, तब तक हमसे न्यायपालिका और न्याय दूर रहेंगे। सर, अब मामला बेसिक स्ट्रक्चर पर आ गया है और बयान ऐसे आ रहे हैं, जिन्हें न मौलिक की समझ, न संरचना की समझ! मैं किसी और को नहीं कहूँगा। आप आडवाणी जी को देख लीजिए, उन्हें पढ़ लीजिए, आपको पता चल जाएगा। माननीय प्रेज़िडेंट साहिबा के बयान में एससी-एसटी, ओबीसी की बहुत जातिगत बातें हुईं। सर, पूरे देश में जातिगत जनगणना को लेकर एक लहर चल रही है। अब सत्तापक्ष के लोग भी बोलने लगे हैं। ...(**समय की घंटी**)... सर, मैं बारहवें मिनट में खत्म कर दूँगा। हालांकि, मैं माफी के साथ कहना चाहता हूँ कि आपको दो मिनट जोड़ने भी थे। मैं सिर्फ यह कहना चाहूँगा कि जातिगत जनगणना से सरकार का कोई नुकसान नहीं होगा। मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि थोड़ा फायदा ही होगा। हकीकत देखिए कि कौन कहाँ खड़ा है, इसलिए हम बिहार में सर्वेक्षण करवा रहे हैं। प्रेरणा लीजिए, ताकि जो वंचित रहे हैं... A blast from the past, अकसर आता है - नाम बदलो, नाम बदलो। पार्लियामेंट के बाहर डेली कोई पूछता है, आज फलां का नाम बदल रहा है। मैंने कहा यार, पीसमील में क्यों करते हो, खुदरा-खुदरा कर रहे हो, थोक में करो। अभी शायद मंत्रिमंडल का विस्तार होगा। एक मंत्रालय बनाओ - नाम बदलो मंत्रालय। एक साथ बैठकर एक बार में हिसाब कर दो। साहब, अगर नाम बदलने से इतिहास बदलता तो कुछ और बात होती, लेकिन नाम बदलने वाले खुद बदल गए, इतिहास नहीं बदला। इस मुल्क में हड़प्पा की सभ्यता से लेकर आज तक जो कुछ हुआ है, वह हमारी धमनियों में है, किसी को कमतर मत दिखाइए और रही बात मुगलों की, आपके अंदर तो एक बहुत बड़ा मुगल है। वह भी बिल्डिंग बनाने का शौकीन था, आप भी बहुत शौकीन हैं। Anyway, Sir.

सर, अब मैं आपके समक्ष आखिरी टिप्पणी करूँगा। मैं बिना नाम बताए यह बता रहा हूँ।

"हम सबल केन्द्र चाहते हैं, लेकिन केन्द्र की सबलता संविधान से आती है, किसी दल के सत्ता पर एकाधिकार से नहीं आती है। यदि केन्द्र का व्यवहार न्यायपूर्ण नहीं रहा, यदि दलगत आधार पर प्रदेशों के साथ भेदभाव या पक्षपात किया गया, तो प्रदेशों में केन्द्र-विरोधी भावनाएँ जन्म लेंगी।"

मैं नहीं सर, अटल जी। यह उनका 1974 का भाषण है। **...(समय की घंटी)...** सर, मैं बस अब आखिरी बात कहता हूँ।

"कुछ मित्रों ने इसे, यानी इस बहस को अनावश्यक कर्मकांड कहा। मुझे तो यह सारा दृश्य प्रहसन सा प्रतीत होता है। राष्ट्रपति का अभिभाषण ही नहीं, इस पर होने वाली यह चर्चा, चर्चा करने वाला यह सदन या संसद कुछ अर्थों में बेमानी, व्यर्थ, जनजीवन से कटा हुआ..."

मैं नहीं, अटल जी। यह हमारे लिए एक आईना है।

श्री सभापतिः श्री...

प्रो. मनोज कुमार झाः सर, आखिर में मुझे 'जय हिन्द' तो बोलने दीजिए! मुझे 'जय हिन्द' बोल लेने दीजिए। मेरे दो मिनट आपको जोड़ने भी हैं। सर, मैं 'जय हिन्द' बोलने से पहले सिर्फ यह कहूँगा कि ये अवसर होते हैं। सदन में जितने लोग हैं, मैं उन सबका शुक्रिया अदा करता हूँ। सर, जब लोकतंत्र नहीं बचेगा और सिर्फ तंत्र बच गया तो फिर कुछ बचेगा नहीं। जय हिन्द! सर, आपका बहुत-बहुत शुक्रिया।

श्री सभापतिः आपके मन में कभी-कभी जो खयाल आता है, वह बाकी आप मेरे चैम्बर में बताइए।

प्रो. मनोज कुमार झा : जी सर।

MR. CHAIRMAN: Now, Shri Bikash Ranjan Bhattacharyya.

SHRI BIKASH RANJAN BHATTACHARYYA (West Bengal): Thank you, Chairman, Sir, for giving me this opportunity to deliberate on the address of the Hon. President of India. I offer my thanks to the Hon. President of India but I really cannot offer any thanks or give any credence to the speech which she has made. If you kindly go through the entire speech and the lines in between, we find this is not a speech which reflects the Indian constitutional ethos or constitutional morality. It really reflects the idea of Hinduism; it reflects the basic idea of BJP which wants to really establish a Hindu Rashtra following

the RSS guideline, without implementing the Indian constitutional goal. This is based on misrepresentation of ideas and facts. You see, it is said that the Rajpath is now the Kartavya Path because Rajpath is the symbol of colonialism. I don't know wherefrom do they get this fact. During the colonial period, it was Kingsway and Queensway. That had been changed to Janpath and Rajpath. 'Raj' is not the colonial word. 'Raj' is a concept which is available in the Indian cultural history. Now, you want to take a false credit and try to pose it as anti-colonial, though your history to fight the colonial Government is very poor. Now, again you find throughout the speech, there are references of many scholars. But, being the country of multicultural heritage; we have the heritage of different ideas. But this speech only contains the ideas of Hindu leaders, Hindu seers. What do you mean to communicate? Do you want to keep the country united on the constitutional principle? And, your intention is to divide the country on the religious line which is the practice, unfortunately, now being followed by the Government. You see, you have a false claim. I don't know who had advised the Hon. President to make this statement on triple talaq! Triple *talaq* was the contribution of the Hon. Supreme Court of India. Hon. Supreme Court of India had declared this unconstitutional. The Government doesn't have any credit to this. They were bound to make a law after the declaration of the law made by the hon. Supreme Court. But, here it is said, 'the Government has the credit from abrogation of Article 370 to triple *talaq*. Why do you want to communicate this false information to the country through the President of India?

Now you say that we have poverty eradication. Kindly see the Constitution which wants the scientific temper. Here, you are really trying to communicate the most unauthentic, unscientific idea. Poverty does bring illness. It says, 'poverty is illness!' For instance, it says, 'the major cause of poverty is illness.' Is it right? Is it not illness because of poverty? You want to put the cart before the horse! You don't want to eradicate poverty but you want to eradicate illness. This is a wrong concept by which you can't neither eradicate poverty nor take care of illness. In the name of taking care of illness, you want to take credit for the Ayushmaan Bharat. What has the Ayushmaan Bharat done? You have claimed that 80 crore people have to be fed with five kilogram of rice. Does it reflect the confidence in the country's economy? Or, does it reflect your weakness? You want to take credit out of nothing. The President of India, unfortunately, was made to read the statement.

Kindly see how you have destroyed the country in its eco-balance. You claim that our heritage connects to our roots with projects like Ayodhya Dham and so many

Dhams. But you don't mention that Joshimath is sinking because of your unwise decision to construct roads for the purpose of pilgrimage and make them picnic spots. This sinking of Joshimath is another reflection of your destroying the eco-balance of the country. This eco-balance of the country has to be maintained while you are making constructions, ecobalance can not be destroyed for the purpose of Hindu pilgrimage.

Again you say that it is a slave mentality. If the Rajpath is a slave mentality, then what would be your discharge of duty to the people of the country? You have to discharge the Raj Dharma which you don't do. Kartavya Path means that which you have decided to do. That is reflected through the speeches like Hindu nationalism. Against that, we have been fighting and we are inviting all the people to get together.

Sir, the strength of the Government lies in its power to face the Opposition. If you are an honest Government, you should not get scared of any investigation. Now the entire House is demanding a JPC to have an investigation in the affairs of a particular corporate house. Why do you get scared of it? Sir, will the Chair direct the Treasury Benches that if it is honest, it should go in for a JPC? Let there be an investigation and let the Government face it. Without this, the President's Address would take us to nowhere.

SHRI ANEEL PRASAD HEGDE (Bihar): Mr. Chairman, Sir, I rise to speak on the Motion of Thanks on the President's Address. First of all, on certain issues, I want to say that the Government's stated policies and actual actions are in contradiction to each other, sometimes to the point of serious conflict and not just divergence. जनहित के काम के लिए सरकार की प्रशंसा होनी चाहिए, हम वह करेंगे। देश में कोई चीज़ सही नहीं चल रही हो तो उसको सुधारने के लिए सुझाव भी देंगे। President's Address says, *'जल जीवन मिशन के तहत तीन वर्षों में करीब 11 करोड़ परिवार पाइप्ड वाटर सप्लाई से जुड़ चुके हैं।'* इस बात के लिए सरकार बधाई की पात्र है, मैं धन्यवाद देता हूं। वर्ष 2015 में बिहार में माननीय मुख्य मंत्री नीतीश कुमार जी के नेतृत्व में जो महागठबंधन की सरकार आयी थी, उस समय सात निश्चय योजना के अंतर्गत 'हर घर नल से जल' योजना वर्ष 2015 में लागू हुई। इस योजना को आदरणीय प्रधान मंत्री जी ने राष्ट्रीय स्तर पर एडॉप्ट किया, यह प्रशंसनीय बात है, लेकिन कुछ चीज़ों में विरोधाभास है। राष्ट्रपति के अभिभाषण में बताया गया कि मेरी सरकार के प्रयासों से खादी की बिक्री चार गुना बढ़ी है। सभापति महोदय, आप जानते हैं, खादी का मतलब handspun and hand woven fabric होता है। सभापति महोदय, हाथ से कताई किए हुए सूत से बुनकर जो कपड़ा बुनते हैं, वह खादी होता है। देश में सरकार के पांच स्लाइवर प्लांट्स हैं - पहला बिहार के हाजीपुर में है, दूसरा यू.पी. के रायबरेली में है, तीसरा मध्य प्रदेश के सीहोर में है, चौथा कर्णाटक के चित्रदुर्ग में है और पांचवां केरल

के त्रिचूर में है। केवीआईसी के अनुसार पूनी और टेप्स सूत बनाने के लिए इसी स्लाइवर प्लांट से खरीदना जरूरी है। यहां पर यह ओपन मार्किट से ज्यादा महंगा है। कत्तिन, बुनकर और इन लोगों को काम देने वाली जो स्थानीय संस्थाएं हैं, उनमें तीन में से एक नहीं होने पर खादी कपड़ा नहीं बन सकता है। देश भर के कई प्रदेशों में इन तीन लोगों की हालत बहुत ही खराब है। कत्तिन लोगों को एक गुंडी कताई करने के लिए 7.50 रुपये दिए जाते हैं। विंटर सेशन में मेरे स्टार्ड क्वेश्चन के उत्तर के लिए सरकार ने इस बात को माना है। कताई के लिए कत्तिन को एक दिन में 10 से 12 गुंडी दी जाती हैं। इसका मतलब यह है कि अधिकतम 75 रुपये से 90 रुपये आमदनी है, लेकिन साल में अधिकांश कत्तिनों को मुश्किल से 100 से 150 दिन ही काम मिलता है। सर, बुनकर की आमदनी भी न्यूनतम वेतन से कम है। इसका मतलब यह है कि देश में अधिकांश कत्तिनों की आमदनी एक दिन में 40 रुपये से कम है। अधिकांश खादी संस्थाओं के पास पूनी और टेप्स खरीदने के लिए पैसे नहीं है, वर्किंग कैपिटल नहीं है। दिन-प्रतिदिन कत्तिन और बुनकर की संख्या कम होती जा रही है। जब कत्तिन और बुनकर कम होते जा रहे हैं, तो मुझे यह समझ में नहीं आ रहा है कि प्रोडक्शन चार गुना कैसे बढ़ा है? ऐसी हालत में दो-चार साल बाद कत्तिन और बुनकर दोनों नहीं रहेंगे, तब खादी कपड़ा किस चीज़ को कहेंगे? In the near future when spinners and weavers shall not be available, then, what fabric shall we call Khadi? दूसरी बात यह है कि केवीआईसी द्वारा एमएमडीए, जो संशोधित बिक्री विपणन सहायता दी जाती है, वह देश की अधिकांश जगहों में कत्तिन, बुनकर और खादी संस्थाओं को जनवरी, 2002 से दिसंबर, 2022 तक नहीं मिला है। Sir, as I said earlier, the Government's stated policies and actual actions are in contradiction to each other. To illustrate my point, I want to give one more example. The President's Address says, *"आज भारत में प्रगति के साथ प्रकृति का भी संरक्षण करने वाली सरकार है।"* While the Government is talking about promotion of organic and natural farming on the one hand and has indeed set aside funds too like never before, it has also approved genetically modified mustard which is herbicide tolerant. Whatever clever packaging the Government might want to give to genetically modified mustard, by denying that it is herbicide tolerant crop, the reality is that if farmers spray glufosinate on this GM mustard crop, it will tolerate the deadly chemical. This will increase toxic chemical usage in our farms and residues will increase in our food. This will affect the lives and livelihoods of farmers, agricultural workers, bee-keepers, honey exporters as well as organic farmers. Sir, in the year 2009, when the then Government gave approval to BT brinjal, then my party's Chief Minister, Shri Nitish Kumar, realizing the environmental damage it is going to cause and it is going to contaminate the *desi* seeds also, wrote to the then Environment Minister, Shri Jairam Ramesh. I congratulate Shri Jairam Ramesh that he listened to the Opposition. He immediately held seven public hearings in different parts of

the country and he also realized the harm. Incidentally, tomorrow is 9th February. On the 9th of February, 2010, Shri Jairam Ramesh ordered a moratorium on this.

2.00 P.M.

Sir, he listened to the opposition. And, Sir, the Government has also not banned many bannable deadly pesticides in the country. It was way back in 2020 that the Registration Committee, under the Insecticides Act, 1968, recommended 27 very hazardous pesticides be banned in India. But, there has been no action so far on these and other deadly chemicals. With each passing day of in-action, our environment and food chain is unnecessarily being subjected to hazards of these chemicals, while such pesticides are also causing acute poisoning and other toxicity to citizens.

Sir, chemically-propped up food fortification schemes are receiving massive support and promotion. There has been no initiative to support conservation and distribution of traditional varieties of seeds which are not only nutritious but will provide adaptation capacity in the age of climate change and support the natural farming initiatives. So, I urge the Government to look into this matter too.

Sir, I have pointed out the contradictions. On the question of GM crops, Shri Jairam Ramesh and the UPA listened to Shri Nitish Kumar, opposition and the civil society. Today, on this issue, I urge the Government to listen to, at least, your own organizations — the Bharatiya Kisan Sangh and Swadeshi Jagran Manch — which have protested at Ram Leela Maidan on this issue during the Winter Session.

Sir, the process of elections in Nagaland is going on. In 2018 elections, the present ruling Government of which BJP is a partner had said 'the election is for solution.' But, so far, solution has not come.

Thank you.

MR. CHAIRMAN: Shri Gulam Ali. It is his maiden speech.

श्री गुलाम अली (नामनिर्देशित): चेयरमैन सर, मैं जम्मू-कश्मीर से आता हूं और जम्मू-कश्मीर के बारे में और देश के बारे में यहां बहुत कुछ डिस्कस हुआ है। मैं देश की प्रेज़िडेंट द्रौपदी मुर्मू जी के मोशन ऑफ थैंक्स पर बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। मैं सीनियर ऑनरेबल मेम्बर्स की स्पीचेज़ बहुत ध्यान से सुनता हूं। कल मुझे दुख हुआ कि प्रेज़िडेंट के लिए भी कुछ अल्फाज़ अच्छे इस्तेमाल नहीं हुए। मुझे दुख हुआ, क्योंकि वही कम्युनिटी जानती है, जिस कम्युनिटी से, जिस ट्राइब से वे हैं, they can

feel for their community और वे एक फ़ख महसूस करते हैं। देश तभी चल पाता है, जब देश की सुरक्षा, देश की सिक्योरिटी मजबूत हो और उन हाथों में हो, जो एक कन्विक्शन रखते हैं और मजबूती के साथ इस अर्थ पर, इस भारत को एक मजबूत ताकत बनाने की नीयत रखते हैं। पिछले 30 सालों में कई बार कश्मीर में चाहे पाकिस्तान की तरफ से क्रॉस-बॉर्डर टेररिज़्म हो या हमारी सिक्योरिटी फोर्सेज़ को शहीद किया गया हो या सिविलियन्स का कत्ल हुआ हो, लेकिन हमारे देश की जो लीडरशिप थी, उसका खून नहीं उबलता था।

आपने पुलवामा अटैक के समय देखा होगा कि हमने पाकिस्तान के अंदर घुसकर अटैक किया। हमारे देश का जो वजूद है और जो सिक्योरिटी फोर्स है, उसने उसको करारा जवाब दिया। प्रेज़िडेंट एड्रेस में एलओसी और एलएसी की बात हुई। हमारी एलओसी भी क्रिएटेड है। जिनकी सत्ता इस देश में थी, उन्होंने कुछ चंद फैमिलीज़ को सत्ता सौंपकर, यूनिलैट्रली सीज़फायर करके पाकिस्तान को वह इलाका दे दिया। वह आज भी हमारे लिए नासूर बना हुआ है। इतना ही नहीं, जम्मू-कश्मीर में जो हमारे अपने लोग थे, महाराजा हरि सिंह जी थे, वे एक रिफॉर्मर किंग माने गये हैं, जिन्होंने फोर्स्ड लेबर को खत्म किया, अनटचेबिलिटी को खत्म किया, उनको 70 साल तक इज्जत नहीं दी गई। जब नरेन्द्र मोदी जी की रहनुमाई में सरकार बनी, तब महाराजा हरि सिंह जी का स्टैच्यू जम्मू में लगा। कश्मीर का गरीब कश्मीरी हो या वहां की तीसरी बड़ी गुर्जर कम्युनिटी हो, इन्होंने इंटेंशनली पीओके से यूनिलैट्रल सीज़फायर किया था कि अगर यह कम्युनिटी इधर रहेगी, तो कुछ फैमिलीज़ को, जिनको लॉंच किया था, उनकी कभी हुकूमत नहीं बन पायेगी।

पहली बार देश के वज़ीर-ए-आज़म नरेन्द्र मोदी जी, तब वे चीफ मिनिस्टर थे, उन्होंने ललकार रैली की, जम्मू में एक बहुत बड़ी जन सैलाब रैली की, उसमें हज़ारों की तादाद में मुस्लिम समाज ने शिरकत की। वहां उन्होंने कमिटमेंट किया था कि जिन कम्युनिटीज़ को 70 साल तक पोलिटिकली एम्पावर नहीं किया गया, अगर मैं देश का वज़ीर-ए-आज़म बनूंगा, तो मैं उनको पोलिटिकली एम्पावर करूंगा। नरेन्द्र मोदी जी ने देश का वज़ीर-ए-आज़म बनते ही वहां पंचायत में रिज़र्वेशन दिया।

माननीय सभापति जी, वहां ब्लॉक डेवलपमेंट काउंसिल्स कॉंसेप्ट ही नहीं था, वहां पर ब्लॉक डेवलपमेंट काउंसिल्स बनाईं। वे लोग बड़ी-बड़ी बातें करते थे कि 73वॉं अमेंडमेंट हुआ, 74वॉं अमेंडमेंट हुआ, लेकिन प्रैक्टिकल में कुछ नहीं किया। इस सरकार ने वहां डीडीसी में पूरा रिज़र्वेशन दिया, जिसके बारे में लोगों ने सोचा तक नहीं था। जिन जिलों में लोग डीडीसी के चेयरमैन बने हैं, यह नरेन्द्र मोदी जी के प्रधान मंत्री बनने पर ही मुमकिन हुआ है। आज क्रॉस-बार्डर टेररिज़्म लास्ट स्टेज में है, बौखलाहट में है। मिलिटेंट कभी स्टिकी बम लेकर आता है, कभी टनल निकालता है, कभी ड्रोन से हमारे इलाके में हथियार फैंकता है। लेकिन आज मिलिटेंट की, टेररिस्ट की जो उम्र है - जो क्वेश्चन उठाते हैं कि वहॉं नॉर्मेल्सी नहीं है, जिनकी आँखों से दिखता नहीं है, आप टेररिस्ट की एज को देखिए कि वह कितनी जल्दी न्यूट्रलाइज़ होता है। इसी का नाम कन्विक्शन है, इसी का नाम नरेन्द्र मोदी है।

महोदय, मैं अभी ट्रिपल तलाक की बात सुन रहा था। देश में जो पोलिटिकल पार्टीज़ सत्ता में रही हैं, उन्हें कम से कम इश्यू को पढ़ लेना चाहिए कि कुरान की जो बेसिक टेनेट्स है, उसके ऊपर

पूरा कंसल्ट करके तीन महीने का, जो तलाक का टाइम होता है, वह नरेन्द्र मोदी जी के टाइम में ही हो सकता है, लेकिन वे पोलिटिकल पार्टीज़, जिनका वोट बैंक माइनॉरिटीज़ हैं, वे उनको डराती हैं। हमें उन्हें डराना नहीं चाहिए। आज खुली फ़िज़ा में साँस लेनी है, आज सोशल मीडिया का जमाना है, आज नॉलेज का हब है, आज हमें उन्हें खुली फ़िज़ा में छोड़ना चाहिए। देश के वज़ीर-ए- आज़म, नरेन्द्र मोदी जी, चाहे हैदराबाद की वर्किंग कमेटी हो या रिसेंट वर्किंग कमेटी हो, उसमें पसमांदा मुसलमान की बात करते हैं, उनकी तरक्की की बात करते हैं।

चेयरमैन सर, लास्ट राइट्स में चालीसवाँ होता है। मुझे एक रिमोट इलाके पुंछ में एक चालीसवें में जाने का मौका मिला। मैंने देखा कि वहाँ इस्लाम में डिफरेंट सैक्ट्स के - देवबंदी, बरेलवी, एहले हदीस जैसे सभी सैक्ट्स के लोग थे। सभी का अपना-अपना फेथ है, फेथ और ऊपर वाले के बीच में लिंक है। मैं वहाँ पर उसको अटैंड करने गया था। वहाँ एक बहुत बड़ा आलिम उठकर बोला कि सत्तर सालों में जो इंडिया, पाकिस्तान, बंगलादेश के आलिम नहीं कर पाए, वह नरेन्द्र मोदी जी ने ट्रिपल तलाक के मसले में किया। मैंने उनका यह वाक्य सुना।

सभापति जी, अभी हम जी-20 को होस्ट कर रहे हैं। आज जी-20 में बाजरा है। नरेन्द्र मोदी जी का दिमाग देखिए कि बाजरा, जो गरीब की फसल है, उसका भी दंभ है कि आज बाजरा को एक फेस्टिवल जैसा रख रहे हैं। बाजरे की इतनी वैराइटीज़ हैं। हम होस्ट ही नहीं हैं, हम डिप्लोमैटिकली ही नहीं, बल्कि एक तरीके से अपने कल्चर और पोटेंशियल की नुमाइश करेंगे। ऑनरेबल चेयरमैन सर, हमारे पूरे देश का जो पोटेंशियल है, जो कल्चर है, हम उसकी नुमाइश करेंगे और देश के हर बड़े शहर में अपने कल्चर से उनको वाक़िफ़ करवाएंगे। ..(**व्यवधान**)..आपको डायजस्ट हो गया क्या? कल तो डायजस्ट हुआ नहीं। ..(**व्यवधान**)..क्वाड में हमारा जो एक इंटरनेशनल फोरम है, उसमें हमारी जो '*से*' है, वह नरेन्द्र मोदी जी के होते हुए ही मुमकिन है। इंटरनेशनल फोरम में टेररिज्म पर हमारा जो स्टैंड है, उसके कारण आज हमने पूरी दुनिया को राग़िब किया है, मजबूर किया है। आज इंटरनेशनल फोरम में हमारा जो '*से*' है, वे बातें भी हमें अपने ज़ेहन में लानी चाहिए और अपनी ऐनक के शीशे को धोना चाहिए ताकि ये वाली बातें भी दिखें कि आज हम कॉलर खड़ा करके दुनिया में बोलते हैं - I am an Indian, मैं हिंदुस्तानी हूं। आज हम पूरी दुनिया में यह बोलते हैं, लेकिन कल तक शर्म करते थे, हमारा मुल्क गरीब सा, मजबूर सा दिखता था, लेकिन आज हम फख्र से बोलते हैं।। am Indian. इंटरनेशनल ऑर्गेनाइज़ेशंस की रेलेवैंस के बारे में कभी हुआ कि भारत देश ने इंटरनेशनल फोरम की रेलेवैंस को, उनकी ऐफिकेसी को क्वेश्चन किया हो। आज लोग भारत की तरफ उम्मीद से देखते हैं। कोविड में हमने कितने देशों को फ्री इंजेक्शन दिया। आज लोग हमारी तरफ उम्मीद से देखते हैं। डिज़ास्टर से अभी टर्की में, सीरिया में भूकम्प आ गया तो देश के वजीर-ए- आज़म ने तुरन्त वहां रिलीफ के लिए जहाज़ भेजे। आज विदेशों में जो हमारे इंडियंस हैं, पहले सोचते थे कि मैं अरब में चला जाऊं, यूरोप में चला जाऊं, कनाडा में चला जाऊं, लेकिन आज हम सोचते हैं, आज हम डिस्कस करते हैं कि भारत की किसी सिटी में जाकर मैं अपना घर बनाऊं। पॉज़िटिव नैरेटिव भी हमें दिखाना चाहिए, मेरा यह मानना है।

देश का वजीर-ए- आज़म 'परीक्षा पे चर्चा', हम जिसे बड़ी छोटी बात समझते हैं, मतलब स्टूडेंट्स के एग्ज़ाम्स के स्ट्रैस के बारे में देश का वजीर-ए- आज़म सोचता है। एग्ज़ाम्स को बोलते हैं कि फेस्टिवल्स की तरह से हमेशा सोचना चाहिए, ताकि हमारा जो ब्रेन है, वह मैक्सिमम डिलीवर कर सके, हम स्ट्रैस में न आ जायें और छोटी-छोटी 25-30 बातें उसमें स्टूडेंट्स के लिए, पेरेंट्स के लिए, आम नागरिकों के लिए बताई गई हैं कि हमें अपने साथ कम्पीट करना चाहिए। जब हम दूसरों से कम्पीट कर रहे होते हैं तो कई बार हम अच्छा नहीं कर पाते तो हम डीमॉरेलाइज़ हो जाते हैं, लेकिन जब हम अपने से कम्पीट करेंगे तो हम रिफॉर्म करेंगे। हम अपनी गलतियों का सुधार करेंगे, ये छोटी-छोटी बातें पिछले ही दिनों पूरे देश में हुईं और इस किताब का इनॉगरेशन हुआ। टेक्नोलॉजी बहुत अच्छी चीज़ है, उसमें ये छोटी-छोटी बातें हैं, रैस्ट के बारे में, स्लीप के बारे में कि बच्चे कैसे खेलें, देश का वजीर-ए- आज़म इन सब चीज़ों की चिन्ता करता है।

मैंने सुना कि करप्शन नासूर है, इसमें कोई दो राय नहीं हैं, पर कभी हमारे देश के सरपंच ने यह सोचा था कि जितना पैसा दिल्ली से आएगा, उतना ही पैसा उसके अकाउंट में जाएगा। पहले बी.डी.ओ., ए.सी.डी., डायरेक्टर के चक्कर लगाता था, उसे कमीशन देता था। यह ट्रांसपेरेंसी है, यह डिजिटल जमाना है, कभी हमने सोचा था कि हम...(**समय की घंटी**)...अभी तो शुरुआत ही नहीं हुई। मैं स्टूडेंट हूं, सर।...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Okay, one more minute. Sixteen minutes are over. You may take one more minute. The normal practice is fifteen minutes. It is a very impactful address. Take one more minute.

श्री गुलाम अली: सर, बात यह नहीं है कि भाषण कहां देना है, बात यह है कि हमारी नीयत साफ है, हमें देश के वजीर-ए- आज़म उस कम्युनिटी से लाए, जो आपको 70 साल नहीं दिखी और उसे आपने सिर्फ वोट बैंक की तरह इस्तेमाल किया। बिगैस्ट अचीवमेंट यह है कि हमारे हर भारतीय का सेल्फ कॉन्फिडेंस बढ़ा है। महोदय, यहां बहुत सारी बातें कही गईं। अब मैं कहाँ से शुरू करूँ, यहाँ बहुत सारी बातें कही गईं। वहाँ बुलडोजर चलाया जा रहा है।

श्री सभापति: अंत करने का समय आया है।

श्री गुलाम अली: सर, वहाँ बुलडोजर चलाया जा रहा है। पूरे देश में लैंड टू टिलर्स, लैंड रिफॉर्म्स का ढिंढोरा पीटा गया, लेकिन जम्मू-कश्मीर में हमने लैंड रिफॉर्म्स किए। सर, 70 साल में एक आदमी को मालिकाना हक नहीं दिया गया, सभी स्टेट्स लैंड और वोट लेते रहे, लेकिन हम देने जा रहे हैं। हमने अभी अनाउंस किया है, हम देंगे, हम ही देंगे। सर, इन्होंने वोट लिया ...(**समय की घंटी**)... और जमीनें डेवलपमेंट अथॉरिटीज़ में डालीं। हमने वहाँ अस्पताल बनाए। कोई वहाँ दो एम्स के बारे में सोच सकता

है! जम्मू जैसी सिटी में एम्स, आईआईटी, आईआईएम! ट्राइबल्स के लिए 9 सीटें रिजर्व! टेररिज्म में इतना ग्राफ! ...(**समय की घंटी**)...

MR. CHAIRMAN: Hon. Member, please conclude.

श्री गुलाम अली: सर, अगर मैं नहीं बताऊँगा, तो यह मेरी स्पीच के साथ नाइंसाफी हो जाएगी, मोशन ऑफ थैंक्स के ऊपर मैं जो स्पीच कर रहा हूँ। सर, आर्टिकल 370 का नुकसान यह था कि कश्मीर के गरीब नौजवान में डबल माइंड पैदा होता था, वह दुविधा में रहता था, लेकिन आज वह देश की सोचता है, आज वहाँ रात को फ्लाइट चलती है। थैंक यू, सर।

श्री सभापति: श्री रामदास अठावले। हमने भी आज शेर-ओ-शायरी की है।

सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री रामदास अठावले): आदरणीय चेयरमैन सर,

"राष्ट्रपति जी का अभिभाषण, मजबूत करेगा भारत नेशन।
विरोध करना है कांग्रेस का फैशन -
इसलिए मैं उसके विरोध में कर रहा हूँ भाषण।
कांग्रेस वालो, जितनी बढ़ानी है उतनी बढ़ाओ दाढ़ी, -
लेकिन मोदी जी की बहुत ही है मजबूत बॉडी।
मोदी जी को मालूम है देश के तमाम लोगों की नाड़ी, -
फिर कांग्रेस की कैसे चलेगी उनके सामने गाड़ी!
मोदी जी आदमी हैं खास, -
इसलिए उनके साथ है रामदास।
मोदी जी को विकास की है आस, -
इसलिए राजनीति में वे हो गए हैं पास।
कांग्रेस वाले हमेशा मारते हैं भास, -
इसलिए राजनीति में हो रहे हैं न पास।"

सर, आज यहाँ माननीय राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर चर्चा हो रही है। मैं कांग्रेस वालों का और अपोजिशन का आभार व्यक्त करता हूँ, क्योंकि वे रोज वैल में आ रहे थे। मतलब,

"राष्ट्रपति का अभिभाषण, यह है मोदी सरकार के विकास की गंगा,
काहे के लिए लेते हो उनके साथ पंगा।"

दंगा छोड़ कर आपने इस चर्चा में भाग लिया, इसलिए मैं कांग्रेस पार्टी का आभार व्यक्त करता हूँ, अपोजिशन का आभार व्यक्त करता हूँ और यही आशा व्यक्त करता हूँ कि आप हमेशा उधर ही रहेंगे और हम इधर ही रहेंगे। मतलब, अगर आपको टीका करने की, क्रिटिसाइज़ करने की आवश्यकता है, तो राष्ट्रपति जी का अभिभाषण प्वाइंट टू प्वाइंट था। सभापति महोदय, जो दलित समाज है, आदिवासी समाज है, ओबीसी समाज है, अल्पसंख्यक है, जनरल कैटेगरी के लोग हैं, मोदी सरकार ने जनरल कैटेगरी के लोगों को 10 प्रतिशत आरक्षण देने का निर्णय लिया। मोदी सरकार ने शैड्यूल्ड कास्ट्स एंड शैड्यूल्ड ट्राइब्स का जो ऐक्ट है, उसमें अमेंडमेंट करने का निर्णय लिया। मोदी सरकार ने बाबा साहेब अम्बेडकर जी का मैमोरियल बनवाया। कांग्रेस पार्टी ने तो बाबा साहेब अम्बेडकर जी को दो बार हराया था और उनको लोक सभा में आने का मौका नहीं दिया था...(**व्यवधान**)... लेकिन बाबा साहेब अम्बेडकर जी का 125वां जन्मदिवस नरेन्द्र मोदी जी ने मनाया।

सैंट्रल हॉल में बाबा साहेब अम्बेडकर जी का फोटो नहीं था, जब वी.पी. सिंह जी की सरकार थी, तब उन्होंने वह फोटो यहां लगवाया।...(**व्यवधान**)... कांग्रेस पार्टी को इसकी जानकारी भी नहीं थी कि यहां बाबा साहेब का फोटो...(**व्यवधान**)... इसी सैंट्रल हॉल में बैठ कर बाबा साहेब ने संविधान लिखा। ड्राफ्टिंग कमिटी के चेयरमैन के नाते रात-रात को जाग कर, 26 अलीपुर रोड में बाबा साहेब अम्बेडकर काम करते रहे।...(**व्यवधान**)... जयराम रमेश जी, यह काम आप लोगों को करना चाहिए था।...(**व्यवधान**)... ठीक है, आपने वह काम किया, आप बाबा साहेब अम्बेडकर जी को संविधान सभा में लाए, लेकिन उससे पहले दो बार बाबा साहेब को आपने हराया भी था। मुझे भी शिरडी में हराया, इसीलिए मैं छोड़ कर इधर आ गया। मुझे भी आप लोगों ने शिरडी में हराया।...(**व्यवधान**)... ठीक बात है। ये बोलते हैं कि बाबा साहेब अम्बेडकर जी का संविधान बदलेंगे, संविधान को कैसे बदलेंगे? हमने तो कांग्रेस को बदला है, संविधान को क्यों बदलेंगे? संविधान बदलने का विषय ही नहीं है। मोदी जी ने 2019 में सैंट्रल हॉल में संविधान को माथा टेक कर शपथ ली है कि बाबा साहेब अम्बेडकर के संविधान को मैं भारत में खड़ा करूंगा।

'सबका साथ-सबका विकास',
इसीलिए दिख रहा है यहां अच्छा प्रकाश।

मोदी जी ने 'सबका साथ-सबका विकास' की भूमिका रखी है, लेकिन आप भारत जोड़ने के लिए चल रहे हैं। बाबा साहेब अम्बेडकर जी ने और संविधान ने भारत को पहले ही जोड़ दिया है। झगड़े होते रहते हैं, लेकिन फिर भी हम एक हैं। यहां पाकिस्तान के संविधान को कोई नहीं मानता है, यहां कुछ भी हो जाएगा, लेकिन देश नहीं टूटेगा, जम्मू-कश्मीर भी हमारा है। अभी हमारे साथी बोल रहे थे कि हमने अनुच्छेद 370 को हटाया है, पहले हमने कांग्रेस को हटाया फिर अनुच्छेद 370 को हटाया।...(**व्यवधान**)... हटाने का विषय तो नहीं है।...(**व्यवधान**)...

सभापति महोदय, पहली बार हमारे देश में अनुसूचित जनजाति की राष्ट्रपति को बनाया गया। नरेन्द्र मोदी जी ने उनको राष्ट्रपति बनाया। उन्होंने आपको भी बनाया, मुझे भी बनाया।...(**व्यवधान**)... राष्ट्रपति जी का जो अभिभाषण है, मेरी रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया उसका सपोर्ट करती है। मेरी

पार्टी बाबा साहेब अम्बेडकर जी के द्वारा स्थापित की हुई पार्टी है। इस पार्टी की तरफ से, राष्ट्रपति जी के अभिभाषण का सपोर्ट करने के लिए मैं यहां खड़ा हुआ हूं। मैं सभी लोगों से निवेदन करना चाहता हूं कि यह अभिभाषण देश को विकास की तरफ आगे ले जाने वाला है। हमारी सरकार देश के सभी लोगों को लेकर आगे बढ़ रही है। भारत को नरेन्द्र मोदी जी ने जोड़ ही दिया है, आप लोगों को इसे जोड़ने की आवश्यकता नहीं है। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं, जय भीम, जय भारत!

MR. CHAIRMAN: Now, Shri Ajit Kumar Bhuyan.

SHRI AJIT KUMAR BHUYAN (Assam): Thank you, Mr. Chairman, Sir. Since I belong to Assam and being the lone voice of Opposition from the North-Eastern Region in this Upper House, I will not speak on major concerns of inflation and unemployment gripping across the nation, as my learned colleagues have already enlightened us on those issues, and the time constraint is also there. So, I would like to continue my intervention on the specific concerns of the North-Eastern Region. As this was the first time when I listened to the Address, by Mahamahim Droupadi Murmu*ji* given in the joint sitting of both the Houses, as a Member of Parliament, I had a very high expectation that she would dwell at ethnic diversity of the North-Eastern Region and its complexity.

Assam was a single unit of governance, except Tripura and Manipur, when India got independence in 1947, and it was very rightly debated in the Constituent Assembly that ethnic diversity of the region would be protected and even the small tribes and their identity and culture would be protected in the post-independence era. The tribal community of the North-East region had hoped that their identity and culture would be protected under the guidance of Mahamahim Rashtrapati*ji* who herself is a tribal. Sir, I am very sorry to say that now tribals in Assam are facing illegal eviction. The insurgency and conflict in the region have been the result of not addressing the core issue of ethnic diversity. The people of the region had developed some hope when the Prime Minister told the nation that the Naga conflict was resolved when the Government of India inked the framework agreement in August, 2015 but the President's Address does not reflect any concern on the Naga conflict.

Of course, some development projects have been initiated but it is not a mercy but it is the legitimate right of the North Eastern Region. However, peace and development of the region will be sustainable when the Government of India addresses the very core issue. Sir, please allow me to highlight the very promise made by the Prime Minister, Shri Narendra Modi. He assured that six communities of Assam will be given

special Scheduled Tribe status but, Sir, even when the second tenure of the Government is almost coming to an end, no such intent has been reflected in the President's Address.

Sir, a high-level committee headed by the retired Justice of Guwahati High Court was formed by the Ministry of Home Affairs in July, 2019 to examine the effectiveness of actions taken since 1985 to implement clause 6 of the Assam Accord, and to suggest and recommend measures, as may be necessary, to protect, preserve and promote cultural, social, linguistic identity and heritage of the Assamese people. Sir, the Committee had submitted its report in February, 2020 but this report has not been released so far and nothing has been mentioned in the President's Address for the indigenous people of Assam.

Sir, during the General Elections in 2014, in a public meeting in Assam, Shri Narendra Modi promised that within 100 days, every problem of Assam will be solved but nothing has been solved so far. Sir, I fail to understand that the two powerful Cabinet Ministers who themselves are tribal and belong to the region are not pursuing the concerns of the tribal. Have they become voiceless or scared of the mighty notion of the duo, Narendra Modi and Amit Shah. Sir, in both the Houses, the region is represented by 39 Members of Parliament and this representation is bigger than the representation of Gujarat. It is always claimed that the Prime Minister has been visiting the region very often. वे लोग 40 टाइम्स, 40 टाइम्स बोलते रहते हैं। But can we say that Modi has the same concern as he has for Gujarat? Sir, I have no intent to frame him for Gujarat bias but certainly a mere visit should not be the parameter of concern and truthful initiative in the interest of the region.

Sir, here, I would like to appreciate the former Prime Minister, Dr. Manmohan Singh, for his novel initiative of development of the region though he was not frequently visiting the region. Sir, now, projects are being inaugurated. But, as the Leader of the Opposition rightly said, those projects were initiated by Dr. Manmohan Singh while they are now simply inaugurating these projects. Sir, I will conclude with a famous saying that the human being is not known by physical appearance but by his honestly-conceived intent, ideas and actions. Thank you.

श्री विवेक ठाकुर (बिहार): आदरणीय सभापति महोदय, मैं आपको धन्यवाद देना चाहूँगा कि आपने माननीया राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव की इस चर्चा में मुझे अपने विचार रखने का अवसर दिया।

सभापति महोदय, मेरे मित्र मनोज जी अभी कह रहे थे कि वे इस बात से बहुत चिन्तित हैं कि एक वर्ष 2014 को चर्चाओं में इतना महत्व क्यों दिया जा रहा है। मुझे लगता है कि काश, महाभारत के संजय अगर 2014 में जिन्दा होते, तो उससे पहले के कालखंड का उनका वर्णन क्या होता। तब उन्हें सही जवाब मिल जाता कि क्यों 2014 का महत्व है। अगर पूछा जाता कि भारत कैसा दिख रहा है, तो संजय क्या बोलते? तब शायद इसके अलावा वे और कुछ नहीं बोल पाते कि पूर्वोत्तर में आग लगी हुई है, कश्मीर जल रहा है, मुम्बई में आतंकी घुसे हुए हैं, वे लोगों को मारते जा रहे हैं और पूरा देश उस चीज़ को टीवी पर लाइव देख रहा है, दुश्मन पता है, लेकिन सरकार की अनुमति नहीं है कि पलटवार करें, फौज हतोत्साहित बैठी हुई है, नौजवान आशा की सारी किरणें भूल चुका है, India is almost a land of no opportunities और वहाँ से एक सोये हुए भारत को संगठित करते हुए दोनों हाथ उठा कर कर्तव्य पथ पर दौड़ाते हुए विजय पथ की यात्रा पर 2014 के बाद भारत के यशस्वी आदरणीय प्रधान मंत्री लेकर चले हैं, 2014 का यह महत्व है!

सभापति महोदय, हमारी सरकार के ये 9 वर्ष, गरीब, किसान, दलित, आदिवासियों, वंचितों, पिछड़ों और ग्रामीण भारत के सशक्तिकरण के 9 वर्ष हैं। मुझे यह कहने में जरा भी अतिशयोक्ति नहीं है कि "9 साल, उपलब्धियाँ रहीं बेमिसाल।" मैंने पिछले वर्ष जब बिहार में एक गाँव में भ्रमण के दौरान कुछ ग्रामीणों से पूछा कि आपको कैसा लग रहा है, तो एक ग्रामीण ने एक ही लाइन में जवाब दिया कि

"*विपक्ष के साठ पर भारी मोदी जी के आठ*।"

सभापति महोदय, जिस प्रकार नवरात्र में नौ देवियाँ, नौ शक्तियों की प्रतीक होती हैं, उसी प्रकार हमारे यशस्वी आदरणीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में हमारी सरकार ने नौ शक्तियों के माध्यम से ग्रामीण भारत को सशक्त करने का काम किया है। यही वे नौ शक्तियाँ हैं, जिन्होंने भारत को इस अमृत काल में प्रवेश करने में सहायता प्रदान की। मैं इनका विवरण संक्षेप में करना चाहूँगा। ये नौ शक्तियाँ हैं - कृषि शक्ति, आदिवासी शक्ति, जल शक्ति, राष्ट्र शक्ति, व्यापार शक्ति, स्वास्थ्य शक्ति, नारी शक्ति, गति शक्ति और विद्या शक्ति।

सभापति महोदय, आदरणीय प्रधान मंत्री जी के प्रयासों के कारण ही आज भारत विश्व की दसवीं बड़ी अर्थव्यवस्था से आगे बढ़ कर विश्व की पाँचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था बना है। यह तभी सम्भव हो पाया है, जब हमारी सरकार ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था, आधारभूत अवसंरचना और ग्रामीण भारत के विकास तथा कल्याण के लिए निरन्तर कदम उठाये हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने भी कहा था कि "The progress of the country lies in the development of the rural villages, rural economy and rural skills." रूरल इकोनॉमी का विकास तभी सम्भव है, जब हम अपनी कृषि शक्ति का पूर्णतः उपयोग करेंगे और अपने किसानों को समृद्ध बनाएँगे तथा सहयोग करेंगे - नीतियों से, न कि बातों से।

सभापति महोदय, मुझे तो ऐसा लगता है कि 'किसान', 'मजदूर' शब्द और उनकी भावनाओं का राजनीति में जितना दुरुपयोग और छेड़छाड़ हुई है, उतनी शायद ही किसी शब्द की आज तक हुई होगी। अगर इन शब्दों को वोकेब्युलरी से हटा दिया जाए, तो शायद मेरे जो समाजवादी और

वामपंथी दोस्त हैं, वे बड़े असमंजस में पड़ जायेंगे कि कहाँ से शुरू करें, कहाँ से आरम्भ करें। लेकिन पहली बार यह एक ऐसी सरकार आयी, जिसने जुबान बंद किसान, मजदूर और गरीब की भावनाओं को समझने की कोशिश की और यह एहसास किया कि किसान को भी सीधे मदद की जरूरत है। इस क्रम में हमारी सरकार ने "प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना" की शुरुआत की। इसके चार वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं। इस योजना में 2.24 लाख करोड़ रुपये भारत के किसानों को प्रदान किये जा चुके हैं, जिसमें से 1.7 लाख करोड़ रुपये कोविड महामारी के दौरान दिये गये और अभी तक लगभग 11.78 करोड़ किसानों को लाभ पहुँचाया जा चुका है।

सभापति महोदय, कृषि शक्ति का एक महत्वपूर्ण पक्ष है 'प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना'। यह सामान्य बात नहीं है। जब नेशनल लॉकडाउन लगा था, तब बड़ा शोर मचा कि जो रोज कमा कर खाते हैं, वे लाखों की संख्या में मर जाएँगे। इस देश में एक व्यक्ति भूखा नहीं मरा और तब से हमारी सरकार 80 करोड़ परिवारों को मुफ्त अनाज देते-देते आज एक सिक्योर्ड आबादी के रूप में 'नेशनल फूड सिक्योरिटी एक्ट' के तहत उनको निरंतर राशन दिए जा रही है।

सभापति महोदय, नोटिस करने वाली यह बात है कि यूएनडीपी की रिपोर्ट के हवाले से ईकोनॉमिक सर्वे प्रस्तुत किया है और इन दोनों योजनाओं के कारण भारत की गरीबी में कमी की महत्ता को उसने स्वीकार किया है।

सभापति महोदय, विपक्ष के हमारे दोस्त 'पीएम सम्मान निधि' के बारे में क्या-क्या राय रखते रहे, इसलिए मैं आपको 2019 में ले जाना चाहता हूँ, जब इस योजना की शुरुआत हुई थी। जब देश के ज्ञानी पूर्व वित्त मंत्री और कॉंग्रेस के बड़े नेता, जो इस सदन के भी सदस्य हैं, वे क्या कह बैठे थे। "Nothing can be more shameful in a democracy than bribe for votes." अर्थात् देश का मुख्य विपक्षी दल किसानों को रिश्वतखोर समझता है, वे रिश्वत लेकर वोट देते हैं - इससे बड़ी शर्म की बात कुछ भी नहीं हो सकती है। यही लोग कोविड-19 की महामारी के समय चिल्ला-चिल्ला कर कह रहे थे कि गरीबों के हाथ में पैसा पहुँचाना पड़ेगा। कोविड-19 महामारी में हमारी सरकार ने 1.73 लाख करोड़ रुपए सीधे जनता के हाथों में दिए और उन्हें यह योजना रिश्वतखोरी दिखाई देती है! चूँकि विदेशी संस्थाएँ भारत के विस्तृत आकलन में इसकी तारीफ कर चुकी हैं, इसलिए मुझे लगता है कि अब हमारे मित्रों को इसे अच्छा मानने में कोई दिक्कत नहीं होगी।

महोदय, उन्हें हमारी संस्थाओं पर विश्वास ही नहीं है। मैं यूएनडीपी की एक और रिपोर्ट का हवाला देना चाहूँगा। यूएनडीपी की मल्टी-डायमेंशनल पॉवर्टी इंडेक्स रिपोर्ट में वर्ष 2005-06 में जिक्र है कि 65 करोड़ भारतीय गरीबी रेखा के नीचे थे और आज 2019 से 2021 में यह संख्या 23 करोड़ तक पहुँच गई है, अर्थात् भारत ने 41.5 करोड़ भारतीयों को गरीबी रेखा से बाहर निकाला है। गरीब के जीवन में आमूल-चूल सुधार के पीछे हमारी सरकार की कल्याणकारी योजनाएँ हैं। जो लोग किसानों की आय को दोगुना करने का मज़ाक उड़ाते हैं, उनको मैं यह बताना चाहूँगा कि हमारी सरकार के नौ वर्ष के दौरान पर-कैपिटा इनकम दोगुनी होकर 1.57 लाख रुपए हो गयी है, अर्थात् हमारी सरकार ने लोगों को विशेषकर, किसानों की आय को दोगुना करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सभापति महोदय, मैं ग्रामीण भारत की दूसरी महत्वपूर्ण शक्ति, आदिवासी शक्ति पर आता हूँ। पिछले नौ वर्षों के दौरान हमारी सरकार ने आदिवासी शक्ति के माध्यम से देश को बहुत मजबूती प्रदान करने का काम किया है। जब ग्रामीण विकास की बात हो, आदिवासियों, दलितों, वंचितों की बात पर देश के विभूति स्वर्गीय नानाजी देशमुख का उल्लेख न हो, तो यह बात अनुचित होगी। उन्होंने कहा था कि हम अपने नहीं, अपनों के लिए हैं और अपने वे हैं, जो सदियों से पिछड़े, वंचित और उपेक्षित हैं। इन्हीं विचारों से प्रेरणा लेते हुए हमारी सरकार ने 'प्रधानमंत्री आदि आदर्श ग्राम योजना' की शुरुआत कर 36,000 आदिवासी एवं जनजातीय गाँवों के कल्याण का मार्ग खोला है तथा इस बजट में उपेक्षित घुमन्तू जनजातियों के लिए सर्वाधिक 15,000 करोड़ रुपए की धनराशि के साथ पीएमपीवीटीजी यानी प्राइम मिनिस्टर्स पर्टिकुलर्ली वल्नरेबल ट्राइबल ग्रुप योजना की शुरुआत भी की।

सभापति महोदय, जनजाति समुदाय को उनकी मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करना अति आवश्यक है और इसलिए हमारी सरकार 689 एकलव्य मॉडल आवासीय स्कूल्स के द्वारा आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा प्रदान करने का महत्वपूर्ण काम भी कर रही है।

सभापति महोदय, इसी बीच गरीब किसान की पीड़ा को समझते समय मुझे लगा कि गुलज़ार साहब की दो पंक्तियाँ यहाँ पर जरूर रखनी चाहिए। उन्होंने लिखा है :

" खबर सबको थी मेरे कच्चे मकान की,
फिर भी लोगों ने दुआओं में सिर्फ बरसात ही माँगी।"

गरीब किसान की पीड़ा समझिए। एक तरफ वह बरसात भी माँग रहा है, लेकिन दूसरी तरफ वह यह भी सोचता है कि बरसात का महीना किसी तरह से निकल जाए और उसकी छत न गिरे। इस भाव को हमारी सरकार ने समझा, इसलिए 'प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना' के तहत 280.53 लाख पक्के मकान बनाए जा चुके हैं, जिनमें लगभग 97 लाख मकान आदिवासी एवं दलित परिवारों को दिए गए हैं। सभापति महोदय, हमारे विपक्ष को हमारी बातों पर भरोसा तो है नहीं, इसलिए मैं 'प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना' पर नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक फाइनेंस एंड पॉलिसी के एक अध्ययन का ज़िक्र करना चाहूँगा। उन्होंने यह पाया कि लोगों को न केवल पक्का मकान मिला, बल्कि योजना के तहत इस्तेमाल किया जाने वाला कंस्ट्रक्शन मैटीरियल भी उच्च गुणवत्ता का था, जो अपने आप में इस योजना की सार्थकता को सिद्ध करता है।

सभापति महोदय, दलितों, वंचितों, किसानों और आदिवासियों की बात हो और मैं बिहार की दो महान विभूतियों, अर्थात अभी तक देश के सबसे बड़े किसान नेता स्वामी सहजानन्द सरस्वती और राष्ट्रकवि, रामधारी सिंह 'दिनकर' का उल्लेख न करूँ, तो यह अनुचित होगा। देश के सबसे बड़े किसान नेता स्वामी सहजानन्द सरस्वती, जो निरंतर छोटे किसान, दलित, वंचित, मजदूर के लिए संघर्षरत रहे, उन्हें देखते हुए राष्ट्रकवि 'दिनकर' ने उन्हें 'दलितों के संन्यासी' की संज्ञा दी और आज यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि हमारे यशस्वी प्रधान मंत्री भी आधुनिक भारत के 'दलितों

के संन्यासी' हैं। सभापति महोदय, 'दिनकर' जी ने स्वामी जी के बारे में जो कहा, उसे मैं उन्हीं के शब्दों में आज के आधुनिक भारत के परिप्रेक्ष्य में भी कहना चाहूँगा। यह हमारे यशस्वी प्रधान मंत्री पर भी बड़ा सटीक बैठता है।

"वह आया, जैसे जल अपर, आगे फूल कमल का,
वह आया, भू पर आए ज्यों, सौरभ नभ-मंडल का,
लोकभाव अंजली, ये सबके लिए, लिए कल्याण,
आया है वह तेज गति से, धीर वीर गुणगान,
आया है जैसे सावन के आवे मेघ गगन में,
आया है जैसे आते कभी संन्यासी मधुवन में,
हवन पूत कर में सुदंड ले मुंडित चाल बिरागी,
आया है नवपथ दिखलाने, दलितों का संन्यासी।"

सर, प्रधान मंत्री जी 'दलितों के संन्यासी' इसलिए भी हैं, क्योंकि एक तरफ तो वे प्रयागराज कुंभ में सफाईकर्मियों के पांव धोते हैं और दूसरी तरफ मैनुअल स्कैवेंजिंग को खत्म करने हेतु मशीन से मैनहोल की सफाई के लिए योजना की शुरुआत भी करते हैं। उन्हें आधुनिक भारत के 'दलितों का संन्यासी' कहने में तनिक भी संशय नहीं रखना चाहिए और न है।

सभापति महोदय, मैं आदरणीय प्रधान मंत्री द्वारा संसद में 'मनरेगा' पर दिए गए एक बयान का स्मरण कराना चाहता हूँ। जब से यह बजट आया है, तब से 'मनरेगा' पर बड़ी चर्चा चल रही है। यह भी कहा जाता है कि पत्रकार यह नहीं लिखते हैं, वह नहीं लिखते हैं। एक अद्भुत डेटा है, जिसका मैं ज़िक्र करना चाहूँगा। 'मनरेगा' में हमने क्या चेंज किया है, इसे लेकर जो डेटा है, उसे मैं प्रस्तुत करता हूँ। 2014 में जब तक इनकी सरकार थी, तब तक 'मनरेगा' के तहत केवल 17.6 परसेंट ऐसेट क्रिएशन हुआ था, जबकि हमारी सरकार आने के बाद, जो दिशाविहीन तरीके से चल रहा था, उसे हमने ऑर्गेनाइज़ किया और उसी का परिणाम है कि इस कालखंड में 'मनरेगा' के माध्यम से 61.2 परसेंट ऐसेट क्रिएशन हुआ है। यह फर्क साफ है।

सभापति महोदय, ग्रामीण भारत की तीसरी महत्वपूर्ण शक्ति जलशक्ति है। स्वच्छ जल का क्या महत्व है, यह आप उस महिला से पूछिए, जो कई मील चलकर अपने परिवार के लिए पानी लेकर आती है। एक बड़ा अच्छा वाक्य है, जिसे अमेरिकन पोएट और राइटर Lucy Larcom ने कहा है - "A drop of water, if it could write out its own history, would explain the universe to us." प्रधान मंत्री जी स्वयं ऐसे राज्य के मुख्य मंत्री थे, जहाँ शुद्ध पेयजल की बहुत गंभीर समस्या थी। उन्होंने उस समस्या का भी हल निकाला, हर घर में नल से जल पहुंचाने का काम किया और जब वे प्रधान मंत्री बने, तो उन्होंने इस योजना को संपूर्ण देश में भी लागू किया। सभापति महोदय, जल की व्यवस्था के साथ-साथ जब लाल किले से स्वच्छता और शौच की बात हुई, तब हमारे विपक्ष ने सका मजाक उड़ाया, परन्तु इन्हें दूरदृष्टि समझ ही नहीं आई। हमारी

सरकार ने 'स्वच्छ भारत मिशन' के तहत भी 10.9 करोड़ व्यक्तिगत शौचालयों का निर्माण किया। जल की कीमत एक किसान से बेहतर और कोई क्या समझेगा। किसानों को खेती के लिए सिंचाई का पानी कितना महत्वपूर्ण है, इसकी कोई कल्पना नहीं कर सकता है। ...(**समय की घंटी**)... इसलिए हमारी सरकार ने वर्ष 2015 में 'प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना' की शुरुआत की और सिंचाई का जो हिस्सा पहले 37 परसेंट था, आज उसका आँकड़ा बढ़कर 49 प्रतिशत हो गया है। 'हर घर नल से जल' और 'Per Drop More Crop' के माध्यम से ग्रामीण भारत के विकास में हमारी सरकार महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

MR. CHAIRMAN: Thank you.

श्री विवेक ठाकुर: सभापति महोदय, विषय तो काफी हैं, लेकिन अंत में मैं यही कहना चाहूँगा कि राष्ट्रकवि दिनकर ने यह कहा है कि वसुधा का नेता कौन हुआ:-

"वसुधा का नेता कौन हुआ?
भूखण्ड-विजेता कौन हुआ?
अतुलित यश क्रेता कौन हुआ?
नव-धर्म प्रणेता कौन हुआ?
जिसने न कभी आराम किया,
विघ्नों में रहकर नाम किया।"

आदरणीय सभापति महोदय, मैं माननीय राष्ट्रपति जी के अभिभाषण का स्वागत और समर्थन करता हूँ, धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN: Shri K.C. Venugopal, ten minutes. ...*(Interruptions)*...

SHRI K.C. VENUGOPAL (Rajasthan): Thank you Chairman, Sir, for giving me an opportunity to speak on the Motion of Thanks on President's Address.

Sir, since last nine years, we are hearing the beautiful slogan all over India 'सबका साथ, सबका विकास।' and, of course, before 2014 itself, 'अच्छे दिन आएँगे' का नारा भी दिया गया। Now, what the country is witnessing is quite totally in a different way. सबके साथ विकास नहीं हुआ है, only two-three persons are getting 'विकास।' ...*(Interruptions)*... We are on the greatest moment of this country through *Bharat Jodo Yatra*. We walked from Kanyakumari to Kashmir. Beyond political limit, beyond caste and community limit, people of India, young people of India, farmers of India came to the *Yatra*. They raised

their concern to our leader Shri Rahul Gandhi. See the plight of the youth of the country now. In the morning, the Leader of the Opposition already raised the issue of two crore jobs per year promised by this Government. Wherever we went through the *Yatra,* we could witness the pain and agony of the young people of this country. They are not getting jobs. They are totally in distress. Now, what is the priority of this Government to address that concern? Three days before, the Budget has been presented. You see that. There is Rs.30,000 crore cut in MGNREGA which is the largest employment generation project of this country. We have a pain, Sir. This is the brainchild of Shrimati Sonia Gandhi and the then UPA Government. Once, Modi*ji* said that this is the memorial of corruption of the UPA Government. Then, he himself corrected that. Now, during Covid, we saw how much contribution MGNREGA has given to the public but your priority is like that. All the people of this country are asking for jobs and you are cutting the provision in MGNREGA. This is what the priority of this Government is. We are talking about the freedom of expression. Kharge*ji*, hon. LoP, has already mentioned about that. BBC documentary is defamatory. That is what the Government sources are telling. Are you stopping entire defamatory statements? Every day and night, when we witness some of your privileged channels, most preferred channels, there is 'Hindu-Muslim', 'Hindu-Muslim'. Every day, they are creating venom in this country. Are you stopping it? Sir, actually, I have a document of Jamia Incident that happened. It was an unfortunate incident that happened. Delhi Police arrested so many people. Finally, Delhi Police had alleged that they were involved in committing offences such as rioting and unlawful assembly during the violence that ensued at the University in 2019. In his detailed order at Saket Court, Judge Varma heavily criticized the Delhi Police for filing an ill-conceived chargesheet, and added that their case was devoid of irrefragable evidence. Not only that, it added that the Police have arbitrarily chosen to make some people from crowd as accused and others as Police witnesses. This cherry-picking was detrimental to the precept of fairness. There is one more thing that Justice Verma is saying that dissent is an extension of the invaluable Fundamental Right to Freedom of Speech and Expression, which was a right that the courts have sworn to uphold. Sir, on one side, the Government is trying to stop the entire voices of dissent. On the other side, there is the BBC Documentary. When Modi*ji* was the Chief Minister, just now, I am remembering it, he narrated that BBC is the most credible media in the world. In 2013 he said so, and I have a video and if you want that evidence, I will authenticate it. The Prime Minister told

that don't believe the Indian media, only believe in BBC. You are now saying that BBC documentary is totally discredible. How can we agree?

THE MINISTER OF ENVIRONMENT, FOREST AND CLIMATE CHANGE; AND THE MINISTER OF LABOUR AND EMPLOYMENT (SHRI BHUPENDER YADAV): Sir, I have a point of order.

SHRI K.C. VENUGOPAL: Sir, you have only given time to me.

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, what is that rule?

SHRI BHUPENDER YADAV: Sir, Rule 238, sub-Rule (1). सर, हम सब लोग राइट टू एक्स्प्रेशन को, आर्टिकल 19 को मानते हैं, पर हाउस कॉन्स्टिट्युशन के आर्टिकल 118 से चलता है। उसके अंतर्गत राज्य सभा में जो रूल बने हैं, उसमें रूल 238, सब रूल (1) है, जो यह कहता है, "Refer to any matter of fact on which a judicial decision is pending." हम यह कह रहे हैं कि पहले भी वह ज्युडिशियल डिसीज़न के लिए था, अभी भी वह ज्युडिशियल डिसीज़न के लिए पेंडिंग है। Any matter which is pending for judicial decision. ...*(Interruptions)*... ये जिस डॉक्युमेंटरी का विषय कह रहे हैं, जिसकी मेरिट को कह रहे हैं, वह subject to the pendency of judicial decision है, rest upon you, Sir. ...*(Interruptions)*...

SHRI IMRAN PRATAPGARHI (Maharashtra): Sir, which matter is pending? ...*(Interruptions)*...

SHRI K.C. VENUGOPAL: My point is only that whenever you are talking about some discredible media houses, you have to be neutral on what is happening in the Indian media. If some media is okay with you, some of the media is not okay with you, and it is very, very evident nowadays. In the morning, we discussed about this. If somebody is talking freely about some incidence, next day, he will get a call, if it is not in favour of the Government. These types of things the Government is doing and that is what I want to mention. For the last three-four days, we are debating on a single subject before you for a JPC enquiry. Sir, we have witnessed so many demands of this type in this House. This House has the greatest tradition. That House also has the greatest tradition. Whenever this type of big scam is raised in the public domain, it is the right of the parliamentarians to ask for an enquiry from the Government.

3.00 **P.M.**

If the Government did not need to hide any truth, they used to come for an enquiry. In UPA time, how many JPC inquiries we have done. My simple question is that, and that is what we are asking: Why are you running away from the JPC? Therefore, something is there somewhere. Digvijaya*ji* yesterday asked as to how a man's income can jump this much suddenly without the Government's support. Sir, I came to this House in 2021. In 2021, I got an opportunity to speak on the Aircraft (Amendment) Bill, 2020. During the discussion on the Bill, I raised two-three questions, the replies to which I did not get on that day. With your permission, I would like to ask that question again. Adani was given six airports. In 2019, the Government awarded Adani the right to purchase six major...

MR. CHAIRMAN: No, no. Mr. Venugopal, you said that Adani has been given six airports. What does that mean?

SHRI K.C. VENUGOPAL: Private places...*(Interruptions)*... I mean out of six airports, five airports are profit-making airports. The five profit-making airports, the Government has given... ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: One second. ...(Interruptions)... Take your seat. You have been heard by everyone with rapt attention. I want everyone to be heard like this, and, therefore, you will take note of what I am saying. If on the floor of this House, a statement is emanating from a senior Member of the opposition that a particular industrialist has been given six airports, that is baffling for two reasons. One, our country is governed by law and whoever gets something is out of evolution of a process. And, therefore, to impart this impression that it is something which Mr. Venugopal has given to me or I have given to him, that is not the situation. ...*(Interruptions)*... One second. I would, therefore, seek further elucidation on this. How do you make such a statement?

SHRI K.C. VENUGOPAL: Sir, I am agreeing with your view.

MR. CHAIRMAN: I am so glad. ...*(Interruptions)*... One second. It is after a long time that we have agreed with each other, after a very, very long gap. It should be more frequent.

SHRI K.C. VENUGOPAL: I mean that the Government awarded six airports through process, but that process is not transparent at all. That is what I want to say.

MR. CHAIRMAN: That is why I am saying... One second. In our country, every process is open to participation in terms of terms and conditions, and it is evolved. ...*(Interruptions)*... Were you a participant? ...*(Interruptions)*... No, no. Directly or indirectly, were you a participant? ...*(Interruptions)*... No! Go ahead. ...*(Interruptions)*...

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, you are the Chairman, you are the referee, you are the umpire. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Let me tell you. Let me tell Mr. Jairam Ramesh, what can referee do with a player like him? Such a difficult player, who does not believe in the referee at all! ...*(Interruptions)*...

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, I am being provoked by the umpire. ...*(Interruptions)*... What can I do?

MR. CHAIRMAN: Mr. Venugopal, please.

SHRI K.C. VENUGOPAL: Sir, in 2019, the Government awarded six airports through a process which is not at all transparent.

MR. CHAIRMAN: I am just making a suggestion. You may, perhaps, check up as to who awards.

SHRI K.C. VENUGOPAL: The Government.

MR. CHAIRMAN: No. You will have to check up. I will tell you; otherwise, it will be a situation very different. Go ahead. ...*(Interruptions)*... Okay, Mr. Venugopal only. ...*(Interruptions)*...

SHRI K.C. VENUGOPAL: Sir, I have told you that I am quoting from my own speech of this Parliament itself. You can verify that.

MR. CHAIRMAN: You don't have to authenticate your speech.

SHRI K.C. VENUGOPAL: That is what I am saying. I am pointing out. The PPP Cell of the DEA, at that point of time, recommended that since these six airport developing projects are highly capital intensive, a clause should be incorporated that not more than two airports would be awarded to a single bidder because of the high financial risks involved and the need for stringent adherence to performance indicative. This is not given by the Opposition. This is not given by the Congress. This is given by PPP Cell of DEA of Union Government of India. Why has it been violated, Sir? For whom has it been violated, Sir? *...(Interruptions)...* They have cited the reasons also. The DEA's note also suggested that in that case if there was a project failure, there would be other capable bidders available to take on the failed projects. Then, the NITI Aayog specifically suggested that the request for proposal should include criteria to measure the experience of the bidder in developing airport terminals and related sectors. Did Adani*ji* have this type of experience earlier?

MR. CHAIRMAN: I am sure it must have been evaluated. You know better than I know.

SHRI K.C. VENUGOPAL: Sir, they are citing an example. They are talking about the UPA period. They are in that report citing an example of UPA. The DEA has specifically mentioned that when private companies bid for the development of the airports in Delhi and Mumbai, the contract to develop both the airports were not given to the same bidder. They are citing that example. *(Time-bell rings.)*

MR. CHAIRMAN: Twelve minutes' time is over. *...(Interruptions)...*

SHRI K.C. VENUGOPAL: GMR didn't get Mumbai and Delhi Airports, they only got Mumbai.

MR. CHAIRMAN: Now, Shri Abir Ranjan Biswas. *...(Interruptions)...*

SHRI K.C. VENUGOPAL: Sir, therefore, it is very clear that this Government is totally responsible for this Adani's income to go higher. Therefore, they want to hide something. This Government wants to hide something. Therefore, they don't care... ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Shri Abir Ranjan Biswas.

SHRI K.C. VENUGOPAL: Without a JPC, the truth will not come out. The truth has to come out. I am demanding a JPC on this issue. With these words, once again, I thank and conclude my speech.

SHRI ABIR RANJAN BISWAS (West Bengal): Thank you Chairman, Sir, for giving me this opportunity. The TMC's position has been very clear. We use the floor of Parliament to expose this Government on multiple counts. Economic blockade of States, murdering federalism, weakening institutions like Parliament, CBI, ED, SEBI, the price rise, unemployment, the lack of communal harmony and, of course, scams of huge proportions that need to be enquired.

[THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI P.T. USHA) *in the Chair.*]

The immediate inquiry of the big scam which is currently creating much furore can happen in two different ways. Firstly, as many have been suggesting, by constituting a JPC. But, Madam, I understand the weak nerve of the Government. All the previous Governments which had constituted JPC, have not come back. Maybe on that count, they are afraid. They might not! On the second part, of course, we could have a Supreme Court monitored Committee to conduct this inquiry in a time-bound manner. So, we demand the second, of course, if the first plan is touching the weak nerve of the Government. It was said in the Address of Mahamahim Rashtrapati*ji* and I quote. "Today, India has a Government which is committed to removing every obstacle faced by women." Madam, crimes against women in India have increased by 15 per cent. India registered 32,000 rape cases in 2021 - sadly, that is, 86 cases of rapes per day. I would like to remind this august House that Kolkata is the least crime-prone metropolitan city as per the latest NCRB records. Women's safety in Kolkata should be emulated by

the rest of the country. Another statement in the Address is, and I quote, "The digital network that India has built is a source of inspiration even for developed countries."Madam, I would like to showcase the digital service delivery achieved by West Bengal. The West Bengal Government recently received the Platinum Award from the hon. President at the Digital India Awards for its flagship scheme called Duare Sarkar, which literally means 'the Government at your doorsteps'. This was for excellence in design and implementation of a public digital platform. The initiative by the Mamata Banerjee Government has a widespread coverage. Duare Sarkar camps help people, all over the State, to get Government services and accesses to various social welfare schemes; the achievement also includes the U.N. award winning Kanyashree Prakalpa and the students' credit card. In the Address, the Rashtrapatiji has said, 'From education to their career, my Government is trying to remove all obstacles for daughters.'

Madam, I would like to say that in this regard the Union Government can take inspiration from the West Bengal Government when it comes to education, especially for girls and implement effective schemes like the Kanyashree, the famous award winning scheme, the Sabooj Sathi and so on. The Kanyashree scheme has benefited 78 lakh girl children in West Bengal. The Sabooj Sathi has provided cycles to more than one crore students in West Bengal. In the Address, there was nothing mentioned about the youth unemployment.

Let me tell you all about the Yuvasree Scheme in West Bengal. Under this scheme, eight lakh youths have been registered to receive financial assistance. Further, the Address said, 'My Government has awakened the aspirations of Scheduled Castes, Scheduled Tribes and Other Backward Classes.' At the top five IITs and IISc, Bengaluru, I would like to bring to the notice of the august House, 98 per cent of professors and more than 90 per cent of assistant and associate professors are from the privileged castes, in violation of the constitutional reservation mandate. In faculty positions, the reservation should be 7.5 per cent for Scheduled Tribes and 15 per cent for Scheduled Castes. That is the real picture.

Madam, when it comes to the matters of Scheduled Castes and Scheduled Tribes, the Government at the Centre could take a leaf out of the success diary of the West Bengal Government. I would like to mention that there are multiple schemes for the benefit of Scheduled Castes, Scheduled Tribes and Other Backward Classes. About eight lakh students from economically backward sections have received scholarships

under the Swami Vivekananda Merit-cum-Means Scholarship Programme of the Government.

Madam, another thing is that we have a Joy Bangla Pension Scheme in place; it is an umbrella of two schemes--Taposhili Bandhu and Joy Johar--where elderly, senior citizens of the communities, receive monthly pensions.

Further, in her Address, Rashtrapatiji said, 'The long felt urge to be rid of scourge of mega scams and corruption in Government schemes is now being realised.' Is it true, Madam? Let me give you one example. In Meghalaya, the practice of coal mining was banned in 2014, but transportation was permitted till 2017. Further extensions were granted by the Supreme Court. They were also misused. Illegally mined coal was taken out of the State and then returned to Meghalaya with false documentation of coal originating in other States. Last December, re-verification of extracted coal before the ban on illegal mining of coal revealed that there are over 19 lakh MT of coal, not over 32 lakh MT of coal as stated by the Government. In 2018, activists Agnes Kharshiing and Amita Sangma faced a near-fatal attack while they were on returning after lodging a complaint on illegal mining. It has been five years since, but where is the justice?

I would further like to mention that coming to the geo-political situation, we know that 25 per cent of current import of the Russian crude oil comes at a very lower price of an average of 48 to 52 US$ dollar per barrel. But when prices rose to over Rs. 100 for petrol, the international price of crude per barrel was more than 120 US dollars. Currently, 25 per cent of the import is of 48 to 52 dollars per barrel. But how is the benefit of this percolating to the poor? We can only say '*sabka saath sabka vikas*', but it should not remain as a *jumla*, unless you want to have *sabka vishwas* and *sabka prayas*. This benefit should percolate down to the people as bringing down the oil prices will have a ripple effect. It will bring down the prices of other commodities that are coming up with transportation and definitely the people at the lowest rung of society who are suffering from high price rise will have the benefit. So, things should not just remain as statements, i.e. *jumla*. Things should reflect on the ground. We can have many things said, but one thing delivered will be much more than many things said.

Sir, I would like to conclude by saying that I want to thank Mahamahim Rashtrapatiji for her Address. Having said that, equality in gender, caste and class is far from becoming a reality and needs to be our focus in all policies. The issues of people on the margins require urgent intervention by the Government. I conclude by re-

emphasising our demand for an immediate Supreme Court monitored inquiry into what could be the world's biggest scam. Thank you, Madam.

MESSAGES FROM LOK SABHA

(I) **Nomination of Members to Committee on Welfare of Scheduled Castes and Scheduled Tribes**

(II) **Nomination of Members to Committee on Public Accounts**

(III) **Nomination of Members to Committee on Public Undertakings**

SECRETARY-GENERAL: Sir, with your permission, I rise to report to the House the following messages received from the Lok Sabha, signed by the Secretary-General of the Lok Sabha:-

(I)

"I am directed to inform you that Lok Sabha, at its sitting held on Wednesday, the 8th February, 2023, adopted the following motion:-

"That this House do recommend to Rajya Sabha that Rajya Sabha do agree to nominate seven Members from Rajya Sabha to associate with the Committee on the Welfare of Scheduled Castes and Scheduled Tribes of the House for the term beginning on the 1st May, 2023 and ending on the 30th April, 2024 and do communicate to this House the names of the Members so nominated by Rajya Sabha."

2. I am to request that the concurrence of Rajya SAbha in the said motion, and also the names of the Members of Rajya Sabha so nominated, may be communicated to this House."

(II)

"I am directed to inform you that Lok Sabha, at its sitting held on Wednesday, the 8th February, 2023, adopted the following motion:-

"That this House do recommend to Rajya Sabha that Rajya Sabha do agree to nominate seven Members from Rajya Sabha to associate with the Committee on Public Accounts of the House for the term beginning on the 1st May, 2023 and ending on the 30th April, 2024 and do communicate to this House the names of the Members so